संक्षिप्त जायसी

महाकवि जायसी के पदमावत काव्य का

संक्षिप्त संस्करण

विस्तृत टिप्पणी तथा आलोचनात्मक प्रस्तावना के साथ

संपादित

खण्ड १—मूलपाठ

सम्पादक—

शम्भूदयाल सकसेना, "साहित्यरत्न"

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

पुस्तकविक्रेता और प्रकाशक, आगरा।

प्रथम संस्करण] १९४० [मूल्य ।।।)

संक्षिप्त जायसी हिन्दी के सुप्रसिद्ध महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत काव्य का संक्षिप्त संस्करण है। यह बी० ए०, मध्यमा, हिन्दी-प्रभाकर एवं तत्समान परीक्षाओं के लिए तय्यार किया गया है जिनके परीक्षार्थियों को इस महाकवि के काव्य का पर्याप्त परिचय हो जाना चाहिए। संकलन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि कवि की विभिन्न विशेषताओं के निदर्शक अंश छूटने न पावें पर साथ ही संकलन बहुत बड़ा भी न हो जाय। काव्य के सर्वोत्तम अंश यथासंभव संकलित कर लिए गए हैं।

जायसी से परीक्षार्थी बहुत घबराया करते हैं। मार्ग-दर्शन के लिए योग्य अध्यापक भी उन्हें सहज ही नहीं मिल पाते। अतः इस संस्करण में आलोचनात्मक प्रस्तावना के साथ-साथ विस्तृत टिप्पणियां दी गई हैं जिनसे कवि का भाव समझ लेने में परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की कठिनता नहीं रह जायगी। इनको भाषाविज्ञान और प्राचीन हिन्दी के विशेषज्ञ विद्वान् प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए०, विद्यामहोदधि ने लिखा है। संपूर्ण पद्मावत का अर्थसहित संस्करण भी आप तय्यार कर रहे हैं जो यथासमय प्रकाशित होगा।

सम्पादक

विषय-सूची

संक्षिप्त जायसी

संक्षिप्त जायसी

[१]

स्तुति-खण्ड

(१) ईश्वर-स्तुति

सुमिरौं आदि एक करतारू।
जेहि जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू॥
कीन्हेसि प्रथम जोति परकासू।
कीन्हेसि तेइ परबत कैलासू॥
कीन्हेसि अगिनि, पवन, जल, खेहा।
कीन्हेसि बहुतै रंग उरेहा॥
कीन्हेसि धरती, सरग, पतारू।
कीन्हेसि बरन बरन औतारू॥
कीन्हेसि दिन, दिनअर, ससि, राती।
कीन्हेसि नखत, तराइन-पाँती॥
कीन्हेसि धूप, सीउ औ छाँहा।
कीन्हेसि मेघ, बीजु तेहिं माँहा॥

कीन्हेसि सप्त मही बरम्हंडा ।
कीन्हेसि भुवन चौदहो खंडा ॥
कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाज न काहि ।
पहिलै ताकर नावँ लै कथा करौं औगाहि ॥१॥

कीन्हेसि सात समुंद अपारा ।
कीन्हेसि मेरु, खिखिंद पहारा ॥
कीन्हेसि सीप, मोति जेहिं भरे ।
कीन्हेसि बहुतै नग निरमरे ॥
कीन्हेसि साउज आरन रहईं ।
कीन्हेसि पङ्खि उड़हिं जहँ चहईं ॥
कीन्हेसि मानुष, दिहेसि बड़ाई ।
कीन्हेसि अन्न, भुगुति तेहिं पाई ॥
कीन्हेसि दरब गरब जेहि होई ।
कीन्हेसि लोभ, अघाइ न कोई ॥
कीन्हेसि जियन, सदा सब चहा ।
कीन्हेसि मीचु, न कोई रहा ॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि, कोइ धनी ।
कीन्हेसि सँपति बिपति पुनि घनी ॥
कीन्हेसि कोइ निभरोसी, कीन्हेसि कोइ बरियार ।
छारहिं तें सब कीन्हेसि, पुनि कीन्हेसि सब छार ॥२॥

जावत जगत हस्ति औ चाँटा ।
सब कहँ भुगुति राति दिन बाँटा ॥
पङ्खि पतङ्ग न बिसरै कोई ।
परगट गुपुत जहाँ लगि होई ॥
छत्रहिं अछत, निछत्रहि छावा ।
दूसर नाहिं जो सरवरि पावा ॥

परबत ढाह देख सब लोगू।
चाँटहिं करै हस्ति सरि जोगू॥
बज्रहिं तिनकहिं मारि उड़ाई।
तिनहि बज्र करि देइ बड़ाई॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई।
करै सोइ जो चित्त न होई॥
काहू भोग भुगुति सुख सारा।
काहू भूख बहुत दुख मारा॥

सबै नास्ति वह अहथिर ऐस साज जेहि केर।
एक साजै औ भाँजै चहै सँवारै फेर॥३॥

परगट गुपुत सो सरबबिआपी।
धरमी चीन्ह, न चीन्है पापी॥
ना ओहि पूत न पिता न माता।
ना ओहि कुटुँब न कोइ सँग नाता॥
जना न काहु, न कोइ ओहि जना।
जहँ लगि सब ताकर सिरजना॥
वै सब कीन्ह जहाँ लगि कोई।
वह नहिं कीन्ह काहु कर होई॥
हुत पहिले अरु अब है सोई।
पुनि सो रहै रहै नहिं कोई॥
और जो होइ सो बाउर अंधा।
दिन दुइ चारि मरै करि धंधा॥
ना ओहि ठाउँ, न ओहि बिन ठाऊँ।
रूप रेख बिन निरमल नाऊँ॥

ना वह मिला न बेहरा ऐस रहा भरिपूरि।
दीठिवंत कहँ नीयरे अंध मूरुखहिं दूरि॥४॥

अति अपार करता कर करना।
बरनि न कोई पावै बरना ॥
सात सरग जो कागद करई।
धरती समुद दुहूँ मसि भरई ॥
जावत जग साखा बनढाखा।
जावत केस रोंव पँखि पाखा ॥
जाँवत खेह रेह दुनयाई।
मेघबूँद औ गगन तराई ॥
सब लिखनी कै लिखु संसारा।
लिखि न जाइ गति-समुद अपारा ॥
ऐस कीन्ह सब गुन परगटा।
अबहुँ समुद महँ बूँद न घटा ॥
ऐस जानि मन गरब न होई।
गरब करै मन बाउर सोई ॥

बड़ गुनवंत गुसाईं चहै सँवारै बेग।
औ अस गुनी सँवारै जो गुन करै अनेग ॥५॥

(२) पैगम्बर-स्तुति

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा।
नाम मुहम्मद पूनो-करा ॥
प्रथम जोति बिधि ताकर साजी।
औ तेहि प्रीति सिहिटि उपराजी ॥
दीपक लेसि जगत कहँ दीन्हा।
भा निरमल जग, मारग चीन्हा ॥
जौं न होत अस पुरुष उजारा।
सूझि न परत पंथ अँधियारा ॥

दुसरे ठांवँ दैव वै लिखे ।
भए धरमी जे पाढ़त सिखे ॥
जेहि नहिं लीन्ह जनम भरि नाऊँ ।
ता कहँ कीन्ह नरक महँ ठाऊँ ॥
जगत बसीठ दई ओहि कीन्हा ।
दुइ जग तरा नावँ जेहि लीन्हा ॥

गुन अवगुन बिधि पूछब होइहि लेख औ जोख ।
वह बिनउब आगे होइ करब जगत कर मोख ॥६॥

(३) राज-स्तुति

सेरसाहि देहली सुलतानू ।
चारिउ खंड तपै जस भानू ॥
ओही छाज छात औ पाटा ।
सब राजै भुइँ धरा लिलाटा ॥
जाति सूर औ खाँड़े सूरा ।
औ बुधिवंत सबै गुन पूरा ॥
हय गय सेन चलै जग पूरी ।
परबत टूटि उड़हिं होइ धूरी ॥
रेनु रैनि होइ रविहिं गरासा ।
मानुख पंखि लेहिं फिरि बासा ॥
डोलैं गगन, इन्द्र डरि काँपा ।
बासुकि जाइ पतारहिं चाँपा ॥
मेरु धसमसै, समुद सुखाई ।
बनखँड टूटि खेह मिलि जाई ॥

जो गढ़ नएउ न काहुहि चलत होइ सो चूर ।
जब वह चढ़ै भूमिपति सेरसाहि जग सूर ॥७॥

अदल कहौं पुहुमी जस होई।
चाँटा चलत न दुखवै कोई॥
नौसेरवाँ जो आदिल कहा।
साहि अदल सरि सोउ न अहा॥
परी नाथ कोइ छुवै न पारा।
मारग मानुष सोन उछारा॥
गऊ सिंह रैंगहिं एक बाटा।
दूनौ पानि पियहिं एक घाटा॥
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा।
विधि स्वरूप जग ऊपर गढ़ा॥
दान डाँक बाजै दरबारा।
कीरति गई समुन्दर पारा॥
जो कोइ जाइ एक बेर माँगा।
जनम न भा पुनि भूखा नाँगा॥

ऐस दानि जग उपजा सेरसाहि सुलतान।
ना अस भयउ न होइहि ना कोइ देइ अस दान॥८॥

(४) पीर-स्तुति

सैयद असरफ़ पीर पियारा।
जेहि मोंहि पंथ दीन्ह उँजियारा॥
लेसा हियें प्रेम कर दीया।
उठी जोति, भा निरमल हीया॥
मारग हुत अँधियार जो सूझा।
भा अँजोर, सब जाना बूझा॥
खार समुद्र पाप मोर मेला।
बोहित-धरम लीन्ह कै चेला॥

उन्ह मोर कर बूड़त कै गहा।
पायों तीर घाट जो अहा॥
जाकहँ ऐस होइ कंधारा।
तुरत बेगि सो पावै पारा॥
दस्तगीर गाढ़े कै साथी।
बह अवगाह, दीन्ह तेहि हाथी॥
मुहमद तेइ निचिंत पथ जेहि सँग मुरसिद पीर।
जेहिके नाव औ खेवक बेगि लाग सो तीर॥६॥

(५) कवि-वर्णन

एक नयन कबि मुहमद गुनी।
सोइ बिमोहा जेइ कबि सुनी॥
चाँद जैस जग बिधि औतारा।
दीन्ह कलंक, कीन्ह उजियारा॥
जग सूझा एकै नयनाहाँ।
उआ सूक जस नखतन्ह माहाँ॥
जायस नगर धरम-अस्थानू।
तहाँ आइ कबि कीन्ह बखानू॥
औ बिनती पँडितन सन भजा।
टूट सँवारहु, मेरवहु सजा॥
सन नव सै सैंतालिस अहा।
कथा-अरंभ बैन कवि कहा॥
आदि अन्त जस गाथा अहै।
लिखि भाखा चौपाई कहै॥
भँवर आइ बनखँड सन लेइ कँवल कै बास।
दादुर बास न पावई भलहि जो आछै पास॥१०॥

(१) सिंहलद्वीप-वर्णन खंड

सिंघलदीप कथा अब गावौं।
औ सो पदमिनि बरनि सुनावौं॥
सात दीप बरनै सब लोगू।
एकौ दीप न ओहि सरि जोगू॥
घन अमराउ लाग चहुँ पासा।
उठा भूमि हुत लागि अकासा॥
तरिवर सबै मलयगिरि लाई।
भइ जग छाँह रैनि होइ आई॥
मलय-समीर सोहावन छाहाँ।
जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ॥
पथिक जो पहुँचै सहि कै घामू।
दुख बिसरै, सुख होइ बिसरामू॥
जेइ वह पाई छाहँ अनूपा।
फिरि नहिं आइ सहै यह धूपा॥
अस अमराउ सघन घन बरनि न पारौं अंत।
फूलै फरै छवौ ऋतु जानहु सदा बसंत॥१॥
बसहिं पंखि बोलहिं बहु भाखा।
करहिं हुलास देखि कै साखा॥
भोर होत बोलहिं चुहचूही।
बोलहिं पाँडुक "एकै तूही"॥
सारौं सुआ जो रहचह करहीं।
कुरहिं परेवा औ करबरहीं॥
"पीव पीव" कर लाग पपीहा।
"तुही तुही" कर गडुरी जीहा॥

"कुहू कुहू" करि कोइलि राखा ।
औ भिंगराज बोल बहु भाखा ॥
"दही दही" करि महरि पुकारा ।
हारिल बिनवै आपन हारा ॥
कुहुकहिं मोर सोहावन लागा ।
होइ कुराहर बालहिं कागा ॥

जावत पंखी जगत के भरि बैठे अमराउँ ।
आपनि आपनि भाषा लेहिं दई कर नाउँ ॥२॥

पैग पैग पर कुवाँ बावरी ।
साजी बैठक और पाँवरी ॥
मठ मंडप चहुँ पास सँवारे ।
तपा जपा सब आसन मारे ॥
मानसरोदक बरनौं काहा ।
भरा समुद अस अति अवगाहा ॥
पानि मोति अस निरमल तासू ।
अमृत आनि कपूर सुबासू ॥
लंक दीप कै सिला अनाई ।
बाँधा सरवर घाट बनाई ॥
फूला कवँल रहा होइ राता ।
सहस सहस पखुरिन कर छाता ॥
उलथहिं सीप, मोति उतिराहीं ।
चुगहिं हंस औ केलि कराहीं ॥
पुनि फुलवारि लागि चहुँ पासा ।
बिरिछ बेधि चन्दन भइ बासा ॥

तेहिं सिर फूल चढ़हिं वै जेहि माथे मनि भाग ।
आछहिं सदा सुगन्ध बहु जनु बसंत औ फाग ॥३॥

सिंहलनगर देखु पुनि बसा।
धनि राजा अस जे कै दसा॥
ऊँची पौरी ऊँच अवासा।
जनु कैलास इन्द्र कर वासा॥
राव रंक सब घर घर सुखी।
जो दीखै सो हँसता-मुखी॥
सबै गुनी औ पंडित ज्ञाता।
संसकिरित सब के मुख बाता॥
पुनि देखी सिंहल कै हाटा।
नवो निद्धि लछिमी सब बाटा॥
रतन पदारथ मानिक मोती।
हीरा लाल सो अनबन जोती॥
जिन्ह एहि हाट न लीन्ह बेसाहा।
ता कहँ आन हाट कित लाहा ?॥

कोई करै बेसाहनी काहू केर बिकाइ।
कोई चलै लाभ सन, कोई मूर गँवाइ॥४॥

पुनि आए सिंघलगढ़ पासा।
का बरनौं जनु लाग अकासा॥
परा खोह चहुँ दिसि अस बाँका।
काँपै जाँघ, जाइ नहिं झाँका॥
अगम असूझ देखि डर खाई।
परै सो सपत-पतारहिं जाई॥
नव पौरी बाँकी, नवखण्डा।
नवौ जो चढ़ै जाइ बरम्हंडा॥
निति गढ़ बाँचि चलै ससि सूरू।
नाहिं त होइ बाजि रथ चूरू॥

फिरहिं पाँच कोतवार सुभौंरी।
काँपै पाँव चपत वह पौरी॥
कनक-सिला गढ़ि सीढ़ी लाईं।
जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताईं॥
नवौ खंड नव पौरी औ तहँ बज्र-केवार।
चारि बसेरे सौं चढ़ै, सत सौं उतरै पार॥५॥
नव पौरी पर दसवँ दुवारा।
तेहि पर बाज राज-घरियारा॥
घरी सो बैठि गनै घरियारी।
पहर पहर सो आपनि बारी॥
जबहीं घरी पूजि तेहिं मारा।
घरी घरी घरियार पुकारा॥
परा जो डाँड़ जगत सब डाँड़ा।
का निचिंत माटी कर भाँड़ा?॥
तुम्ह तेहि चाक चढ़े हौ काँचे।
आएहु रहै, न थिर होइ बाँचे॥
घरी जो भरी घटी तुम्ह आऊ।
का निचिंत होइ सोउ बटाऊ?॥
पहरहिं पहर गजर निति होई।
हिया बजर, मन जाग न सोई॥
मुहमद जीवन जल भरन रहँट घरी कै रीति।
घरी जो आई ज्यों भरी, ढरी, जनम गा बीति॥६॥
पुनि चलि देखा राज-दुआरा।
मानुष फिरहिं पाइ नहिं बारा॥
हस्ति सिंघली बाँधे बारा।
जनु सजीव सब ठाढ़ पहारा॥

पुनि बाँधे रजबार तुरंगा।
का बरनौं जस उन्हकै रंगा॥
मन तें अगमन डोलहिं बागा।
लेत उसास गगन सिर लागा॥
राजसभा पुनि देख बईठी।
इन्द्रसभा जनु परि गै डीठी॥
मुकुट बाँधि सब बैठे राजा।
दर निसान नित जिन्ह के बाजा॥
माँझ ऊँच इन्द्रासन साजा।
गंध्रबसेन बैठ तहँ राजा॥

छत्र गगन लगि ताकर, सूर तवै जस आप।
सभा कँवल अस बिगसइ, माथे बड़ परताप॥७॥

---

(२) पद्मावती-जन्म खण्ड

बरनौं राजमँदिर रनिवासू।
जनु अछरीन्ह भरा कैलासू॥
सोरह सहस पदमिनी रानी।
एक एक तें रूप बखानी॥
अति सुरूप औ अति सुकुवाँरी।
पान फूल के रहहिं अधारी॥
तेहिं ऊपर चंपावति रानी।
महा सुरूप पाट-परधानी॥
चंपावति जो रूप सँवारी।
पदमावति चाहै औतारी॥

जस अवधान पूर होइ मासू ।
दिन दिन हिये होइ परगासू ॥
जस अंचल महँ छिपै न दीया ।
तस उँजियार दिखावै हीया ॥
सोने मँदिर सँवारहिं औ चन्दन सब लीप ।
दिया जो मनि सिवलोक मँह उपना सिंघलदीप ॥८॥

भए दस मास पूरि भइ घरी ।
पदमावति कन्या औतरी ॥
जानौ सूर किरिन-हुति काढ़ी ।
सूरुज-कला घाटि, वह बाढ़ी ॥
भा निसि महँ दिनकर परकासू ।
सब उजियार भएउ कैलासू ॥
इते रूप मूरति परगटी ।
पूनौ ससी छीन होइ घटी ॥
घटतहि घटत अमावस भई ।
दिन दुइ लाज गाड़ि भुइँ गई ॥
पुनि जो उठी दुइज होइ नई ।
निहकलंक ससि विधि निरमई ॥
पदुमगंध बेधा जग बासा ।
भौंर पतंग भए चहुँ पासा ॥
इते रूप भै कन्या जेहिं सरि पूज न कोइ ।
धनि सो देस रूपवंता जहाँ जनम अस होइ ॥९॥

भै छठि राति छठीं सुख मानी ।
रहस कूद सौं रैनि बिहानी ॥
भा बिहान पंडित सब आए ।
काढ़ि पुरान जनम अरथाए ॥

कन्यारासि उदय जग कीया।
पदमावती नाम अस दीया॥
कहेन्हि जनमपत्री जो लिखी।
देइ असीस बहुरे जोतिषी॥
पाँच बरस महँ भै सो बारी।
दीन्ह पुरान पढ़ै बैसारी॥
भै पदमावति पंडित गुनी।
चहूँ खंड के राजन्ह सुनी॥
सात दीप के बर जो ओनाहीं।
उत्तर पावहिं फिरि फिरि जाहीं॥
राजा कहै गरब कै अहौं इंद्र सिवलोक।
को सरवरि है मोरे का सौं करौं बरोक॥१०॥
सात खंड धौराहर तासू।
सो पदमिनि कहँ दीन्ह निवासू॥
औ दीन्ही सँग सखी सहेली।
जो सँग करैं रहसि रस-केली॥
सुआ एक पदमावति ठाऊँ।
महा पँडित हीरामन नाऊँ॥
दई दीन्ह पंखिहि असि जोती।
नैन रतन, मुख मानिक मोती॥
कंचन-बरन सुआ अति लोना।
मानहुँ मिला सोहागहिं सोना॥
रहहिं एक सँग दोऊ पढ़हिं सासतर वेद।
बरम्हा सीस डोलावहीं सुनत लाग तस भेद॥११॥
भै उनंत पदमावति बारी।
रचि रचि विधि सब कला सँवारी॥

जग बेधा तेहिं अंग-सुबासा।
भँवर आइ लुबुधे चहुँ पासा॥
एक दिवस पद्मावति रानी।
हीरामनि तइँ कहा सयानी॥
सुनु हीरामनि कहौं बुझाई।
दिन दिन मदन सतावै आई॥
देस देस के बर मोहि आवहिं।
पिता हमार न आँखि लगावहि॥
जोबन मोर भएउ जस गंगा।
देह देह हम लाग अनंगा॥
हीरामनि तब कहा बुझाई।
बिधि कर लिखा मेटि नहिं जाई॥
अज्ञा देउ देखौं फिरि देसा।
तोहि जोग बर मिलै नरेसा॥

जौ लगि मैं फिरि आवौं मन चित धरहु निवारि।
सुनत रहा कोइ दुरजन राजहि कहा बिचारि॥१२॥

राजा सुना दीठि भै आना।
बुधि जो देहि सँग सुआ सयाना॥
भएउ रजायसु मारहु सूआ।
सूर सुनाव चाँद जहँ ऊआ॥
सत्रु सुआ के नाऊ बारी।
सुनि धाए जस धाव मँजारी॥
तब लगि रानी सुआ छपावा।
जब लगि ब्याध न आवै पावा॥
पिता क आयसु माथे मोरे।
कहहु जाय बिनवौं कर जोरे॥

पंखि न कोई होइ सुजानू।
जानै भुगुति, कि जान उड़ानू ॥
सुआ जो पढ़ै पढ़ाए बैना।
तेहि कत बुधि जेहिं हिये न नैना? ॥

मानिक मोती देखि वह हिये न ज्ञान करेइ।
दारिउँ दाख जानि कै अबहिं ठोर भरि लेइ ॥१३॥

वै तौ फिरे उतर अस पावा।
बिनवा सुआ हिये डर खावा ॥
रानी तुम जुग जुग सुख पाऊ।
होइ अज्ञा बनबास तौ जाऊँ ॥
मोतिहिं मलिन जो होइ गइ कला।
पुनि सो पानि कहाँ निरमला ? ॥
ठाकुर अंत चहै जेहि मारा।
तेहि सेवक कर कहाँ उबारा ? ॥
रानी उतर दीन्ह कै माया।
जौं जिउ जाइ रहै किमि काया ?॥
हीरामन ! तू प्रान परेवा।
धोख न लाग करत तोहिं सेवा ॥
तोहिं सेवा बिछुरन नहिं आखौं।
पींजर हिये घाल कै राखौं ॥

सुअटा रहै खुरुक जिउ अबहिं काल सो आव।
सत्रु अहै जो करिया कबहुँ सो बोरे नाव ॥१४॥

---

(३) मानसरोदक-खण्ड

एक दिवस पून्यो तिथि आई।
मानसरोदक चली नहाई॥
पदमावति सब सखी बुलाई।
जनु फुलवारि सबै चलि आई॥
खेलत मानसरोवर गईं।
जाइ पाल पर ठाढ़ी भईं॥
देखि सरोवर हँसैं कुलेली।
पदमावति सौं कहहिं सहेली॥
ए रानी! मन देखु बिचारी।
एहि नैहर रहना दिन चारी॥
जौ लगि अहै पिता कर राजू।
खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली।
कित हम, कित यह सरवर-पाली॥
कित आवन पुनि अपने हाथा।
कित मिलि कै खेलब एक साथा॥

पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह॥१५॥

कित नैहर पुनि आउब कित ससुरे यह खेल।
आपु आपु कहँ होइहि परब पंखि जस डेल॥ १६॥

सरवर तीर पदमिनी आई।
खोंपा छोरि केस मुकलाई॥

ओनई घटा परी जग छाहाँ।
ससि कै सरन लीन्ह जनु राहाँ॥
छपि गै दिनहिं भानु कै दसा।
लेइ निसि नखत चाँद परगसा॥
भूलि चकोर दीठि मुख लावा।
मेघघटा मँह चंद देखावा॥
धरी तीर सब कंचुकि सारी।
सरवर महँ पैठीं सब बारी॥
सरवर नहिं समाइ संसारा।
चाँद नहाइ पैठ लेइ तारा॥
धनि सो नीर ससि तरई ऊई।
अब कित दीठ कमल औ कूई॥

चकई बिछुरि पुकारै कहाँ मिलौं, हो नाहँ।
एक चाँद निसि सरग महँ, दिन दूसर जल माहँ॥१७॥

लागीं केलि करै मझ नीरा।
हंस लजाइ बैठ ओहि तीरा॥
बाद मेलि कै खेल पसारा।
हार देइ जो खेलत हारा॥
सँवरिहिं साँवरि, गोरिहिं गोरी।
आपनि आपनि लीन्ह सो जोरी॥
बूझि खेल खेलहु एक साथा।
हार न होइ पराए हाथा॥
सखी एक तेइ खेल न जाना।
भै अचेत मनि-हार गवाँना॥
कवँल डार गहि भै बेकरारा।
कासों पुकारौं आपन हारा॥

कित खेलै आइउँ एहि साथा।
हार गँवाइ चलिउँ लेइ हाथा॥
लागीं सब मिलि हेरै बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोइ उठी मोती लेइ काहू घोंघा हाथ॥१८॥
कहा मानसर चाह सो पाई।
पारस-रूप इहाँ लगि आई॥
भा निरमल तिन्ह पायँन्ह परसे।
पावा रूप रूप के दरसे॥
मलय-समीर बास तन आई।
भा सीतल, गै तपनि बुझाई॥
न जनौं कौन पौन लेइ आवा।
पुन्य-दसा भै, पाप गँवावा॥
ततखन हार बेगि उतिराना।
पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना॥
बिगसा कुमुद देखि ससि-रेखा।
भै तहँ ओप जहाँ जोइ देखा॥
पावा रूप रूप जस चहा।
ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा॥
नयन जो देखा कवँल भा, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन-जोति नग हीर॥१६॥

---

(४) सुआ-खण्ड

पदमावति तहँ खेल दुलारी।
सुआ मँदिर महँ देखि मजारी॥
कहेसि चलौं जौ लहि तन पाँखा।
जिउ लै उड़ा ताकि बन-ढाँखा॥

जाइ परा बनखँड जिउ लीन्हें।
मिले पंखि, बहु आदर कीन्हें॥
आनि धरेन्हि आगे फरि साखा।
भुगुति भेंट जौ लहि बिधि राखा॥
पाइ भुगुति सुख तेहि मन भएऊ।
दुख जो अहा बिसरि सब गएऊ॥
ए गुसाइँ तूँ ऐस विधाता।
जावत जीव सबन्ह भुकदाता॥
पाहन महँ नहिं पतँग बिसारा।
जहँ तोहि सुमिर दीन्ह तुइँ चारा॥

तौं लहि सोग बिछोह कर भोजन परा न पेट।
पुनि बिसरन भा सुमिरना जब संपति भै भेंट॥२०॥

पदमावति पहँ आइ भँडारी।
कहेसि मँदिर महँ परी मजारी॥
सुआ जो उतर देत रह पूछा।
उड़िगा, पिंजर न बोलै छूँछा॥
रानी सुना सबहिं सुख गएऊ।
जनु निसि परी, अस्त दिन भएऊ॥
गहने गही चाँद कै करा।
आँसु गगन जस नखतन्ह भरा॥
टूट पाल सरवर बहि लागे।
कवँल बूड़, मधुकर उड़ि भागे॥
एहि बिधि आँसु नखत होइ चूए।
गगन छाँड़ि सरवर महँ ऊए॥
चिहुर चुईं मोतिन कै माला।
अब सँकेत बाँधा चहुँ पाला॥

उड़ि यह सुअटा कहँ बसा खोजु सखी सो बासु ।
दहुँ है धरती की सरग, पौन न पावै तासु ॥२१॥

चहूँ पास समुझावहिं सखी ।
कहाँ सो अब पाउब, गा पँखी ॥
जौ लहि पींजर अहा परेवा ।
रहा बंदि महँ कीन्हेसि सेवा ॥
तेहि बंदि हुति छुटै जो पावा ।
पुनि फिरि बंदि होइ कित आवा ? ॥
वै उड़ान-फर तहियै खाए ।
जब भा पँखि, पाँख तन आए ॥
पींजर जेहिक सौंपि तेहि गएऊ ।
जो जाकर सो ताकर भएऊ ॥
दस दुवार जेहि पींजर माहाँ ।
कैसे बाँच मँजारी पाहाँ ? ॥
यह धरती अस केतन लीला ।
पेट गाढ़ अस, बहुरि न ढीला ॥

जहाँ न राति न दिवस है जहाँ न पौन न पानि ।
तेहिं बन सुअटा चलि बसा कौन मिलावै आनि ? ॥२२॥

सुऐ तहाँ दिन दस कल काटी ।
आय बियाध ढुका लेइ टाटी ॥
पैग पैग भुइँ चापत आवा ।
पंखिन्ह देखि हिये डर खावा ॥
देखिय किछु अचरज अनभला ।
तरिवर एक आवत है चला ॥
एहि बन रहत गई हम आऊ ।
तरिवर चलत न देखा काऊ ॥

आज जो तरिवर चल, भल नाहीं।
आवहु यह बन छाँड़ि पराहीं॥
वै तौ उड़े और बन ताका।
पण्डित सुआ भूलि मन थाका॥
साखा देखि राज जनु पावा।
बैठ निचिंत, चला वह आवा॥
पाँच बान कर खोंचा लासा भरे सो पाँच।
पाँख भरे तन अरुझा, कित मारे बिनु बाँच॥२३॥

बँधिगा सुआ करत सुख केली।
चूरि पाँख मेलेसि धरि डेली॥
तहवाँ बहुत पंखि खरभरहीं।
आपु आपु महँ रोदन करहीं॥
बिखदाना कित होत अँगूरा।
जेहि भा मरन डहन धरि चूरा॥
जौं न होत चारा कै आसा।
कित चिरिहार ढुकत लेइ लासा?॥
यह विष चारै सब बुधि ठगी।
औ भा काल हाथ लेइ लगी॥
एहि झूठी माया मन भूला।
ज्यों पंखी तैसै तन फूला॥
यह मन कठिन मरै नहिं मारा।
काल न देख, देख पै चारा॥
हम तौ बुद्धि गँवावा बिख-चारा अस खाइ।
तैं सुअटा पण्डित होइ कैसे बाझा आइ?॥२४॥

सुऐ कहा हमहूँ अस भूले।
टूट हिंडोल-गरब जेहि भूले॥

केरा के बन लीन्ह बसेरा।
परा साथ तहँ बैरी केरा॥
सुख कुरवारि फरहरी खाना।
ओहु बिख भा जब व्याध तुलाना॥
सुखी निचिंत जोरि धन करना।
यह न चिंत आगे है मरना॥
भूले हमहुँ गरब तेहि माहाँ।
सो बिसरा पावा जेहि पाहाँ॥
होइ निचिंत बैठे तेहि आड़ा।
तब जाना खोंचा हिये गाड़ा॥

चरत न खुरुक कीन्ह जिउ तब रे चरा सुख सोइ।
अब जो फाँद परा गिउ तव रोए का होइ॥२५॥

सुनि कै उतर आँसु पुनि पोंछे।
कौन पंखि बाँधा बुधि-ओछे॥
पंखिन्ह जौ बुधि होइ उजारी।
पढ़ा सुआ कित धरै मजारी ?॥
तादिन व्याध भए जिउलेवा।
उठे पाँख, भा नावँ परेवा॥
भै बियाधि तिसना सँग खाधू।
सूझै भुगुति, न सूझ बियाधू॥
हम निचिंत वह आव छिपाना।
कौन बियाधहि दोष अपाना॥

सो औगुन कित कीजिए जिउ दीजै जेहि काज।
अब कहना है किछु नहीं मस्ट भली पँखिराज॥२६॥

---

(१) बनिजारा-खण्ड

चितउरगढ़ कर एक बनिजारा।
सिंघलदीप चला बैपारा॥
बाम्हन हुत एक निपट भिखारी।
सो पुनि चला चलत बैपारी॥
ऋन काहू कर लीन्हेसि काढ़ी।
मकु तहँ गए होइ किछु बाढ़ी॥
मारग कठिन बहुत दुख भएऊ।
नाँघि समुद्र दीप ओहि गएऊ॥
देखि हाट किछु सूझ न ओरा।
सबै बहुत, किछु देख न थोरा॥
पै सुठि ऊँच बनिज तहँ केरा।
धनी पाव, निधनी मुख हेरा॥
लाख करोरिन्ह बस्तु बिकाई।
सहसन केरि न कोउ ओनाई॥

सबहीं लीन्ह बेसाहना औ घर कीन्ह बहोर।
बाम्हन तहवाँ लेइ का? गाँठि साँठि सुठि थोर॥१॥

झूरै ठाढ़ हौं, काहे क आवा?
बनिज न मिला रहा पछितावा॥
लाभ जानि आएउँ एहि हाटा।
मूर गँवाइ चलेउँ तेहि बाटा॥
जेहि ब्योहरिया कर ब्यौहारू।
का लेइ देब जौ छेंकिहिं बारू॥

तबहीं व्याध सुआ लेइ आवा।
कंचन-बरन अनूप सुहावा॥
बेंचै लाग हाट लै ओंही।
मोल रतन मानिक जहँ होहीं॥
बाम्हन आइ सुआ सौं पूछा।
दहुँ गुनवंत कि निरगुन छूछा ?॥
पंडित हौ तौ सुनावहु वेदू।
बिनु पूछे पाइय नहिं भेदू॥

हौं बाम्हन औ पंडित कहु आपन गुन सोइ।
पढ़े के आगे जो पढ़ै दून लाभ तेहि होइ॥२॥

तब गुन मोहि अहा, हो देवा!
जब पिंजर हुत छूट परेवा॥
अब गुन कौन जो बँद, जजमाना।
घालि मँजूसा बेचै आना॥
रोवत रकत भएउ मुख राता।
तन भा पियर, कहौं का बाता ?॥
सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू।
करि पंखिन्ह कहँ मया न मारू॥
निठुर होइ जिउ बधसि परावा।
हत्या केर न तोहि डर आवा॥
कहसि पंखि का दोस जनावा।
निठुर तेइ जे परमस खावा॥
जौ न होहिं अस परमँस-खाधू।
कित पंखिन्ह कहँ धरै बियाधू॥

बाम्हन सुआ बेसाहा सुनि मति बेद गरंथ।
मिला आइ कै साथिन्ह भा चितउर के पंथ॥३॥

तब लगि चित्रसेन सब साजा।
रतनसेन चितउर भा राजा॥
आइ बात तेहि आगे चली।
राजा बनिज आए सिंघली॥
हैं गजमोति भरी सब सीपी।
और वस्तु बहु सिंघलदीपी॥
बाम्हन एक सुआ लेइ आवा।
कंचन-बरन अनूप सोहावा॥
राते स्याम कंठ दुइ काँठा।
राते डहन लिखा सब पाठा॥
औ दुइ नयन सुहावन राता।
राते ठोर अमी-रस बाता॥
मस्तक टीका, काँध जनेऊ।
कवि बियास, पण्डित सहदेऊ॥

बोल अरथ सौं बोलै सुनत सीस सब डोल।
राज-मँदिर महँ चाहिय अस वह सुआ अमोल॥ ४॥

भै रजाइ जन दस दौराए।
बाम्हन सुआ बेगि लेइ आए॥
विप्र असीसि बिनति औधारा।
सुआ जीउ नहिं करौं निरारा॥
पै यह पेट महा बिसवासी।
जेइ सब नाव तपा सन्यासी॥
सुवा असीस दीन्ह बड़ साजू।
बड़ परताप अखंडित राजू॥
कोइ बिनु पूछे बोल जो बोला।
होइ बोल माँटी के मोला॥

गुनी न कोई आपु सराहा।
जो बिकाइ गुन कहा सो चाहा ॥
जौ लहि गुन परगट नहिं होई।
तौ लहि मरम न जानै कोई ॥

चतुरवेद हौं पण्डित हीरामन मोहिं नावँ।
पद्मावति सौं मेरवौं सेव करौं तेहि ठावँ ॥५॥

रतनसेन हीरामन चीन्हा।
एक लाख बाम्हन कहँ दीन्हा ॥

---

(२) नागमती-सुवा संवाद

दिन दस पाँच तहाँ जो भए।
राजा कतहुँ अहेरै गए ॥
नागमती रुपवंती रानी।
सब रनिवास पाट-परधानी ॥
कै सिंगार कर दरपन लीन्हा।
दरसन देखि गरब जिउ कीन्हा ॥
बोलहु सुआ पियारे—नाहाँ।
मोरे रूप कोइ जग माहाँ ? ॥
सुआ बानि कसि कहु कस सोना।
सिंघलदीप तोर कस लोना ? ॥
कौन रूप तोरी रुपमनी।
दहु हौं लोनि कि वै पदमिनी ? ॥

जो न कहसि सत सुअटा तोहि राजा कै आन।
है कोई एहि जगत महँ मोरे रूप समान ॥६॥

सुमिरि रूप पदमावति केरा।
हँसा सुआ, रानी मुख हेरा ॥
जेहिं सरवर महँ हंस न आवा।
बगुला तेहि सर हंस कहावा ॥
दई कीन्ह अस जगत अनूपा।
एक एक तें आगरि रूपा ॥
कै मन गरब त छाजा काहू।
चाँद घटा औ लागेउ राहू ॥
लोनि बिलोनि तहाँ को कहै।
लोनी सोई कंत जेहि चहै ॥
का पूँछहु सिंघल कै नारी।
दिनहिं न पूजै निसि अँधियारी ॥
पुहुप सुवास सो तिन्ह कै काया।
जहाँ माथ का बरनौं पाया ? ॥

गढ़ी सो सोने सोंधै भरी सो रूपै भाग।
सुनत रूखि भइ रानी हिये लोन अस लाग ॥७॥

जो यह सुआ मँदिर महँ अहई।
कबहुँ बात राजा सौं कहई ॥
सुनि राजा पुनि होइ बियोगी।
छाँड़े राज, चलै होइ जोगी ॥
बिख राखिय नहिं, अँकूरू।
सबद न देइ भोर तमचूरू ॥
धाय दामिनी-वेग हँकारी।
ओहि सौंपा हीये रिस भारी ॥
देखु, सुआ यह है मँदचाला।
भएउ न ताकर जाकर पाला ॥

मुख कह आन, पेट बस आना ।
तेहि औगुन दस हाट बिकाना ॥
पंखि न राखिय होइ कुभाखी ।
लेइ तहँ मारु जहाँ नहिं साखी ॥

जेहि दिन कहँ मैं डरति हौं रैन छपावौं सूर ।
लै चह दीन्ह कवँल कहँ मोकहँ होइ मयूर ॥८॥

धाय सुआ लेइ मारै गई ।
समुझि गियान हिये मति भई ॥
सुआ सो राजा कर बिसरामी ।
मारि न जाइ चहै जेहि स्वामी ॥
मकु यह खोज होइ निसि आए ।
तुरय-रोग हरि-माथे जाए ॥
राखा सुआ धाय मति साजा ।
भएउ खोज निसि आयउ राजा ॥
रानी उतर मान सौं दीन्हा ।
पंडित सुआ मजारी लीन्हा ॥
राजै सुनि वियोग तस माना ।
जैसे हिय विक्रम पछिताना ॥
की परान घट आनहु मती ।
की चलि होहु सुआ सँग सती ॥

जिनि जानहु कै औगुन मँदिर होइ सुखराज ।
आयसु मेटैं कन्त कर काकर भा न अकाज ? ॥९॥

चाँद जैस धनि उजियरि अही ।
भा पिउ-रोस, गहन अस गही ॥

परम सोहाग निबाहि न पारी।
भा दोहाग सेवा जब हारी॥
एतनिक दोस बिरचि पिउ रूठा।
जो पिउ आपन कहै सो झूठा॥
ऐसे गरब न भूलै कोई।
जेहि डर बहुत पियारी सोई॥
रानी आइ धाय के पासा।
सुआ मुआ सेवँर के आसा॥
परा प्रीति-कंचन महँ सीसा।
बिहरि न मिलै स्याम पै दीसा॥
कहाँ सोनार पास जेहि जाऊँ।
देइ सोहाग करै एक ठाऊँ॥

मैं पिउ-प्रीति भरोसे गरब कीन्ह जिउ माँह।
तेहि रिस हौं परहेली, रूसेउ नागर नाँह॥१०॥

उतर धाय तब दीन्ह रिसाई।
रिस आपुहि, बुधि औरहि खाई॥
मैं जो कहा रिस जिनि करु बाला।
को न गएउ एहि रिस कर घाला ?
बिरस बिरोध रिसहि पै होई।
रिस मारै, तेहि मार न कोई॥
जुआ-हारि समुझी मन रानी।
सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी॥
मानु पीय ! हौं गरब न कीन्हा।
कंत तुम्हार मरम मैं लीन्हा॥

मैं जानेउ तुम्ह मोही माहाँ।
देखौं ताकि तौ हौ सब पाहाँ ॥
का रानी, का चेरो कोई।
जा कहँ मया करहु भल सोई ॥

तुम्ह सौं कोइ न जीता हारे बररुचि भोज।
पहिले आपु जो खोवै करै तुम्हार सो खोज ॥११॥

---

[३]

राजा-सुआ-संवाद खण्ड

राजै कहा सत्य कहु सूआ।
बिनु सत जस सेंवर कर भूआ॥
होइ मुख रात सत्य के बाता।
जहाँ सत्य तहँ धरम सँघाता
बाँधी सिहिट अहै सत केरी।
लछिमी अहै सत्य कै चेरी
सत्य कहत राजा जिउ जाऊ।
पै मुख असत न भाखौं काऊ॥
पदमावति राजा कै बारी।
पदुम-गंध ससि बिधि औतारी॥
ससि मुख, अंग मलयगिरि रानी।
कनक सुगंध दुआदस बानी॥
अहै जो पदमिनि सिंघल माहाँ।
सुगँध रूप सब तिन्हकै छाहाँ॥
हीरामन हौं तेहिक परेवा।
कंठा फूट करत तेहि सेवा॥
औ पाएउँ मानुष कै भाषा।
नाहिं त पंखि मूठि भर पाँखा॥
जौ लहि जिऔं राति दिन सवँरौं ओहि कर नावँ।
मुख राता, तन हरियर दुहूँ जगत लेइ जावँ॥१२॥

हीरामन जो कवँल बखाना।
सुनि राजा होइ भँवर भुलाना॥

को राजा, कस दीप उतंगू।
जेहि रे सुनत मन भएउ पतंगू ॥
सुनि समुद्र भा चख किलकिला।
कवँलहि चहौं भँवर होइ मिला ॥
कहु सुगंध धनि कस निरमली।
भा अलि-संग, कि अबहीं कली ? ॥
का राजा हौं बरनौं तासू।
सिंघलदीप आहि कैलासू ॥
जो गा तहाँ भुलाना सोई।
गा जुग बीति न बहुरा कोई ॥
गंध्रबसेन तहाँ बड़ राजा।
अछरिन्ह महँ इंद्रासन साजा ॥
सो पदपावति तेहि कर बारी।
जो सब दीप माँह उजियारी ॥
चहूँ खंड के बर जा ओनाहीं।
गरबहि राजा बोलै नाहीं ॥

उअत सूर जस देखिय चाँद छपै तेहि धूप।
ऐसे सबै जाहिं छपि पदमावति के रूप ॥१३॥

सुनि रवि-नावँ रतन भा राता।
पंडित फेरि उहै कहु बाता ॥
तैं सुरंग मूरति वह कही।
चित महँ लागि चित्र होइ रही ॥
जनु होइ सुरुज आइ मन बसी।
सब घट पूरि हिये परगसी ॥

अब हौं सुरुज चाँद वह छाया ।
जल बिनु मीन, रकत बिनु काया ॥
पेम सुनत मन भूल न राजा ।
कठिन पेम, सिर देइ तौ छाजा ॥
पेम-फाँद जो परा न छूटा ।
जीउ दीन्ह पै फाँद न टूटा ॥
जान पुछार जो भा बनबासी ।
रोंव रोंव परे फँद नगवासी ॥
पाँखन्ह फिरि फिरि परा सो फाँदू ।
उड़ि न सकै अरुझा भा बाँदू ॥
'मुयों मुयों' अहनिसि चिल्लाई ।
ओही रोस नागन्ह धै खाई ॥

तीतिर-गिउ जो फाँद है निति पुकारै दोख ।
सो कित हँकारि फाँद गिउ (मेलै) कित मारे होइ मोख ॥१४॥

राजै लीन्ह ऊबि कै साँसा ।
ऐस बोल जिनि बोलु निरासा ॥
भलेहि पेम है कठिन दुहेला ।
दुइ जग तरा पेम जेइ खेला ॥
दुख भीतर जो पेम-मधु राखा ।
जग नहिं मरन सहै जो चाखा ॥
जो नहीं सीस पेम-पंथ लावा ।
सो प्रिथिमी महँ काहे क आवा ? ॥
अब मैं पेम-पन्थ सिर मेला ।
पाँव न ठेलु, राखि कै चेला ॥
पेम-बार सो कहै जो देखा ।
जो न देख, का जान विसेखा ? ॥

तौ लगि दुख पीतम नहिं भेंटा।
मिलै, तौ जाइ जनम-दुख मेटा॥

जस अनूप, तैं बरनेसि, नखसिख बरनु सिंगार।
है मोहिं आस मिलै कै जौं मेरवै करतार॥१५॥

---

(४) नखशिख-खण्ड

का सिंगार ओहि बरनौं, राजा।
ओहिक सिंगार ओही पै छाजा॥
प्रथम सीस कस्तूरी केसा।
बलि बासुकि, का और नरेसा?॥
भौंर केस, वह मालति रानी।
बिसहर लुरे लेहिं अरघानी॥
बेनी छोरि झार जौं बारा।
सरग पतार होइ अँधियारा॥
बरनौं माँग सीस उपराहीं।
सेंदुर अबहिं चढ़ा जेहि नाहीं॥
बिनु सेंदुर अस जानहु दीआ।
उजियर पँथ रैनि महँ कीआ॥
कँचन रेख कसौटी कसी।
जनु घन महँ दामिनि परगसी॥
सुरुज-किरिन जनु गगन बिसेखी।
जमुना माहँ सुरसती देखी॥
खाँड़ै धार रुहिर जनु भरा।
करवत लेइ बेनी पर धरा॥

कनक दुवादस बानि होइ चह सोहाग वह माँग।
सेवा करहिं नखत सब उवै गगन जस गाँग ॥१६॥

कहाँ लिलार दुइज कै जोती।
दुइजहि जोति कहाँ जग ओती ॥
सहस किरिन जो सुरुज दिपाई।
देखि लिलार सोउ छपि जाई ॥
का सरवरि तेहि देउँ मयंकू।
चाँद कलंकी, वह निकलंकू ॥
औ चाँदहि पुनि राहु गहासा।
वह बिनु राहु सदा परगासा ॥
तेहि लिलार पर तिलक बईठा।
दुइज-पाट जानहु ध्रुव दीठा ॥
भौंहैं स्याम धनुक जनु ताना।
जा सहुँ हेर मार विष बाना ॥
हनै धुनै उन्ह भौंहनि चढ़े।
केइ हतियार काल अस गढ़े ? ॥
उहै धनुक मैं तापहँ चीन्हा।
धानुक आप बेझ जग कीन्हा ॥
उन्ह भौंहनि सरि केउ न जीता।
अछरी छपीं, छपीं गोपीता ॥

भौंह धनुक, धनि धानुक, दूसर सरि न कराइ।
गगन धनुक जो ऊगै लाजहि सो छपि जाइ ॥ १७ ॥

नैन बाँक, सरि पूज न कोऊ।
मानसरोदक उलथहिं दोऊ ॥
राते कँवल करहिं अलि भवाँ।
घूमहिं माति चहहिं अपसवाँ ॥

उठहिं तुरंग लेहिं नहिं बागा।
चाहहिं उलथि गगन कहँ लागा ॥
समुद-हिलोर फिरहिं जनु भूले।
खंजन लरहिं, मिरिग जनु भूले ॥
बरुनी का बरनौं इमि बनी।
साधे बान जानु दुइ अनी ॥
जुरी राम रावन कै सैना।
बीच समुद्र भए दुइ नैना ॥
उन्ह बानन्ह अस को जो न मारा ?।
बेधि रहा सगरौ संसारा ॥
गगन नखत जो जाहिं न गने।
वै सब बान ओही के हने ॥
धरती बान बेधि सब राखी।
साखी ठाढ़ देहिं सब साखी ॥

बरुनि-बान अस ओपहँ बेधे रन बन-ढाँख।
सौजहिं तन सब रोवाँ पंखिहिं तन सब पाँख ॥१८॥

नासिक खरग देउँ कह जोगू।
खरग खीन, वह बदन-सँजोगू ॥
नासिक देखि लजानेउ सूआ।
सूक आइ बेसरि होइ ऊआ ॥
पुहुप सुगंध करहिं एहि आसा।
मकु हिरकाइ लेइ हम पासा ॥
अधर दसन पर नासिक सोभा।
दारिउँ बिंब देखि सुक लोभा ॥
खँजन दुहुँ दिसि केलि कराहीं।
दहुँ वह रस कोउ पाव कि नाहिं ॥

अधर सुरंग अमी - रस - भरे।
बिंब सुरंग लाजि बन फरे॥
हीरा लेइ सो विद्रुम-धारा।
बिहँसत जगत होइ उजियारा॥
अस कै अधर अमी भरि राखे।
अबहिं अछूत, न काहू चाखे॥
अमी अधर अस राजा सब जग आस करेइ।
केहि कहँ कवँल बिगासा को मधुकर रस लेइ ॥१६॥
दसन चौक बैठे जनु हीरा।
औ बिच बिच रँग श्याम गँभीरा॥
जस भादौं-निंसि दामिनि दीसी।
चमकि उठै तस बनी बतीसी॥
वह सुजोति हीरा उपराही।
हीरा-जोति सो तेहि परछाहीं॥
जेहि दिन दसनजोति निरमई।
बहुतै जोति जोति ओहि भई॥
रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती।
रतन पदारथ मानिक मोती॥
जहँ जहँ बिहँसि सुभावहि हँसी।
तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी॥
दामिनि दमकि न सरवरि पूजी।
पुनि ओह जोति और को दूजी॥
हँसत दसन अस चमके पाहन उठे छरकि।
दारिउँ सरि जो न कै सका, फाटेउ हिया दरकि ॥२०॥
रसना कहौं जो कह रस बाता।
अमृत-बैन सुनत मन राता॥

भरे प्रेम-रस बोलै बोला।
सुनै सो माति घूमि कै डोला॥
पुनि बरनौं का सुरँग कपोला।
एक नारँग दुइ किए अमोला॥
तेहि कपोल बाँए तिल परा।
जेइ तिल देख सो तिल तिल जरा॥
देखत नैन परी परछाहीं।
तेहि तें रात साम उपराहीं॥
स्रवन सीप दुइ दीप सँवारे।
कुंडल कनक रचे उजियारे॥
मनि-कुंडल झलकैं अति लोने।
जनु कौंधा लौकहि दुइ कोने॥
बरनौं गीउ कंबु कै रीसी।
कंचन-तार-लागि जनु सीसी॥
कुंदै फेरि जानु गिउ काढ़ी।
हरी पुछार ठगी जनु ठाढ़ी॥
गए मयूर तमचूर जो हारे।
उहै पुकारहिं साँझ सकारे॥

कंठसिरी मुकुतावली सोहै अभरन गीउ।
लागै कंठहार होइ को तप साधा जीउ? ॥२१॥

कनक-दंड दुइ भुजा कलाई।
जानौं फेरि कुँदेरै भाई॥
कदलि-गाभ कै जानौ जोरी।
औ राती ओहि कँवल-हथोरी॥
उतँग जँभीर होइ रखवारी।
छुइ को सकै राजा कै बारी॥

पेट परत जनु चंदन लावा।
कुहँ कुहँ केसर बरन सुहावा ॥
साम भुअंगिनि रोमावली।
नाभी निकसि कँवल कहँ चली ॥
आइ दुऔ नारँग बिच भई।
देखि मयूर ठमकि रहि गई ॥
मलयागिरि कै पीठि सँवारी।
बेनी नागिनि चढ़ी जो कारी ॥
लहरैं देति पीठि जनु चढ़ी।
चीर–ओहार केंचुली मढ़ी ॥
कारे कवँल गहे मुख देखा।
ससि पाछे जनु राहु बिसेखा ॥

पन्नग पंकज मुख गहे खंजन तहाँ बईठ।
छत्र, सिंघासन, राज, धन ताकहँ होइ जो डीठ ॥२२॥

लंक पुहुमि अस आहि न काहू।
केहरि कहौं न ओहि सरि ताहू ॥
बसा लंक बरनै जग झीनी।
तेहि तें अधिक लंक वह खीनी ॥
परिहँस पियर भए तेहि बसा।
लिए डंक लोगन्ह कहँ डसा ॥
मानहुँ नाल खंड दुइ भए।
दुहुँ बिच लंक-तार रहि गए ॥
नाभिकुंड सो मलय–समीरू।
समुद-भँवर जस भँवै गँभीरू ॥
जुरे जंघ सोभा अति पाए।
केरा-खंभ फेरि जनु लाए ॥

कवँल-चरन अति रात बिसेखी ।
रहै पाट पर, पुहुमि न देखी ॥
माथे भाग कोउ अस पावा ।
चरन-कवँल लेइ सीस चढ़ावा ॥
चूरा चाँद सुरुज उजियारा ।
पायल बीच करहिं झनकारा ॥
बरनि सिंगार न जानेउँ नख सिख जैस अभोग ।
तस जग किछुइ न पाएउँ उपमा देउँ ओहि जोग ॥२३॥

---

(५) प्रेम-खण्ड

सुनतहि राजा गा मुरछाई ।
जानौं लहरि सुरुज कै आई ॥
प्रेम-घाव-दुख जान न कोई ।
जेहि लागै जानै पै सोई ॥
परा सो पेम-समुद्र अपारा ।
लहरहिं लहर होइ बिसँभारा ॥
बिरह-भौंर होइ भाँवरि देई ।
खिन खिन जीउ हिलोरा लेई ॥
खिनहिं उसास बूड़ि जिउ जाई ।
खिनहिं उठै निसरै बौराई ॥
खिनहिं पीत, खिन होइ मुख सेता ।
खिनहिं चेत, खिन होइ अचेता ॥
कठिन मरन तें प्रेम-बेवस्था ।
ना जिउ जियै, न दसवँ अवस्था ॥
जनु लेनिहार न लेहिं जिउ हरहिं तरासहिं ताहि ।
एतनै बोल आव मुख करैं "तराहि तराहि" ॥ २४ ॥

जब भा चेत उठा बैरागा।
बाउर जनौं सोइ उठि जागा॥
आवत जग बालक जस रोआ।
उठा रोइ 'हा ज्ञान सो खोआ'॥
हौं तो अहा अमरपुर जहाँ।
इहाँ मरनपुर आएउँ कहाँ?॥
अब जिउ उहाँ, इहाँ तन सूना।
कब लगि रहै परान-बिहूना॥
सुऐ कहा मन बूझहु राजा।
करब पिरीति कठिन है काजा॥
तुम राजा जेइँ घर पोई।
कवँल न भेंटेउ, भेंटेउ कोई॥
जानहिं भौंर जो तेहि पथ लूटे।
जीउ दीन्ह औ दिएहु न छूटे॥
कठिन आहि सिंघल कर राजू।
पाइय नाहिं जूझ कर साजू॥
ओहि पथ जाइ जो होइ उदासी।
जोगी, जती, तपा, सन्यासी॥
भोग किए जौं पावत भोगू।
तजि सो भोग कोइ करत न जोगू॥
तुम राजा चाहहु सुख पावा।
भोगिहि जोग करत नहिं भावा॥

साधन्ह सिद्धि न पाइय जौ लगि सधै न तप्प।
सो पै जानै बापुरा करै जो सीस कलप्प॥ २५॥

का भा जोग-कथनि के कथे।
निकसै घिउ न बिना दधि मथे॥

जौ लहि आप हेराइ न कोई।
तो लहि हेरत पाव न सोई ॥
पंथ सूरि कर उठा अँकूरू।
चोर चढ़ै, की चढ़ मंसूरू ॥
सुनि सो बात राजा मन जागा।
पलक न मार, पेम चित लागा ॥
हिय कै जोति दीप वह सूझा।
यह जो दीप अँधियारा बूझा ॥
गुरू बिरह–चिनगी जो मेला।
जो सुलगाइ लेइ सो चेला ॥
अब करि फनिग भृंग कै करा।
भौंर होहुँ जेहि कारन जरा ॥

फूल फूल फिरि पूँछौं जौ पहुँचौं ओहि केत।
तन नेवछावरि कै मिलौं ज्यों मधुकर जिउ देत ॥ २६ ॥

बंधु मीत बहुतै समुझावा।
मान न राजा कोउ भुलावा ॥
उपजी पेम–पीर जेहि आई।
परबोधत होइ अधिक सो आई ॥

---

(६) जोगी-खण्ड

तजा राज, राजा भा जोगी।
औ किंगरी कर गहेउ बियोगी ॥
तन बिसँभर, मन बाउर लटा।
अरुझा पेम, परी सिर जटा ॥

चँद्र-बदन औ चंदन-देहा ।
भसम चढ़ाइ कीन्ह तन खेहा ॥
कंथा पहिरि दंड कर गहा ।
सिद्ध होइ कहँ गोरख कहा ॥
मुद्रा स्रवन, कंठ जपमाला ।
कर उदपान, काँध बघछाला ॥
चला भुगुति माँगै कहँ साधि कया तप जोग ।
सिद्ध होइ पदमावति जेहि कर हिये बियोग ॥२७॥

गनक कहहिं गनि गौन न आजू ।
दिन लेइ चलहु, होइ सिध काजू ॥
पेम-पंथ दिन घरी न देखा ।
तब देखै जब होइ सरेखा ॥
चहुँ दिसि आन साँटिया फेरी ।
भै कटकाई राजा केरी ॥
रोवत माय, न बहुरत बारा ।
रतन चला, घर भा अँधियारा ॥
रोवहिं रानी, तजहिं पराना ।
नोचहिं बार, करहिं खरिहाना ॥
चूरहिं गिउ-अभरन, उर-हारा ।
अब का पर हम करब सिंगारा ?॥
जा कहँ कहहिं रहसि कै पीऊ ।
सोइ चला, काकर यह जीऊ ॥
टूटे मन नौ मोती फूटे मन दस काँच ।
लीन्ह समेटि सब अभरन होइगा दुख कर नाच ॥२८॥

निकसा राजा सिंगी पूरी ।
छाँड़ा नगर मेलि कै धूरी ॥

राय रान सब भए बियोगी।
सोरह सहस कुँवर भए जोगी॥
कहेन्हि आज किछु थोर पयाना।
काल्हि पयान दूरि है जाना॥
ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई।
तब हम कहब पुरुष भल सोई॥
है आगे परबत कै बाटा।
बिषम पहार अगम सुठि घाटा॥
बिच बिच नदी खोह औ नारा।
ठावहिं ठाँव बैठ बटपारा॥
अस मन जानि संभारहु आगू।
अगुआ केर होहु पछलागू॥

करहिं पयान भोर उठि पंथ कोस दस जाहिं।
पंथी पंथा जे चलहिं ते का रहहिं ओ ठाहिं॥२६॥

होत पयान जाइ दिन केरा।
मिरिगारन महँ भएउ बसेरा॥
कुस-साँथरि भइ सौंर सुपेती।
करवट आइ बनी भुइँ सेंती॥
चलि दस कोस ओस तन भीजा।
काया मिलि तेहिं भसम मलीजा॥
ठाँव ठाँव सब सोअहिं चेला।
राजा जागै आपु अकेला॥
जेहि के हिये पेम-रँग जामा।
का तेहि भूख नींद बिसरामा॥
बन अँधियार, रैनि अँधियारी।
भादों बिरह भएउ अति भारी॥

किंगरी हाथ गहे बैरागी ।
पाँच तंतु धुनि ओही लागी ॥

नैन लाग तेहि मारग पदमावति जेहि दीप ।
जैस सेवातिहि सेवै बन चातक, जल सीप ॥३०॥

---

(७) सात समुद्र-खण्ड

मासेक लाग चलत तेहि बाटा ।
उतरे जाइ समुद के घाटा ॥
रतनसेन भा जोगी–जती ।
सुनि भेंटै आवा गजपती ॥
आए भलेहि, मया अब कीजै ।
पहुनाई कहँ आयसु दीजै ॥
सुनहु गजपती उतर हमारा ।
हम तुम्ह एकै, भाव निरारा ॥
इहै बहुत जौ बोहित पावौं ।
तुम्ह तैं सिंघलदीप सिधावौं ॥
गजपति कहा सीस पर माँगा ।
बोहित नाव न होइहि खाँगा ॥
पै गोसाईं सन एक बिनाती ।
मारग कठिन जाब केहि भाँती ॥

खार, खीर, दधि, जल उदधि, सुर किलकिला अकूत ।
को चढ़ि नाँघै समुद्र ए, है काकर अस बूत ? ॥३१॥

गजपति यह मन सकती–सीऊ ।
पै जैहि पेम कहाँ तेहि जीऊ ॥

जो पहिले सिर दै पगु धरई।
मूए केर मीचु का करई ? ॥
सुख त्यागा, दुख साँभर लीन्हा।
तब पयान सिंघल-मुहँ कीन्हा ॥
भौंरा जांन कवँल कै प्रीती।
जेहि पहँ बिथा पेम कै बीती ॥
औ जेइ समुद पेम कर देखा।
तेइ एहि समुद बूँद करि लेखा ॥
जौ पै जीउ बाँध सत बेरा।
बरु जिउ जाइ फिरै नहिं फेरा ॥
जेहि कारन गिउ काथरि कंथा।
जहाँ सो मिलै जावँ तेहि पंथा ॥

सरग सीस, धर धरतो, हिया सो पेम-समुंद।
नैन कौड़िया होइ रहे, लेइ लेइ उठहिं सो बुंद ॥ ३२ ॥

सो न डोल देखा गजपती।
राजा सत्त दत्त दुहुँ सती ॥
निहचै चला भरम जिउ खोई।
साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई ॥
निहचै चला छाँड़ि कै राजू।
बोहित दीन्ह, दीन्ह सब साजू ॥
चढ़ा बेगि, तब बोहित पेले।
धनि सो पुरुष पेम जेइ खेले ॥
पेम-पंथ जौं पहुँचै पारा।
बहुरि न मिलै आइ एहि छारा ॥
धावहिं बोहित मन उपराहीं।
सहस कोस एक पल महँ जाहीं ॥

समुद अपार सरग जनु लागा।
सरग न घाल गनै बैरागा॥

दस महँ एक जाइ कोइ-करम, धरम, तप, नेम।
बोहित पार होइ जब तबहि कुसल औ खेम॥३३॥

खार समुद सो नाँघा आए समुद जहँ खीर।
मिले समुद वै सातौ बेहर बेहर नीर॥३४॥

पुनि किलकिला समुद महँ आए।
गा धीरज, देखत डर खाए॥
भा किलकिल अस उठै हिलोरा।
जनु अकास टूटै चहुँ ओरा॥
उठै लहरि परबत कै नाईं।
फिरि आवै जोजन सौ ताईं॥
धरती लेइ सरग लहि बाढ़ा।
सकल समुद जानहुँ भा ठाढ़ा॥
हीरामन राजा सौं बोला।
एही समुद आए सत डोला॥
सिंघलदीप जो नाहिं निबाहू।
एही ठावँ साँकर सब काहू॥
एहि किलकिला समुद गँभीरू।
जेहि गुन होइ सो पावै तीरू॥

मरन जियन एही पथहि एही आस निरास।
परा सो गएउ पतारहि, तरा सो गा कैलास॥३५॥

कान समुद धँसि लीन्हेसि भा पाछे सब कोइ।
कोइ काहू न सँभारै आपनि आपनि होइ॥३६॥

कोइ दिन मिला सबेरे, कोइ आवा पछ-राति।
जा कर जस जस साजु हुत सो उतरा तेहि भाँति॥३७॥

सतएँ समुद मानसर आए।
मन जो कीन्ह साहस, सिधि पाए॥
देखि मानसर रूप सोहावा।
हिय हुलास पुरइनि होइ छावा॥
गा अँधियार, रैनि-मसि छूटी।
भा भिनसार किरिन-रवि फूटी॥
'अस्ति अस्ति' सब साथी बोले।
अंध जो अहे नैन बिधि खोले॥
कवँल बिगस तस बिहँसी देहीं।
भौंर दसन होइ कै रस लेहीं॥
हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा।
चुनहिं रतन मुकुताहल हीरा॥
जो अस आव साधि तप जोगू।
पूजै आस, मान रस भोगू॥

भौंर जो मनसा मानसर लीन्ह कँवलरस आइ।
घुन जो हियाव न कै सका झूर काठ तस खाइ॥३८॥

---

(८) सिंहलद्वीप-खण्ड

पूछा राजै कहु गुरु सूआ।
न जनौं आजु कहाँ दहुँ ऊआ॥
पौन बास सीतल लेइ आवा।
कया दहत चंदनु जनु लावा॥
कबहुँ न ऐस जुड़ान सरीरू।
परा अगिन महँ मलय-समीरू॥

निकसत आव किरिन-रविरेखा।
तिमिर गए निरमल जग देखा॥
तूँ राजा जस बिकरम आदी।
तू हरिचंद बैन सतबादी॥
गोपिचंद तुइ जीता जोगू।
औ भरथरी न पूज बियोगू॥
जीत पेम तुइँ भूमि अकासू।
दीठि परा सिंघल-कैलासू॥
गगन सरोवर, ससि-कँवल कुमुद-तराइन्ह पास।
तू रवि ऊआ, भौंर होइ पौन मिला लेइ बास॥३६॥

सो गढ़ देखु गगन तें ऊँचा।
नैनन्ह देखा, कर न पहूँचा॥
बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी।
औ जमकात फिरै जम केरी॥
धाइ जो बाजा कै मन साधा।
मारा चक्र भएउ दुइ आधा॥
चाँद सुरुज औ नखत तराईं।
तेहि डर अँतरिख फिरहिं सबाईं॥
पौन जाइ तहँ पहुँचै चहा।
मारा तैस लोटि भुइँ रहा॥
अगिनि उठी, जरि बुझी निआना।
धुआँ उठा, उठि बीच बिलाना॥
पानि उठा, उठि जाइ न छूआ।
बहुरा रोइ, आइ भुइँ चूआ।
रावन चहा सौंह होइ उतरि गए दस माथ।
संकर धरा लिलाट भुइँ, और को जोगीनाथ? ॥४०॥

तहाँ देखु पद्मावति रामा।
भौंर न जाइ, न पंखी नामा॥
कंचन-मेरु देखाव सो जहाँ।
महादेव कर मंडप तहाँ॥
माघ मास, पाछिल पछ लागे।
सिरी-पंचमी होइहि आगे॥
उघरिहि महादेव कर बारू।
पूजिहि जाइ सकल संसारू॥
पद्मावति पुनि पूजै आवा।
होइहि एहि मिस दीठि-मेरावा॥

तुम्ह गौनहु ओहि मंडप, हौं पद्मावति पास।
पूजै आइ बसंत जब तब पूजै मन-आस॥४१॥

(१) पद्मावती–वियोग-खण्ड

पद्मावति तेहि जोग सँजोगा।
परी पेम-बस गहे बियोगा।
नींद न परै रैनि जौं आवा।
सेज केंवाच जानु कोइ लावा।
दहै चंद औ चंदन चीरू।
दगध करै तन बिरह गँभीरू।
कलप समान रैनि तेहि बाढ़ी।
तिलतिल भर जुग जुग जिमि गाढ़ी।
गहै बीन मकु रैनि बिहाई।
ससि–बाहन तहँ रहै ओनाई।
पुनि धनि सिंघ उरेहै लागै।
ऐसिहि बिथा रैनि सब जागै।
कहँ वह भौंर कँवल रस–लेवा।
आइ परै होइ घिरिन परेवा।

से धनि बिरह–पतंग भइ, जरा चहै तेहि दीप।
कंत न आव भिरिंग होइ, का चंदन तन लीप ? ॥१॥

परी बिरह बन जानहुँ घेरी।
अगम असूझ जहाँ लगि हेरी।
चतुर दिसा चितवै जनु भूली।
सो बन कहँ जहँ मालति फूली ?।
कँवल भौंर ओही बन पावै।
को मिलाइ तन–तपनि बुझावै ?।

अंग अंग अस कँवल सरीरा।
हिय भा पियर कहै पर-पीरा ॥
चहै दरस, रबि कीन्ह बिगासू।
भौंर-दीठि मनो लागि अकासू ॥
पूँछै धाय, बारि ! कहु बाता।
तुइँ जस कवँल फूल रँग राता ॥
केसर बरन हिया भा तोरा।
मानहुँ मनहिं भएउ किछु भोरा ॥
पौन न पावै संचरै, भौंर न तहाँ बईठ।
भूलि कुरंगिन कस भई, जानु सिंघ तुइँ डीठ ॥ २ ॥
धाय ! सिंघ बरु खातेउ मारी।
की तसि रहति अही जसि बारी ॥
जोबन सुनेउँ कि नवल बसंतू।
तेहि बन परेउ हस्ति मैमंतू ॥
अब जोबन-बारी को राखा।
कुँजर-बिरह बिधंसै साखा ॥
पदमावति ! तुइँ समुद सयानी।
तोहि सरि समुद न पूजै, रानी ॥
नदी समाहिं समुद महँ आई।
समुद डोलि कहु कहाँ समाई ? ॥
अबहीं कवँल-करी हिय तोरा।
आइहि भौंर जो तो कहँ जोरा ॥
अबहिं बारि तुइँ पेम न खेला।
का जानसि कस होइ दुहेला ॥
जब लगि पीउ मिलै नहिं साधु पेम कै पीर।
जैसे सीप सेवाति कहँ तपै समुद मँझ नीर ॥ ३ ॥

(२) पदमावती-सुआ-भेंट-खण्ड

तेहि बियोग हीरामन आवा।
पदमावति जानहुँ जिउ पावा॥
कंठ लाइ सूआ सौं रोई।
अधिक मोह जौं मिलै बिछोई॥
आगि उठे दुख हिये गँभीरू।
नैनहिं आइ चुवा होइ नीरू॥
रही रोइ जब पदमिनि रानी।
हँसि पूछहिं सब सखी सयानी॥
मिले रहस भा चाहिय दूना।
कित रोइय जौं मिलै बिछूना?॥
तेहि क उतर पदमावति कहा।
बिछुरन-दुख जो हिये भरि रहा॥
मिलत हिये आएउ सुख भरा।
वह दुख नैन-नीर होइ ढरा॥

बिछुरंता जब भेंटै सो जानै जेहि नेह।
सुक्ख सुहेला उग्गवै दुःख झरै जिमि मेह॥ ४॥

पुनि रानी हँसि कूसल पूछा।
कित गवनेहु पींजर कै छूँछा॥
रानी तुम्ह जुग जुग सुख पाटू।
छाज न पंखिहि पींजर-ठाटू॥
जब भा पंख कहाँ थिर रहना।
चाहै उड़ा पंखि जौं डहना॥
पींजर महँ जो परेवा घेरा।
आइ मजारि कीन्ह तहँ फेरा॥

दिन एक आइ हाथ पै मेला।
तेहि डर बनोबास कहँ खेला ॥
तहाँ बियाध आइ नर साधा।
छूटि न पाव मीचु कर बाँधा ॥
वै धरि बेचा बाम्हन हाथा।
जंबूदीप गएउँ तेहि साथा ॥
तहाँ चित्र चितउरगढ़ चित्रसेन कर राज।
टीका दीन्ह पुत्र कहँ, आपु लीन्ह सिव साज ॥ ५ ॥
बैठ जो राज पिता के ठाऊँ।
राजा रतनसेन ओहि नाऊँ ॥
लछन बतीसौ कुल निरमला।
बरनि न जाइ रूप औ कला ॥
वै हौं लीन्ह, अहा अस भागू।
चाहै सोने मिला सोहागू ॥
सो नग देखि हींछा भइ मोरी।
है यह रतन पदारथ जोरी ॥
है ससि जोग इहै पै भानू।
तहाँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू ॥
सुनत बिरह-चिनगी ओहि परी।
रतन पाव जौं कंचन-करी ॥
कठिन पेम बिरहा दुख भारी।
राज छाँड़ि भा जोगि भिखारी ॥
तुम्ह बारी रस जोग जेहि, कँवलहि जस अरघानि।
तस सूरुज परगास कै भौंर मिलाएउँ आनि ॥ ६ ॥
हीरामन जो कही यह बाता।
सुनिकै रतन पदारथ राता ॥

जस सूरुज देखे होइ ओपा।
तस भा बिरह, कामदल कोपा॥
सुनि कै जोगी केर बखानू।
पद्मावति मन भी अभिमानू॥
कंचन करी न काँचहिं लोभा।
जौं नग होइ पाव तब सोभा॥
कंचन जौं कसिए कै ताता।
तब जानिय दहुँ पीत कि राता॥
नग कर मरम सो जड़िया जना।
जड़ै जो अस नग देखि बखाना॥
को अब हाथ सिंघ मुख घालै।
को यह बात पिता सौं चालै॥

सरग इंद्र डरि काँपै बासुकि डरै पतार।
कहाँ सो अस बर प्रिथिमी मोहिं जोग संसार॥ ७॥

तू रानी ससि कंचन-करा।
वह नग रतन सूर निरमरा॥
बिरह-बजागि बीच का कोई।
आगि जो छुवै जाइ जरि सोई॥
आगि बुझाइ परे जल गाढ़ै।
वह न बुझाइ आपु ही बाढ़ै॥
बिरह के आगि सूर जरि काँपा।
रातिहि दिवस जरै ओहि तापा॥
सुनि कै धनि, 'जारी अस कया'।
तव भा मयन, हिये भै मया॥
देखौं जाइ जरै कस भानू।
कंचन जरे अधिक होइ बानू॥

जौं वह जोग सँभारै छाला ।
पाइहि भुगुति, देहुँ जयमाला ॥

कवँल-भँवर तुम्ह बरना मैं माना पुनि सोइ ।
चाँद सूर कहँ चाहिय जौं रे सूर वह होइ ॥ ८ ॥

हीरामन जो सुना रस-बाता ।
पावा पान भएउ मुख राता ॥
चला सुआ, रानी तब कहा ।
भा जो परावा कैसे रहा ? ॥
जो निति चलै सँवारै पाँखा ।
आजु जो रहा, काल्हि को राखा ?॥
न जनौं आजु कहाँ दहुँ ऊआ ।
आएहु मिलै, चलेहु मिलि, सूआ ॥
मिलि कै बिछुर मरन कै आना ।
कित आएहु जौं चलेहु निदाना ?॥
सुनु रानी हौं रहतेउँ राधा ।
कैसे रहौं बचन कर बाँधा ॥
ता करि दिस्टि ऐसि तुम्ह सेवा ।
जैसे कुंज मन रहै परेवा ॥

बसै मीन जल धरती अंबा बसै अकास ।
जौं पिरीत पै दुवौ महँ अंत होहिं एक पास ॥ ९ ॥

आवा सुआ बैठ जहँ जोगी ।
मारग नैन, बियोग बियोगी ॥
आइ पेम-रस कहा सँदेसा ।
गोरख मिला, मिला उपदेसा ॥
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा ।
कीन्ह अदेस, आदि कहि दीन्हा ॥

सबद, एक उन्ह कहा अकेला।
गुरु जस भिंग, फनिग जस चेला॥
भिंगी ओहि पाँखि पै लेई।
एकहि बार छीनि जिउ देई॥
ताकहँ गुरू करै असि माया।
नव औतार देइ, नव काया॥
होइ अमर जो मरि कै जीया।
भौंर कवँल मिलि कै मधु पीया॥
आवै ऋतू बसंत जब तब मधुकर, तब बासु।
जोगी जोग जो इमि करै सिद्धि समापत तासु॥१०॥

---

(३) बसंत-खण्ड

दैउ दैउ कै सो ऋतु गँवाई।
सिरी-पंचमी पहुँची आई॥
भएउ हुलास नवल ऋतु माहाँ।
खिन न सोहाइ धूप औ छाहाँ॥
पदमावति सब सखी हँकारी।
जावत सिंघलदीप कै बारी॥
आजु बसंत नवल ऋतुराजा।
पंचमि होइ, जगत सब साजा॥
नवल सिंगार बनस्पति कीन्हा।
सीस परासहि सेंदुर दीन्हा॥
बिगसि फूल फूले बहु बासा।
भौंर आइ लुबुधे चहुँ पासा॥
पियर-पात-दुख झरे निपाते।
सुख-पल्लव उपने होइ राते॥

अवधि आइ सो पूजी जो हींछा मन कीन्ह।
चलहु देवमढ़ गोहने चहहुँ सो पूजा दीन्ह ॥११॥

कवँल सहाय चलीं फुलवारी।
फर फूलन सब करहिं धमारी॥
आपु आपु महँ करहिं जोहारू।
यह बसंत सब कर तिवहारू॥
चहै मनोरा झूमक होई।
फर औ फूल लिएउ सब कोई॥
फागु खेलि पुनि दाहब होरी।
सैंतब खेह, उड़ाउब झोरी॥
आजु साज पुनि दिवस न दूजा।
खेलि बसंत लेहु कै पूजा॥
भा आयसु पदमावति केरा।
बहुरि न आइ करब हम फेरा॥
तस हम कहँ होइहि रखवारी।
पुनि हम कहाँ, कहाँ यह बारी॥

पुनि रे चलब घर आपने पूजि बिसेसर-देव।
जेहि काहुहि होइ खेलना आजु खेलि हँसि लेव ॥१२॥

काहू गही आँब कै डारा।
काहू जाँबु बिरह अति झारा॥
पुनि बीनहिं सब फूल सहेली।
खोजहिं आस-पास सब बेली॥
फर फूलन्ह सब डार ओढ़ाई।
झुंड बाँधि कै पंचम गाई॥
बाजहिं ढोल दुंदुभी भेरी।
मादर, तूर, झाँझ चहुँ फेरी॥

और कहिय जो बाजन भले।
भाँति भाँति सब बाजत चले॥
नवल बसंत, नवल सब बारी।
सेंदुर बुक्का होइ धमारी॥
खिनहिं चलहिं, खिन चाँचरि होई।
नाच कूद भूला सब कोई॥
सेंदुर-खेह उड़ा अस, गगन भएउ सब रात।
राती सगरिउ धरती, राते बिरिछन्ह पात॥१३॥

एहि बिधि खेलति सिंघलरानी।
महादेव-मढ़ जाइ तुलानी॥
पदमावति गै देव-दुवारा।
भीतर मँडप कीन्ह पैसारा॥
एक जोहार कीन्ह औ दूजा।
तिसरे आइ चढ़ाएसि पूजा॥
फर फूलन्ह सब मँडप भरावा।
चंदन अगर देव नहवावा॥
लेइ सेंदुर आगे भै खरी।
परसि देव पुनि पायन्ह परी॥
और सहेली सबै बियाहीं।
मो कहँ देव! कतहुँ बर नाहीं॥
हौं निरगुन जेइ कीन्ह न सेवा।
गुनि निरगुनि दाता तुम्ह, देवा॥
बर सौं जोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।
जेहि दिन हीछाँ पूजै बेगि चढ़ावहुँ आनि॥१४॥

ततखन एक सखी बिहँसानी।
कौतुक आइ न देखहु रानी॥

पुरुब द्वार मढ़ जोगी छाए।
न जनौं कौन देस तें आए॥
जनु उन्ह जोग तंत तन खेला।
सिद्ध होइ निसरे सब चेला॥
उन्ह महँ एक गुरू जो कहावा।
जनु गुड़ देइ काहू बौरावा॥
कुँवर बतीसौ लच्छन राता।
दसएँ लछन कहै एक बाता॥
जानौं आहि गोपिचँद जोगी।
की सो आहि भरथरी बियोगी॥
वै पिंगला गए कजरी-आरन।
ए सिंघल आए केहि कारन ?॥

यह मूरति, यह मुद्रा हम न देख अवधूत।
जानौं होहि न जोगी कोइ राजा कर पूत॥१५॥

सुनि सो बात रानी रथ चढ़ी।
कहँ अस जोगी देखौं मढ़ी॥
लेइ सँग सखी कीन्ह तहँ फेरा।
जोगिन्ह आइ अपछरन्ह घेरा॥
नयन कचोर पेम-मद-भरे।
भइ सुदिस्टि जोगी सहुँ ढरे॥
जोगी दिस्टि दिस्टि सौं लीन्हा।
नैन रोपि नैनहिं जिउ दीन्हा॥
जेहि मद चढ़ा परा तेहि पाले।
सुधि न रही ओहि एक पियाले॥
परा माति गोरख कर चेला।
जिउतन छाँड़ि सरग कहँ खेला॥

किंगरी गहे जो हुत बैरागी।
मरतिहु बार उहै धुनि लागी॥
जेहि धंधा (जाकर) मन लागै सपनेहु सूझ सों धंध।
तेहि कारन (तपसी) तप साधहिं, करहिं पेम मन बंध ॥१६॥

पद्मावति जस सुना बखानू।
सहस-करा देखेसि तस भानू॥
मेलेसि चंदन मकु खिन जागा।
अधिकौ सूत, सीर तन लागा॥
तब चंदन आखर हिय लिखे।
भीख लेइ तुइँ जोग न सिखे॥
घरी आइ तब गा तूँ सोई।
कैसे भुगुति परापति होई ?॥
अब जौं सूर अहौ ससि राता।
आएहु चढ़ि सो गगन पुनि साता॥
कीन्ह पयान सबन्ह रथ हाँका।
परबत छाँड़ि सिंघलगढ़ ताका॥
बलि भए सबै देवता बली।
हत्यारिन हत्या लेइ चली॥
परी कया भुइँ लोटै, कहाँ रे जिउ बलि भीउँ।
को उठाइ बैठारै बाज पियारे जीउ ॥१७॥

---

(४) राजा-रत्नसेन सती-खण्ड

कै बसंत पद्मावति गई।
राजहि तब बसंत सुधि भई॥

जो जागा न बसंत न बारी।
ना वह खेल, न खेलनहारी॥
ना वह ओहि कर रूप सुहाई।
गै हेराई, पुनि दिस्टि न आई॥
फूल झरे सूखी फुलवारी।
दीठि परी उकठी सब बारी॥
केइ यह बसत बसंत उजारा?।
गा सो चाँद, अथवा लेइ तारा॥
बिरह-दवा को जरत सिरावा?।
को पीतम सौं करै मेरावा?॥
जस बिछोह जल मीन दुहेला।
जल हुँत काढ़ि अगिन महँ मेला॥
चंदन-आँक दाग हिय परे।
बुझहिं न ते आखर परजरे॥
आइ बसंत जो छपि रहा होइ फूलन्ह के भेस।
केहि बिधि पावौं भौंर होइ कौन गुरू-उपदेस॥१८॥
रोवै रतन-माल जनु चूरा।
जहँ होइ ठाढ़, होइ तहँ कूरा॥
कहाँ सो मूरति परी जो डीठी।
काढ़ि लिहेसि जिउ हिये पईठी॥
अरे मलिछ बिसवासी देवा।
कित मैं आइ कीन्ह तोरि सेवा॥
सुफल लागि पग टेकेउँ तोरा।
सुआ क सेंवर तू भा मोरा॥
पाहन चढ़ि जो चहै भा पारा।
सो ऐसे बूढ़ै मझ धारा॥

पाहन सेवा कहाँ पसीजा ?।
जनम न ओद होइ जौ भीजा ॥
बाउर सोइ जो पाहन पूजा।
सकत को भारलेइ सिर दूजा ? ॥
सिंघ तरेंदा जेई गहा पार भए तेहि साथ।
ते पै बूड़े बाउरे भेंड-पूँछि जिन्ह हाथ ॥१६॥
आनहिं दोस देहुँ का काहू।
संगी कया मया नहिं ताहू ॥
हता पियारा मीत बिछोई।
साथ न लाग आपु गै सोई ॥
का मैं कीन्ह जो काया पोषी।
दूषन मोहिं, आप निरदोषी ॥
फागु वसंत खेलि गई गोरी।
मोहि तन लाइ बिरह कै होरी ॥
अब अस कहाँ छार सिर मेलौं ?।
छार जो होहुँ फाग तब खेलौं ॥
कित तप कीन्ह छाँड़ि कै राजू।
गएउ अहार न भा सिध काजू ॥
पाएउँ नहिं होइ जोगी जती।
अब सर चढ़ौं जरौं जस सती ॥
आइ जो पीतम फिरि गा मिला न आइ बसंत।
अब तन होरी घालि कै जारि करौं भसमंत ॥२०॥
हनुवँत बीर लंक जेहि जारी।
परबत उहै अहा रखवारी ॥
बैठि तहाँ होइ लंका ताका।
छठएँ मास देइ उठि हाँका ॥

तेहि कै आगि उहौ पुनि जरा।
लंका छाँड़ि पलंका परा॥
जाइ तहाँ वै कहा सँदेसू।
पारबती औ जहाँ महेसू॥
जोगी आहि बियोगी कोई।
तुम्हरे मँडप आगि तेइ बोई॥
जरा लँगूर सुराता उहाँ।
निकसि जो भागि भएउँ करमुहाँ॥
तेहि बज्रागि जरै हौं लागा।
बजरअंग जरतहि उठि भागा॥

रावन लंका हौं दही, वह हौं दाहै आव।
गए पहार सब औटि कै, को राखै गहि पाव ? ॥२१॥

---

(५) पार्वती-महेश-खण्ड

ततखन पहुँचे आइ महेसू।
बाहन बैल, कुस्टि कर भेसू॥
सेसनाग जाके कँठमाला।
तनु भभूति, हस्ती कर छाला॥
पहुँची रुद्र-कवँल कै गटा।
ससि माथे औ सुरसरि जटा॥
चँवर, घंट औ डँवरू हाथा।
गौरा पारबती धनि साथा॥

अवतहि कहेन्हि न लावहु आगी।
तेहि कै सपथ जरहु जेहि लागी ॥
जरै देहु, दुख जरौं अपारा।
निस्तर पाइ जाउँ एक बारा ॥
तैं यह जिउ डाढ़े पर दाधा।
आधा निकसि रहा, घट आधा ॥
जो अजधर सो बिलँब न लावा।
करत बिलंब बहुत दुख पावा ॥

एतना बोल कहत मुख उठी बिरह कै आगि।
जौं महेस न बुझावत जाति सकल जग लागि ॥२२॥

पारबती मन उपना चाऊ।
देखौं कुँवर केर सत भाऊ ॥
ओहि एहि बीच, कि पेमहि पूजा।
तन मन एक, कि मारग दूजा ॥
भइ सुरूप जानहुँ अपछरा।
बिहँसि कुँवर कर आँचर धरा ॥
सुनहु कुँवर मो सौं एक बाता।
जस मोहिं रंग न औरहि राता ॥
औ बिधि रूप दीन्ह है तोका।
उठा सो सबद जाइ सिव-लोका ॥
तब हौं तोपहँ इंद्र पठाई।
गइ पदमिनि, तैं अछरी पाई ॥
अब तजु जरन, मरन, तप, जोगू।
मोसौं मानु जनम भरि भोगू ॥

हौं अछरी कैलास कै जेहि सरि पूज न कोइ।
मोहिं तजि सँवरि जो ओहि मरसि, कौन लाभ तोहि होइ? ॥२३॥

भलेहिं रंग अछरी तोर राता।
मोहिं दुसरे सौं भाव न बाता॥
मोहि ओहि सँवरि मुए तस लाहा।
नैन जो देखसि पूछसि काहा?॥
अबहिं ताहि जिउ देइ न पावा।
तोहि असि अछरी ठाढ़ि मनावा॥
जौं जिउ देइहौं ओहि कै आसा।
न जनौं काह होइ कैलासा॥
गौरइ हँसि महेस सौं कहा।
निहचै एहि बिरहानल दहा॥
निहचै यह ओहि कारन तपा।
परिमल पेम न आछै छपा॥
एहू कहँ तस मया करेहू।
पुरवहु आस, कि हत्या लेहू॥

तस रोवै जस जिउ जरै गिरै रकत औ माँसु।
रोवँ रोवँ सब रोवहिं सूत सूत भरि आँसु॥२४॥

रोवत बूड़ि उठा संसारू।
महादेव तब भएउ मयारू॥
अब तैं सिद्ध भएसि सिधि पाई।
दरपन-कया छूटि गइ काई॥
गढ़ तस बाँक जैसि तोरि काया।
पुरुष देखु ओही कै छाया॥
पाइय नाहिं जूझ हठि कीन्हे।
जेइ पावा तेइ आपुहि चीन्हे॥
नौ पौरी तेहि गढ़ मझियारा।
औ तहँ फिरहिं पाँच कोटवारा॥

(१) राजा-गढ़ छेंका-खण्ड

सिधि-गुटिका राजै जब पावा ।
पुनि भइ सिद्धि गनेस मनावा ॥
जब संकर सिधि दीन्ह गुटेका ।
परी हूल, जोगिन्ह गढ़ छेंका ॥
पौरि पौरि गढ़ लाग केवारा ।
औ राजा सौं भई पुकारा ॥
जोगी आइ छेंकि गढ़ मेला ।
न जनौं कौन देस तें खेला ॥

भएउ रजायसु देखौ को भिखारि अस ढीठ ।
बेगि बरजि तेहि आवहु जन दुइ पठैं बसीठ ॥१॥

उतरि बसीठन्ह आइ जोहारे ।
"की तुम जोगी, की बनिजारे ॥
भएउ-रजायसु आगे खेलहिं ।
गढ़ तर छाँड़ि अनत होइ मेलहिं ॥
इहाँ इंद्र अस राजा तपा ।
जबहिं रिसाइ सूर डरि छपा ॥
हौ जोगी तौ जुगुति सौं माँगौ ।
भुगुति लेहु, लै मारग लागौ ॥"
'आनु जो भीखि हौं आएउँ लेई ।
कस न लेंउँ जौं राजा देई ॥

पद्मावति राजा कै बारी ।
हौं जोगी ओहि लागि भिखारी ॥
खप्पर लेइ बार भा माँगौं ।
भुगुति देइ, लेइ मारग लागौं ॥

जोगी बार आव सो जेहि भिच्छा कै आस ।
जो निरास दिढ़ आसन कित गौनै केहु पास ?" ॥२॥

सुनि बसीठ मन उपनी रीसा ।
जौं पीसत घुन जाइहि पीसा ॥
जोगी अस कहुँ कहै न कोई ।
सो कहु बात जोग जो होई ॥
आगे देखि पांव धरु, नाथा ।
तहाँ न हेरु टूट जहँ माथा ॥
बसिठन्ह जाइ कही अस बाता ।
राजा सुनत कोह भा राता ॥
ठावहिं ठाँव कुँवर सब माखे ।
केइ अब लीन्ह जोग, केइ राखे ? ॥
मंत्रिन्ह कहा रहौ मन बूझे ।
पति न होइ जोगिन्ह सौं जूझे ॥
ओहि मारे तौ काह भिखारी ।
लाज होइ जौं माना हारी ॥

आछै देहु जो गढ़ तरे, जनि चालहु यह बात ।
तहँ जो पाहन भख करहिं अस केहिके मुख दाँत ? ॥३॥

गए बसीठ पुनि बहुरि न आए ।
राजै कहा बहुत दिन लाए ॥
न जनौं सरग बात दहुँ काहा ॥
काहु न आइ कही फिरि चाहा ॥

पंख न काया, पौन न पाया।
केहि बिधि मिलौं होइ कै छाया ? ॥
सँवरि रकत नैनहिं भरि चूआ।
रोइ हँकारेसि माझी सूआ ॥
परीं जो आँसु रकत कै टूटी।
रेंगि चलीं जस बीर-बहूटी ॥
ओही रकत लिखि दीन्ही पाती।
सुआ जो लीन्ह चोंच भइ राती ॥
बाँधी कंठ परा जरि काँठा।
बिरह क जरा जाइ कित नाठा ? ॥

मसि नैना, लिखनी बरुनि, रोइ रोइ लिखा अकत्थ।
आखर दहै, न कोइ छुवै, दीन्ह परेवा हत्थ ॥४॥

आखर जरहिं न काहू छूआ।
तब दुख देखि चला लेइ सूआ ॥
कंचन-तार बाँधि गिउ पाती।
लेइ गा सुआ जहाँ धनि राती ॥
जैसे कवँल सूर के आसा।
नीर कंठ लहि मरत पियासा ॥
बिसरा भोग सेज सुख-बासा।
जहाँ भौंर सब तहाँ हुलासा ॥
तौ लगि धीर सुना नहिं पीऊ।
सुना त घरी रहै नहिं जीऊ ॥
तौ लगि सुख हिय पेम न जामा।
जहाँ पेम कत सुख बिसरामा ? ॥
अगर चँदन सुठि दहै सरीरू।
औ भा अगिनि कया कर चीरू ॥

बिरह न आपु सँभारै, मैल चीर, सिर रूख।
पिउ पिउ करत राति दिन जस पपिहा मुख सूख ॥५॥

ततखन गा हीरामन आई।
मरत पियास छाँह जनु पाई॥
भल तुम्ह, सुआ! कीन्ह है फेरा।
कहहु कुसल अब पीतम केरा॥
बाट न जानौं, अगम पहारा।
हिरदय मिला न होइ निनारा॥
मरम पानि कर जान पियासा।
जो जल महँ ता कहँ का आसा?॥
का रानी यह पूछहु बाता।
जिनि कोइ होइ पेम कर राता॥
तुम्हरे दरसन लागि बियोगी।
अहा सो महादेव मठ जोगी॥
तुम्ह बसंत लेइ तहाँ सिधाई।
देव पूजि पुनि ओहि पहँ आई॥

दिस्टि बान तस मारेहु घायल भा तेहि ठाँव।
दूसरि बात न बोलै लेइ पदमावति नाँव ॥६॥

तुम्ह तौ खेलि मँदिर महँ आईं।
ओहिक मरम पै जान गोसाईं॥
कहेसि जरै को बारहि बारा।
एकहि बार होहुँ जरि छारा॥
उलटा पंथ पेम के बारा।
चढ़ै सरग, जौ परै पतारा॥
अब धँसि लीन्ह चहै तेहि आसा।
पावै साँस, कि मरै निरासा॥

कहि कै सुआ जो छोड़ेसि पाती ।
जानहु दीप छुवत तस ताती ॥
गीउ जो बाँधा कंचन-तागा ।
राता साँव कंठ जरि लागा ॥
वह तोहि लागि कया सब जारी ।
तपत मीन, जल देहि पवारी ॥

तोहि कारन वह जोगी भसम कीन्ह तन दाहि ।
तू असि निठुर निछोही बात न पूछै ताहि ॥७॥

कहेसि "सुआ ! मो सौं सुनु बाता ।
चहौं तौ आज मिलौं जस राता ॥
पै सो मरम न जाना भोरा ।
जानी प्रीति जो मरि कै जोरा ॥
हौं जानति हौं अबही काँचा ।
ना जेइ प्रीति रंग थिर राँचा ॥
ना जेइ भएउ मलयगिरि बासा ।
ना जेइ रबि होइ चढ़ा अकासा ॥
ना जेइ भएउ भौंर कर रंगू ।
ना जेइ दीपक भएउ पतंगू ॥
ना जेइ करा भृंग कै होई ।
ना जेइ आपु मरै जिउ खोई ॥
ना जेइ प्रेम औटि एक भएऊ ।
ना जेहि हिये माँझ डर गएऊ ॥

तेहि का कहिय रहब जिउ रहै जो पीतम लागि ? ।
जौं वह सुनै लेइ धँसि, का पानी, का आगि ॥८॥

पुनि धनि कनक-पानि मसि माँगी।
उतर लिखत भीजी तन आँगी॥
तस कंचन कहँ चहिय सोहागा।
जौं निरमल नग होइ तौ लागा॥
हौं जो गई सिव-मंडप भोरी।
तहँवाँ कस न गांठि तैं जोरी?॥
भा बिसँभार देखि कै नैना।
सखिन्ह लाज का बोलौं बैना?॥
खेलहि मिस मैं चंदन घाला।
मकु जागसि तौ देउँ जयमाला॥
तबहुँ न जागा, गा तू सोई।
जागे भेंट, न सोए होई॥
अब जौं सूर होइ चढ़ै अकासा।
जौं जिउ देइ त आवै पासा॥

तौ लगि भुगुति न लेइ सका रावन सिय जब साथ।
कौन भरोसे अब कहौं जीउ पराए हाथ॥ ६॥

हौं पुनि इहाँ ऐस तोहि राती।
आधी भेंट पिरीतम—पाती॥
तहुँ जौ प्रीत निबाहै आँटा।
भौंर न देख केत कर काँटा॥
होइ पतंग अधरन्ह गहु दीया।
लेसि समुद धँसि होइ मरजीया॥
रातु रंग जिमि दीपक बाती।
नैन लाउ होइ सीप सेवाती॥
चातक होइ पुकारु पियासा।
पीउ न पानि सेवाति कै आसा॥

सारस कर जस बिछुरा जोरा।
नैन होहि जस चंद चकोरा॥
होहि चकोर दिस्टि ससि पाहाँ।
औ रबि होहि कँवलदल माहाँ॥

महुँ ऐसै होउँ तोहि कहँ, सकहि तौ ओर निबाहु।
राहु बेधि अरजुन होइ जीतु दुरपदी ब्याहु॥१०॥

राजा इहाँ ऐस तप झूरा।
भा जरि बिरह छार कर कूरा॥
नैन लाइ सो गएउ बिमोही।
भा बिनु जिउ, जिउ दीन्हेसि ओही॥
देखेसि जागि सुआ सिर नावा।
पाती देइ मुख बचन सुनावा॥
गुरू के बचन स्रवन दुइ मेला।
कीन्हि सुदिस्टि, बेगि चलु चेला॥
पौन साँस तो सौं मन लाई।
जोवै मारग दिस्टि बिछाई॥

आवहु सामि सुलच्छना जीउ बसै तुम्ह नावँ।
नैनहिं भीतर पंथ है हिरदय भीतर ठावँ॥११॥

सुनि पद्मावति कै असि मया।
भा बसंत, उपनी नइ कया॥
सुआ क बोल पौन होइ लागा।
उठा सोइ, हनुवँत अस जागा॥
चाँद मिलै कै दीन्हेसि आसा।
सहसौ कला सूर परगासा॥
पाति लीन्हि, लेइ सीस चढ़ावा।
दीठि चकोर चंद जस पावा॥

उठा फूलि हिरदय न समाना ।
कंथा टूक टूक बेहराना ॥
लीन्हे सिधि साँसा मन मारा ।
गुरू मछंदरनाथ सँभारा ॥
खोजि लीन्ह सो सरग-दुवारा ।
बज्र जो मूँदे जाइ उघारा ॥

बाँक चढ़ाव सरग-गढ़ चढ़त गएउ होइ भोर ।
भइ पुकार गढ़ ऊपर चढ़े सेंधि देइ चोर ॥१२॥

---

(२) जोगी बंधन-खण्ड

राजै सुनि जोगी गढ़ चढ़े ।
पूछै पास जो पंडित पढ़े ॥
जोगी गढ़ जो सेंधि दै आवहिं ।
बोलहु सबद सिद्धि जस पावहिं ॥
कहहिं बेद पढ़ि पंडित बेदी ।
जोगि भौंर जस मालति-भेदी ॥
राँध जो मंत्री बोले सोई ।
ऐस जो चोर सिद्धि पै कोई ॥
सिद्ध निसंक रैन दिन भवँहीं ।
ताका जहाँ तहाँ अपसवहीं ॥
सिद्ध निडर अस अपने जीवा ।
खड़ग देखि कै नावहिं गीवा ॥
सिद्ध अमर, काया जस पारा ।
छरहि मरहिं बर जाइ न मारा ॥

छरही काज कृस्न कर राजा चढ़ैं रिसाइ ।
सिद्ध गिद्ध जिन्ह दिस्टि गगन पर, बिनु छर किछु न बसाइ ।।१३।।

राजै छेंकि धरे सब जोगी ।
दुख ऊपर दुख सहै बियोगी ।।
नाग-फाँस उन्ह मेला गीवा ।
हरष न बिसमौ एकौ जीवा ।।
भलेहि आनि गिउ मेली फाँसी ।
है न सोच हिय, रिस अस नासी ।।
मैं गिउ फाँद ओहि दिन मेला ।
जेहि दिन पेम-पंथ होइ खेला ।।
जब लगि गुरु हौं अहा न चीन्हा ।
कोटि अँतरपट बीचहिं दीन्हा ।।
जब चीन्हा तब और न कोई ।
तन मन जिउ जीवन सब सोई ।।
'हौं हौं' करत धोख इतराहीं ।
जब भा सिद्ध कहाँ परछाहीं ? ।।

दरसन ओहि कर दिया जस हौं सो भिखारि पतंग ।
जौ करवत सिर सारै मरत न मोरौं अंग ।।१४।।

पदमावति कँवला ससि-जोती ।
हँसै फूल, रोवै सब मोती ।।
जबहिं सुरुज कहँ लागा राहू ।
तबहिं कँवल मन भएउ अगाहू ।।
बिरह अगस्त जो बिसमौ उएऊ ।
सरवर-हरष सूखि सब गएऊ ।।
जस दिन माँझ रैनि होइ आई ।
बिगसत कँवल गएउ मुरझाई ।।

राता बदन गएउ होइ सेता।
भँवत भँवर रहि गए अचेता॥
जानहिं मरम कँवल कर कोईं।
देखि बिथा बिरहिन कै रोईं॥
बिरहा कठिन काल कै कला।
बिरह न सहै, काल बरु भला॥
काल काढ़ि जिउ लेइ सिधारा।
बिरह–काल मारे पर मारा॥

तन रावन होइ सर चढ़ा बिरह भएउ हनुवंत।
जारे ऊपर जारै चित मन करि भसमंत॥१५॥

घरी चारि इमि गहन गरासी।
पुनि बिधि हिये जोति परगासी॥
निसँस ऊभि भरि लीन्हेसि साँसा।
भा अधार, जीवन कै आसा॥
सरद-चंद मुख जबहिं उघेली।
खंजन - नैन उठे करि केली॥
बिरह न बोल आव मुख ताईं।
मरि मरि बोल जीउ बरियाईं॥
उदधि-समुद जस तरँग देखावा।
चख घूमहिं; मुख बात न आवा॥
सखी आनि बिष देहु तौ मरऊँ।
जिउ न पियार, मरै का डरऊँ ?॥

खिनहि उठै, खिन बूड़ै अस हिय कँवल सँकेत।
हीरामनहिं बुलावहि, सखी ! गहन जिउ लेत॥१६॥

चेरी धाय सुनत खिन धाई।
होरामन लेइ आइँ बोलाई॥
जनहु बैद ओषद लेइ आवा।
रोगिया रोग मरत जिउ पावा॥
सुनत असीस नैन धनि खोले।
बिरह-बैन कोकिल जिमि बोले॥
कँवलहिं बिरह-बिथा जस बाढ़ी।
केसर-बरन पोर हिय गाढ़ी॥
और दगध का कहौं अपारा।
सती सो जरै कठिन अस झारा॥
होइ हनुवन्त पैठ है कोई।
लंकादाहु लागु करै सोई॥
लंका बुझो आगि जौ लागी।
यह न बुझाइ आँच बज्रागी॥

जहँ लगि चंदन मलयगिरि औ सायर सब नीर।
सब मिलि आइ बुझावहिं बुझै न आगि सरीर॥१७॥

हीरामन जौ देखेसि नारी।
प्रीति-बेल उपनी हिय-बारी॥
कहेसि कस न तुम्ह होहु दुहेली।
अरुझी पेम जो पीतम बेली॥
प्रीति-बेलि जिनि अरुझै कोई।
अरुझे, मुए न छूटै सोई॥
पदमावति उठि टेकै पाया।
तुम्ह हुँत देखौं पीतम-छाया॥
कहत लाज औ रहै न जीऊ।
एक दिसि आगि दुसर दिसि पीऊ॥

तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देवा।
उतरौं पार तेही बिधि खेवा॥
दमनहिं नलहिं जो हंस मेरावा।
तुम्ह हीरामन नावँ कहावा॥

मूरि सजीवन दूरि है सालै सकती–बानु।
प्रान मुकुत अब होत है बेगि देखावहु भानु॥१८॥

हीरामन भुइँ धरा लिलाटू।
तुम्ह रानी जुग जुग सुख–पाटू॥
जेहि के हाथ सजीवन मूरी।
सो जानिय अब नाहीं दूरी॥
पिता तुम्हार राज कर भोगी।
पूजै बिप्र, मरावै जोगी॥
पौरि पौरि कोतवार जो बैठा।
पेम क लुबुध सुरँग होइ पैठा॥
चढ़त रैनि गढ़ होइगा भोरू।
आवत बार धरा कै चोरू॥
अब लेइ गए देइ ओहि सूरी।
तेहि सौं अगाह बिथा तुम्ह पूरी।
अब तुम्ह जिउ, काया वह जोगी।
कया क रोग जानु पै जोगी।

रूप तुम्हार जीउ कै (आपन) पिंड कमावा फेरि।
आपु हेराइ रहा, तेहि काल न पावै हेरि॥१९

हीरामन जो बात यह कही।
सूर के गहन चाँद तब गही

अब जौं जोगि मरै मोहिं नेहा।
मोहि ओहि साथ धरति गगनेहा ॥
रहै त करौं जनम भरि सेवा।
चलै त, यह जिउ साथ परेवा ॥
अनु रानी तुम्ह गुरु वह चेला।
मोहि बूझहु कै सिद्ध नवेला ! ॥
तुम्ह चेला कहँ परसन भई।
दरसन देइ मँडप चलि गई ॥
रूप गुरू कर चेलै डीठा।
चित समाइ होइ चित्र पईठा ॥
जीउ काढ़ि लै तुम्ह अपसई।
वह भा कया, जीउ तुम्ह भई ॥
कया जो लाग धूप औ सीऊ।
कया न जान, जान पै जीऊ ॥
भोग तुम्हार मिला ओहि जाई।
जो ओहि बिथा सो तुम्ह कहँ आई ॥
तुम्ह ओहि के घट, वह तुम्ह माहाँ।
काल कहाँ पावै वह छाहाँ ? ॥

अस वह जोगी अमर भा पर-काया-परवेस।
आवै काल, गुरुहि तहँ देखि सो करै अदेस ॥२०॥

---

(३) रत्नसेन-सूली-खण्ड

बाँधि तपा आने जहँ सूरी।
जुरे आइ सब सिंघलपूरी ॥

पहिले गुरुहि देइ कहँ आना।
देखि रूप सब कोइ पछिताना ॥
लोग कहहिं यह होइ न जोगी।
राजकुँवर कोइ अहै बियोगी ॥
काहुहि लागि भएउ है तपा।
हिये सो माल, करहु मुख जपा ॥
जस मारै कहँ बाजा तूरू।
सूरी देखि हँसा मंसूरू ॥
चमके दसन भएउ उजियारा।
जो जहँ तहाँ बीजु अस मारा ॥
जोगी केर करहु पै खोजू।
मकु यह होइ न राजा भोजू ॥

सब पूछहिं कहु जोगी जाति जनम औ नाँव।
जहाँ ठाँव रोवै कर हँसा सो कहु केहि भाव ॥२१॥

का पूछहु अब जाति हमारी।
हम जोगी औ तपा भिखारी ॥
जोगिहि कौन जाति, हो राजा।
गारि न कोह, मारि नहिं लाजा ॥
निलज भिखारि लाज जेइ खोई।
तेहि के खोज परै जिनि कोई ॥
जाकर जीउ मरै पर बसा।
सूरी देखि सो कस नहिं हँसा ? ॥
जोगिहि जबहिं गाढ़ अस परा।
महादेव कर आसन टरा ॥
वै हँसि पारबती सौं कहा।
जानहुँ सूर गहन अस गहा ॥

आजु चढ़े गढ़ ऊपर तपा।
राजै गहा सूर तब छपा॥
पारबती सुनि पाँयन्ह परी।
चलि, महेस! देखैं एहि घरी॥
भेस भाँट भाँटिनि कर कीन्हा।
औ हनुवंत बीर सँग लीन्हा॥
आए गुपुत होइ देखन लागी।
वह मूरति कस सती सभागी॥

कटक असूझ देखि कै राजा गरब करेइ।
दैउ क दसा न देखै दहुँ का कहँ जय देइ॥२२॥

लेइ सँदेस सुअटा गा तहाँ।
सूरी देहिं रतन कहँ जहाँ॥
देखि रतन हीरामन रोवा॥
राजा जिउ लोगन्ह हठि खोवा॥
देखि रुदन हीरामन केरा।
रोवहिं सब, राजा मुख हेरा॥
माँगहिं सब बिधिना सौं रोई।
कै उपकार छोड़ावै कोई॥
कहि सँदेस सब बिपति सुनाई।
बिकल बहुत, किछु कहा न जाई॥
काढ़ि प्रान बैठी लेइ हाथा।
मरै तौ मरौं, जिऔं एक साथा॥
सुनि सँदेस राजा तब हँसा।
प्रान प्रान घट घट महँ बसा॥

सुअटा भाँट दसौंधी भए जिउ पर एक ठाँव।
चलि सो जाइ अब देख तहँ जहँ बैठा रह राव॥२३॥

राजा रहा दिस्टि कै औंधी।
रहि न सका तब भाँट दसौंधी
कहेसि मेलि कै हाथ कटारी।
पुरुष न आछे बैठ पेटारी
कान्ह कोपि कै मारा कंसू।
गोकुल माँझ बजावा बंसू
गंध्रबसेन जहाँ रिस-बाढ़ा।
जाइ भाँट आगे भा ठाढ़ा
ठाढ़ देख सब राजा राऊ।
बाएँ हाथ दीन्ह बरम्हाऊ
बोला गंध्रबसेन रिसाई।
कस जोगी, कस भाँट असाई
जोगी पानि, आगि तू राजा।
आगिहि पानि जूझ नहिं छाजा

आगि बुझाइ पानि सौं, जूझु न, राजा ! बूझु।
लीन्हे खप्पर बार तोहिं भिच्छा देहि, न जूझु ॥२४॥
बोला भाँट, नरेस सुनु ! गरब न छाजा जीउ।
कुंभकरन कै खोपरी बूड़त बाँचा भीउँ ॥२५॥

ओहट होहु रे भाँट भिखारी।
का तू मोहिं देहि असि गारी
को मोहिं जोग जगत होइ पारा।
जा सहुँ हेरौं जाइ पतारा
जोगी जती आव जो कोई।
सुनतहि त्रासमान भा सोई
भीखि लेहिं फिरि माँगहिं आगे।
ए सब रैनि रहे गढ़ लागे

जस हींछा चाहौं तिन्ह दीन्हा ।
नाहिं बेधि सूरी जिउ लीन्हा ॥
जेहि अस साध होइ जिउ खोवा ।
सो पतंग दीपक तस रोवा ॥
सुर, नर, मुनि सब गंध्रब देवा ।
तेहि को गनै ? करहिं निति सेवा ॥

मो सौं को सरवरि करै सुनु, रे झूठे भाँट ! ।
छार होइ जौ चालौं निज हस्तिन कर ठाट ॥२६॥

जोगी घिरि मेरे सब पाछे ।
उरए माल आए रन काछे ॥
मंत्रिन्ह कहा, सुनहु हो राजा ।
देखहु अब जोगिन्ह कर काजा ॥
हम जो कहा तुम्ह करहु न जूझू ।
होत आव दर जगत असूझू ॥
कहहिं बात, जोगी अब आए ।
खिनक माहँ चाहत हैं धाए ॥
जौ लहि धावहिं अस कै खेलहु ।
हस्तिन केर जूह सब पेलहु ॥
जस गज पेलि होहिं रन आगे ।
तस बगमेल करहु सँग लागे ॥
हस्ति क जूह आय अगसारी ।
हनुवँत तबै लँगूर पसारी ॥
जैसै सेन बीच रन आई ।
सबै लपेटि लँगूर चलाई ॥

बहुतक परे समुद महँ, परत न पावा खोज ।
जहाँ गरब तहँ पीरा, जहाँ हँसी तहँ रोज ॥२७॥

पुनि आगे का देखै राजा।
ईसर केर घंट रन बाजा ॥
जावत दानव राच्छस पुरे।
आठौ बज्र आइ रन जुरे ॥
जेहि कर गरब करत हुत राजा।
सो सब फिरि बैरी होइ साजा ॥
जहवाँ महादेव रन खड़ा।
सीस नाइ नृप पायँन्ह परा ॥

केहि कारन रिस कीजिए हौं सेवक औ चेर।
जेहि चाहिय तेहि दीजिय बारि गोसाईं केर ॥२८॥

गए जो बाजन बाजत जिउ मारन रन माहँ।
फिरि बाजन तेइ बाजे मंगलचार ओनाहँ ॥२६॥

---

(४) रत्नसेन-पद्मावती-विवाह

लगन धरा औ रचा बियाहू।
सिंघल नेवत फिरा सब काहू ॥
बाजन बाजे कोटि पचासा।
भा आनंद सगरौं कैलासा ॥
रतनसेन कहँ कापड़ आए।
हीरा मोति पदारथ लाए ॥
बाजत गाजत भा असवारा।
सब सिंघल नइ कीन्ह जोहारा ॥
चहुँ दिसि मसियर नखत तराईं।
सूरुज चढ़ा चाँद के ताईं ॥

धरती सरग चहूँ दिसि पूरि रहे मसियार।
बाजत आवै मँदिर कहँ होइ मंगलाचार ॥ ३० ॥

पद्मावति धौराहर चढ़ी।
दहुँ कस रबि जेहि कहँ ससि गढ़ी ॥
सखी देखावहिं चमकै बाहू।
तू जस चाँद, सुरुज तोर नाहू ॥

रूपवंत जस दरपन, धनि तू जाकर कंत।
चाहिय जैस मनोहर मिला सो मन-भावंत ॥३१॥

आइ बजावति बैठि बराता।
पान, फूल, सेंदुर सब राता ॥
जहँ सोने कर चित्तर-सारी।
लेइ बरात सब तहाँ उतारी ॥
माँझ सिंघासन पाट सँवारा।
दूलह आनि तहाँ बैसारा ॥
भइ जेवनार, फिरा खँड़वानी।
फिरा अरगजा कुँहकुहँ-पानी ॥
फिरा पान, बहुरा सब कोई।
लाग बियाह-चार सब होई ॥
गाँठि दुलह दुलहिनि कै जोरी।
दुऔ जगत जो जाइ न छोरी ॥
बेद पढ़ैं पण्डित तेहि ठाऊँ।
कन्या तुला रासि लेइ नाऊँ ॥

चाँद सुरुज दुऔ निरमल, दुऔ सँजोग अनूप।
सुरुज चाँद सौं भूला, चाँद सुरुज के रूप ॥३२॥

भइ भाँवरि, नेवछावरि, राज चार सब कीन्ह ।
दायज कहौं कहाँ लगि ? लिखि न जाइ जत दीन्ह ।।३३।।

रतनसेन जब दायज पावा ।
गंध्रबसेन आइ सिर नावा ।।
मानुस चित्त आन किछु कोई ।
करै गोसाइँ सोइ पै होई ।।
अब तुम्ह सिंघलदीप-गोसाईं ।
हम सेवक अहहीं सेवकाई ।।
जस तुम्हार चितउरगढ़ देसू ।
तस तुम्ह इहाँ हमार नरेसू ।।
जंबूदीप दूरि का काजू ? ।
सिंघलदीप करहु अब राजू ।।
रतनसेन बिनवा कर जोरी ।
अस्तुति–जोग जीभ कहँ मोरी ।।
तुम्ह गोसाइँ जेइ छार छुड़ाई ।
कै मानुस अब दीन्हि बड़ाई ।।

जौ तुम्ह दीन्ह तौ पावा जिवन जनम सुखभोग ।
नातरु खेह पायँ कै, हौं जोगी केहि जोग ? ।।३४।।

(१) नागमती-वियोग-खण्ड

नागमती चितउर-पथ हेरा।
पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा ॥
नागर काहु नारि बस परा।
तेइ मोहि पिय मो सौं हरा ॥
सुआ काल होइ लेइगा पीऊ।
पिउ नहिं जात, जात बरु जीऊ ॥
भएउ नरायन बावँन करा।
राज करत राजा बलि छरा ॥
करन पास लीन्हेउ कै छंदू।
बिप्र रूप धरि झिलमिल इंदू ॥
मानत भोग गोपिचँद भोगी।
लेइ अपसवा जलंधर जोगी ॥
लेइगा कृस्नहि गरुड़ अलोपी।
कठिन बिछोह,जियहिं किमि गोपी?॥

सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह ? ।
झुरि झुरि पींजर हौं भई, बिरह-काल मोहि दीन्ह ॥१॥

पिउ-बियोगि अस बाउर जीऊ।
पपिहा नित बोलै 'पिउ पीऊ' ॥
अधिक काम दाधै सो रामा।
हरि लेइ सुवा गएउ पिउ नामा ॥

बिरह बान तस लाग न डोली।
रकत पसीज, भीजि गइ चोली॥
सूखा हिया, हार भा भारी।
हरि हरि प्रान तजहिं सब नारी॥
खन एक आव पेट महँ! साँसा।
खनहिं जाइ जिउ, होइ निरासा॥
पवन डोलावहिं, सींचहिं चोला।
पहर एक समुझहिं मुख-बोला॥
प्रान पयान होत को राखा?।
को-सुनाव पीतम कै भाखा?॥

आहि जो मारै बिरह कै, आगि उठै तेहि लागि।
हंस जो रहा सरीर महँ, पाँख जरा, गा भागि॥२॥

पाट-महादेइ! हिये न हारू।
समुझि जीउ चित चेतु सँभारू॥
भौंर कँवल सँग होइ मेरावा।
सँवरि नेह मालति पहँ आवा॥
पपिहै स्वाती सौं जस प्रीती।
टेकु पियास, बाँधु मन थीती॥
धरतिहि जैस गगन सौं नेहा।
पलटि आव बरषा ऋतु मेहा॥
पुनि बसंत ऋतु आव नवेली।
सो रस, सो मधुकर, सो बेली॥
जिनि अस जीव करसि, तू बारी।
यह तरिवर पुनि उठिहि सँवारी॥
दिन दस बिनु जल सूखि बिधंसा।
पुनि सोइ सरवर, सोई हंसा॥

मिलहिं जो बिछुरे साजन, अंकम भेंटि गहंत।
तपनि मृगसिरा जे सहैं, ते अद्रा पलुहंत ॥ ३ ॥

चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा।
साजा बिरह दुंद दल बाजा॥
धूम, साम, धौरे घन धाए।
सेत धजा बग-पाँति देखाए॥
खड़ग-बीजु चमकै चहुँ ओरा।
बुंद–बान बरसहिं घन घोरा॥
ओनई घटा आइ चहुँ फेरी।
कंत ! उबारु मदन हौं घेरी॥
दादुर मोर कोकिला, पीऊ।
गिरै बीजु, घट रहै न जीऊ॥
पुष्य नखत सिर ऊपर आवा।
हौं बिनु नाह, मँदिर को छावा ?॥
अद्रा लाग, लागि भुइँ लेई।
मोहिं बिनु पिउ को आदर देई ?॥

जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्ब।
कंत पियारा बाहिरै, हम सुख भूला सर्ब ॥ ४ ॥

सावन बरस मेह अति पानी।
भरनि परी, हौं बिरह झुरानी॥
लाग पुनरबसु पीउ न देखा।
भइ बाउरि, कहँ कंत सरेखा ? ॥
रकत कै आँसु परहिं भुइँ टूटी।
रेंगि चलीं जस बीरबहूटी॥
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला।
हरियरि भूमि, कुसुंभी चोला॥

हिय हिंडोल अस डोलै मोरा।
बिरह झुलाइ देइ झकझोरा॥
बाट असूझ अथाह गँभीरी।
जिउ बाउर, भा फिरै भँभीरी॥
जग जल बूड़ लहाँ लगि ताकी।
मोरि नाव खेवक बिनु थाकी॥

परबत समुद अगम बिच, बीहड़ घन बनढाँख।
किमि कै भेंटौं कंत तुम्ह ? ना मोहिं पाँव, न पाँख ॥५॥

भा भादों दूभर अति भारी।
कैसे भरौं रैन अँधियारी॥
मँदिर सून पिउ अनतै बसा।
सेज नागिनी फिरि फिरि डसा॥
रहौं अकेलि गहे एक पाटी।
नैन पसारि मरौं हिय फाटी॥
चमक बीजु, घन गरजि तरासा।
बिरह काल होइ जीउ गरासा॥
बरसै मघा झकोरि झकोरी।
मोरि दुइ नैन चुवैं जस ओरी॥
धनि सूखै भरे भादौं माहाँ।
अबहुँ न आएन्हि सींचेन्हि नाहा॥
पुरबा लाग भूमि जल पूरी।
आक जवास भई तस झूरी॥

थल जल भरे अपूर सब, धरति गगन मिलि एक।
धनि जोबन अवगाह महँ दे बूड़त पिउ ! टेक॥ ६॥

लाग कुवार, नीर जग घटा।
अबहूँ आउ, कंत! तन लटा॥
तोहि देखे, पिउ! पलुहै कया।
उतरा चित्त, बहुरि करु मया॥
चित्रा मित्र मीन कर आवा।
पपिहा पीउ पुकारत पावा॥
उआ अगस्त, हस्ति-घन गाजा।
तुरय पलानि चढ़े रन राजा॥
स्वाति-बूँद चातक मुख परे।
समुद सीप मोती सब भरे॥
सरवर सँवरि हंस चलि आए।
सारस कुरलहिं, खँजन देखाए॥
भा परगास, काँस बन फूले।
कंत न फिरे, बिदेसहि-भूले॥

बिरह-हस्ति तन सालै, घाय करै चित चूर।
बेगि आइ, पिउ! बाजहु, गाजहु होइ सदूर॥ ७॥

कातिक सरद-चंद उजियारी।
जग सीतल, हौं बिरहै जारी॥
चौदह करा चाँद परगासा।
जनहुँ जरै सब धरति अकासा॥
तन मन सेज करै अगिदाहू।
सब कहँ चंद, भएउ मोहिं राहू॥
चहूँ खंड लागै अँधियारा।
जौं घर नाहीं कंत पियारा॥
अबहूँ, निठुर! आउ एहि बारा।
परब देवारी होइ संसारा॥

सखि झूमक गावैं अँग मोरी ।
हौं झुरावँ, बिछुरी मोरि जोरी ॥
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूजा ।
मो कहँ बिरह, सवति-दुख दूजा ॥

सखि मानैं तिउहार सब गाइ, देवारी खेलि ।
हौं का गावौं कंत बिनु रही छार सिर मेलि ॥८॥

अगहन दिवस घटा, निसि बाढ़ी ।
दूभर रैनि, जाइ किमि गाढ़ी ? ॥
अब धनि बिरह दिवस भा राती ।
जरौं बिरह जस दीपक-बाती ॥
काँपै हिया जनावै सीऊ ।
तौ पै जाइ होइ सँग पीऊ ॥
घर घर चीर रचे सब काहू ।
मोर रूप-रँग लेइगा नाहू ॥
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई ।
अबहूँ फिरै, फिरै रँग सोई ॥
बज्र-अगिनि बिरहिन हिय जारा ।
सुलुगि सुलुगि दगधै होइ छारा ॥
यह दुख दगध न जानै कंतू ।
जोबन जनम करै भसमंतू ॥

पिउ सौं कहेहु सँदेसड़ा, हे भौंरा ! हे काग !
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहि क धुवाँ हम लाग ॥९॥

पूस जाड़ थर थर तन काँपा ।
सुरुज जाइ लंका-दिसि चाँपा ॥

बिरह बाढ़, दारुन भा सीऊ।
कँपि कँपि मरौं, लेइ हरि जीऊ॥
कंत कहाँ, लागौं ओहि हियरे।
पंथ अपार, सूझ नहिं नियरे॥
सौंर सपेती आवै जूड़ी।
जानहु सेज हिवंचल बूड़ी॥
चकई निसि बिछुरै, दिन मिला।
हौं दिन राति बिरह कोकिला॥
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी।
कैसे जियै बिछोही पखी॥
बिरह सचान भएउ तन जाड़ा।
जियत खाइ औ मुए न छाँड़ा॥

रकत ढुरा माँसू गरा, हाड़ भएउ सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई, पीउ समेटहि पंख॥१०॥

लागेउ माघ, परै अब पाला।
बिरहा काल भएउ जड़काला॥
पहल पहल तन रूई झाँपै।
हहरि हहरि अधिकौ हिय काँपै॥
आइ सूर होइ तपु, रे नाहा!
तोहि बिनु जाड़ न छूटै माहा॥
एहि माहँ उपजै रसमूलू।
तूँ सो भौंर, मोर जोबन फूलू॥
नैन चुवहिं जस महवट नीरू।
तोहि बिनु अंग लाग सर-चीरू॥
टप टप बूँद परहिं जस ओला।
बिरह पवन होइ मारै झोला॥

केहि क सिंगार, को पहिरु पटोरा ? ।
गीउ न हार, रही होइ डोरा ॥

तुम बिनु काँपै धनि हिया, तन तिनउर भा डोल ।
तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल ॥११॥

फागुन पवन झकोरा बहा ।
चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा ॥
तन जस पियर पात भा मोरा ।
तेहि पर बिरह देइ झकझोरा ॥
तरिवर झरहिं, झरहिं बन ढाखा ।
भई ओनंत फूलि फरि साखा ॥
करहिं बनसपति हिये हुलासू ।
मो कहँ भा जग दून उदासू ॥
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी ।
मोहिं तन लाइ दीन्हि जस होरी ॥
जौ पै पीउ जरत अस पावा ।
जरत मरत मोहिं रोष न आवा ॥
राति दिवस बस यह जिउ मोरे ।
लगौं निहोर कंत अब तोरे ॥

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन ! उड़ाव' ।
मकु तेहि मारग उड़ि परै कंत धरै जहँ पाव ॥१२॥

चैत बसंता होइ धमारी ।
मोहिं लेखे संसार उजारी ॥
पंचम बिरह पंच सर मारै ।
रकत रोइ सगरौं बन ढारै ॥
बूड़ि उठे सब तरिवर—पाता ।
भीजि मजीठ, टेसु बन राता ॥

बौरे आम फरै अब लागे।
अबहुँ आउ घर, कंत सभागे ! ॥
सहस भाव फूलीं बनसपती।
मधुकर घूमहिं सँवरि मालती ॥
मोकहँ फूल भए सब काँटे।
दिस्टि परत जस लागहिं चाँटे ॥
फरि जोबन भए नारँग साखा।
सुआ-बिरह अब जाइ न राखा ॥

घिरिनि परेवा होइ, पिउ ! आउ बेगि, परु टूटि।
नारि पराए हाथ है तोहि बिनु पाव न छूटि ॥१३॥

भा बैसाख तपनि अति लागी।
चोआ चीर चँदन भा आगी ॥
सूरुज जरत हिवंचल ताका।
बिरह-बजागि सौंह रथ हाँका ॥
जरत बजागिनि करु,पिउ ! छाहाँ।
आइ बुझाउ, अँगारन्ह माहाँ ॥
तोहि दरसन होइ सीतल नारी।
आइ आगि तें करु फुलवारी ॥
लागिउँ जरै, जरै जस भारू।
फिरि भूँजेसि भूँजेसि, तजिउँ न बारू ॥
सरवर-हिया घटत निति जाई।
टूक टूक होइ कै बिहराई ॥
बिहरत हिया करहु, पिउ टेका।
दीठि-दवँगरा मेरवहु एका ॥

कँवल जो बिगसा मानसर बिनु जल गएउ सुखाइ ।
अबहुँ बेलि फिरि पलुहै जौ पिउ सींचै आइ ॥१४॥

जेठ जरै जग, चलै लुवारा ।
उठहिं बवंडर, परहिं अँगारा ॥
बिरह गाजि हनुवँत होउ जागा ।
लंका-दाह करै तनु लागा ॥
चारिहु पवन झकोरै आगी ।
लंका दाहि पलंका लागी ॥
दहि भइ साम नदी कालिंदी ।
बिरहक आगि कठिन अति मंदी ॥
उठै आगि औ आवै आँधी ।
नैन न सूझ, मरौं दुख-बाँधी ॥
अधजर भइउँ, माँसु तन सूखा ।
लागेउ बिरह काल होइ भूखा ॥
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागै ।
अबहुँ आउ, आवत सुनि भागै ॥

गिरि, समुद्र, ससि, मेघ, रबि सहि न सकहिं वह आगि ।
मुहमद सती सराहिए, जरै जो अस पिउ लागि ॥१५॥

रोइ गँवाए बारह मासा ।
सहस सहस दुख एक एक साँसा ॥
तिल तिल बरख बरख परि जाई ।
पहर पहर जुग जुग न सेराई ॥
सो नहिं आवै रूप मुरारी ।
जासौं पाव सोहाग सुनारी ॥

साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा।
कौनि सो घरी करै पिउ फेरा ? ॥
दहि कोइला भइ कंत सनेहा।
तोला माँसु रही नहिं देहा ॥
रकत न रहा, बिरह तन गरा।
रती रती होइ नैनन्ह ढरा ॥
पाय लागि जोरै धनि हाथा।
जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा ॥

बरस दिवस धनि रोइ कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कै, बूझै निसरी पंखि ॥१६॥
जेहि पंखी के निअर होइ कहै बिरह कै बात।
सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात ॥१७॥

कुहुकि कुहुकि जस कोइल रोई।
रकत-आँसु घुँघुची बन बोई ॥
भइ करमुखी नैन तन राती।
को सेराव ? बिरहा-दुख ताती ॥
जहँ जहँ ठाढ़ि होई बनबासी।
तहँ तहँ होइ घुँघुचि कै रासी ॥
बूँद बूँद महँ जानहुँ जीऊ।
गुंजा गूँजि करै 'पिउ पीऊ' ॥
तेहि दुख भए परास निपाते।
लोहू बूड़ि उठे होई राते ॥
राते बिंब भीजि तेहि लोहू।
परवर पाक, फाट हिय गोहू ॥
देखौं जहाँ होइ सोइ राता।
जहाँ सो रतन कहै को बाता ? ॥

नहिं पावस ओहि देसरा; नहिं हेवंत बसंत।
ना कोकिल न पपीहरा, जेहि सुनि आवै कंत ॥१८॥

---

(२) नागमती-संदेश-खण्ड

फिरि फिरि रोव, कोइ नहिं डोला।
आधी राति बिहंगम बोला॥
"तू फिरि फिरि दाहै सब पाँखी।
केहि दुख रैनि न लावसि आँखी"?
नागमती कारन कै रोई।
का सोवै जो कंत-बिछोई॥
मनचित हुँते न उतरै मोरे।
नैन क जल चुकि रहा न मोरे॥
कोइ न जाइ ओहि सिंघलदीपा।
जेहि सेवाति कहँ नैना सीपा॥
जोगी होइ निसरा सो नाहू।
तब हुँत कहा सँदेस न काहू॥
निति पूछौं सब जोगी जंगम।
कोइ न कहै निज बात, बिहंगम!॥

चारिउ चक्र उजार भए, कोइ न सँदेसा टेक।
कहौं बिरह दुख आपन, बैठि सुनहु दँड एक॥१९॥

तासौं दुख कहिए, हो बीरा।
जेहि सुनि कै लागै पर पीरा॥
को होइ भिउँ अँगवै पर दाहा।
को सिंघल पहुँचावै चाहा?॥

जहँवाँ कंत गए होइ जोगी।
हौं किंगरी भइ झूरि बियोगी॥
वै सिंगी पूरी, गुरु भेंटा।
हौं भइ भसम, न आइ समेटा॥
कथा जो कहै आइ ओहि केरी।
पाँवरि होउँ, जनम भरि चेरी॥
ओहि के गुन सँवरत भइ माला।
अबहुँ न बहुरा उड़िगा छाला॥
बिरह गुरू, खप्पर कै हीया।
पवन अधार रहै सो जीया॥
हाड़ भए सब किंगरी, नसैं भईं सब ताँति।
रोवँ रोवँ तें धुनि उठै, कहौं बिथा केहि भाँति? ॥२०॥

पद्मावति सौं कहेहु, बिहंगम।
कंत लोभाइ रही करि संगम॥
तू घर घरनि भई पिउ-हरता।
मोहि तन दीन्हेसि जप औ बरता॥
रावट कनक सो तोकहँ भएऊ।
रावट लंक मोहिं कै गएऊ॥
तोहि चैन सुख मिलै सरीरा।
मो कहँ हिये दुंद दुख पूरा॥
हमहुँ बियाही सँग ओहि पीऊ।
आपुहि पाइ जानु पर जीऊ॥
अबहुँ मया करु, करु जिउ फेरा।
मोहिं जियाउ कंत देइ मेरा॥
मोहिं भोग सौं काज न, बारी।
सौंह दीठि कै चाहनहारी॥

सवति न होसि तू बैरिनि, मोर कंत जेहि हाथ।
आनि मिलाव एक बेर, तोर पाँय मोर माथ ॥२१॥

लेइ सो सँदेस बिहंगम चला।
उठी आगि सगरौं सिंघला॥
बिरह-बजागि बीच को ठेघा?।
धूम सो उठा साम भए मेघा॥
भरि गा गगन लूक अस छूटे।
होइ सब नखत आइ भुइँ टूटे॥
जहँ जहँ भूमि जरी भा रेहू।
बिरह के दाध भई जनु खेहू॥
राहु केतु, जब लंका जरी।
चिनगी उड़ी चाँद महँ परी॥
जाइ बिहंगम समुद डफारा।
जरे मच्छ, पानी भा खारा॥
दाधे बन बीहड़, जल सीपा।
जाइ निअर भा सिंघलदीपा॥

समुद तीर एक तरिवर जाइ बैठ तेहि रूख।
जौ लगि कहा सँदेस नहिं, नहिं पियास,नहिं भूख ॥२२॥

रतनसेन बन करत अहेरा।
कीन्ह ओही तरिवर तर फेरा॥
सीतल बिरिछ समुद के तीरा।
अति उतंग औ छाहँ गँभीरा॥
तुरय बाँधि कै बैठ अकेला।
साथी और करहिं सब खेला॥
देखत फिरै सो तरिवर-साखा।
लाग सुनै पंखिन्ह कै भाखा॥

पंखिन्ह महँ सो बिहंगम अहा।
नागमती जासौं दुख कहा ॥
पूछहिं सबै बिहंगम नामा।
अहो मीत ! काहे तुम सामा ? ॥
कहेसि "मीत ! मासक दुइ भए।
जंबूदीप तहाँ हम गए ॥
नगर एक हम देखा गढ़ चितउर ओहि नावँ।
सो दुख कहौं कहाँ लगि, हम दाढ़े तेहि ठावँ ॥२३॥
जोगी होइ निसरा सो राजा।
सून नगर जानहु धुँध बाजा ॥
नागमती है ताकरि रानी।
जरी बिरह, भइ कोइल-बानी ॥
अब लगि जरि भइ होइहि छारा।
कही न जाइ बिरह कै झारा ॥
सुनि चितउर-राजा मन गुना।
बिधि, सँदेस मैं कासौं सुना ॥
को तरिवर पर पंखी-बेसा।
नागमती कर कहै सँदेसा ? ॥
हौं सोई राजा भा जोगी।
जेहि कारन वह ऐसि बियोगी ॥
जस तूँ पंखि महूँ दिन भरौं।
चाहौं कबहिं जाइ उड़ि परौं ॥
पंखि ! आँखि तेहि मारग, लागी सदा रहाहिं।
कोइ न सँदेसी आवहिं, तेहि क सँदेस कहाहिं ॥२४॥
पूछसि कहा सँदेस-बियोगू।
जोगी भए न जानसि भोगू ॥

नागमती दुख बिरह अपारा।
धरती सरग जरै तेहि झारा॥
राजै कहा, रे सरग-सँदेसी।
उतरि आउ, मोहिं मिलु, रे बिदेसी॥
पाय टेकि तोहि लावौं हियरे।
प्रेम-सँदेस कहहु होइ नियरे॥
घरी एक राजा गोहरावा।
भा अलोप,पुनि दिस्टि न आवा॥
पंखी नावँ न देखा पाँखा।
राजा रोइ फिरा कै साँखा॥
तन सिंघल, मन चितउर बसा।
जिउ बिसँभर नागिन जिमि डसा॥

जेति नारि हँसि पूछहिं अमिय--बचन जिउ तंत।
रस उतरा, बिष चढ़ि रहा ना ओहि तंत न मंत॥२५॥

---

(३) रत्नसेन-बिदाई-खण्ड

रतनसेन बिनवा कर जोरी।
अस्तुति जोग जीभ नहिं मोरी॥
सहस जीभ जौ होंहिं गोसाईं।
कहि न जाइ अस्तुति जहँ ताईं॥
काँच रहा तुम कंचन कीन्हा।
तब भा रतन जोति तुम दीन्हा॥
आवा आजु हमार परेवा।
पाती आनि दीन्ह मोहिं, देवा!॥
भए अमावस नखतन्ह राजू।
हम्ह कै चंद चलावहु आजू॥

राज हमार जहाँ चलि आवा।
लिखि पठइन अब होइ परावा॥
उहाँ नियर दिल्ली सुलतानू।
होइ जो भोर उठै जिमि भानू॥
रहहु अमर महि गगन लगि तुम महि लेइ हम्ह आउ।
सीस हमार तहाँ निति जहाँ तुम्हारा पाउ॥२६॥
राज सभा पुनि उठी सवारी।
"अनु बिनती, राखिय पति भारी॥
बिरवा लाइ न सूखै दीजै।
पावै पानि दिस्टि सो कीजै॥
आनि रखा तुम्ह दीपक लेसी।
पै न रहै पाहुन परदेसी॥
जाकर राज जहाँ चलि आवा।
उहै देस पै ताकहँ भावा॥
हम्ह तुम्ह नैन घालि कै राखे।
ऐसि भाख एहि जीभ न भाखे॥
दिवस देहु सह कुसल सिधावहिं।
दीरघ आउ होइ, पुनि आवहिं"॥
सबहि विचार परा अस भा; गवने कर साज।
सिद्धि गनेस मनावहिं, बिधि पुरवहु सब काज॥२७॥
गवन चार पदमावति सुना।
उठा धसकि जिउ औ सिर धुना॥
गहबर नैन आए भरि आँसू।
छाँड़व यह सिंघल कैलासू॥
छाँड़िउँ नैहर, चलिउँ बिछोई।
एहि रे दिवस कहँ हौं तब रोई॥

लिखनी लागि जौ लेखै कहै न पारै जोरि।
अरब, खरब दस, नील, संख औ अरबुद पदुम करोरि ॥२६॥

---

(४) देश-यात्रा-खण्ड

आधे समुद ते आए नाहीं।
उठी बाउ आँधी उतराहीं॥
लहरैं उठीं समुद उलथाना।
भूला पंथ, सरग नियराना॥
अदिन आइ जौ पहुँचै काऊ।
पाहन उड़ै बहै सो बाऊ॥
बोहित चले जो चितउर ताके।
भए कुपंथ, लंक-दिसि हाँके॥
बोहित टूक टूक सब भए।
एहु न जाना कहँ चलि गए॥
भए राजा रानी दुइ पाटा।
दूनौं बहे, चले दुइ बाटा॥
काया जीउ मिलाइ कै मारि किए दुइ खंड।
तन रोवै धरती परा; जीउ चला बरम्हंड ॥३०॥

---

(५) लक्ष्मी-समुद्र-खण्ड

मुरुछि परी पदमावति रानी।
कहाँ जीउ, कहँ पीउ, न जानी॥
जानहु चित्र-मूर्ति गहि लाई।
पाटा परी बही तस जाई॥

लछिमी नावँ समुद कै बेटी।
तेहि कहँ लच्छि होइ जेहि भेंटी ॥
खेलत अही सहेली सेंती।
पाटा जाइ लाग तेहि रेती ॥
कहेसि सहेली "देखहु पाटा।
मूरति एक लागि बहि घाटा ॥
लछमी लखन बतीसौ लखी।
कहेसि "न मरै, सँभारहु, सखी ! ॥
आपु सीस लेइ बैठी कोरै।
पवन डोलावै सखि चहुँ ओरै ॥
बहुरि जो समुझि परा तन जीऊ।
माँगेसि पानि बोलि कै पीऊ ॥
पानि पियाइ सखी मुख धोई।
पदमिनि जनहुँ कवँल सँग कोईं ॥
तब लछिमी दुख पूछा ओही।
"तिरिया ! समुझि बात कहु मोहीं ॥
देखि रूप तोर आगर, लागि रहा चित मोर।
केहि नगरी कै नागरी, काह नावँ, धनि तोर ?" ॥३१॥
नैन पसारि देख धन चेती।
देखै काह, समुद कै रेती ॥
आपन कोइ न देखेसि तहाँ।
पूछेसि, तुम्ह हौ को ? हौं कहाँ ?॥
कहाँ सो सखी कँवल सँग कोईं।
सो नाहीं, मोहिं कहाँ बिछोई ? ॥
कहाँ जगत महँ पीउ पियारा।
जो सुमेरु, बिधि गरुअ सँवारा ?॥

आवा पवन बिछोह कर, पाट परी बेकरार।
तरिवर तजा जौ चूरि कै, लागौं केहि के डार ?॥३२॥

कहेन्हि "न जानहिं हम तोर पीऊ।
हम तोहिं पाव, रहा नहिं जीऊ॥
पाट परी आई तुम्ह बही।
ऐस न जानहिं दहुँ कहँ अही"॥
तब सुधि पद्मावति मन भई।
सँवरि बिछोह मुरुछि मरि गई॥
खन चेतै, खन होइ बेकरारा।
भा चंदन बंदन सब छारा॥
बाउरि होइ परी पुनि पाटा।
देहु बहाइ कंत जेहि घाटा॥
को मोहिं आगि देइ रचि होरी।
जियत न बिछुरै सारस-जोरी॥

साथी आथि निआथि जो सकै साथ निरबाहि।
जौ जिउ जारे पिउ मिलै, भेंटु रे जिउ ! जरि जाहि॥३३॥

अगिनि माँग, पै देइ न कोई।
पाहुन पवन पानि सब कोई॥
लछिमी लागि बुझावै जीऊ।
"ना मरु बहिन! मिलिहि तोर पीऊ॥
पीउ पानि, होउ पवन-अधारी।
जसि हौं तहूँ समुद कै बारी॥
मैं तोहि लागि लेवँ खटवाटू।
खोजिहि पिता जहाँ लगि घाटू॥
हौं जेहि मिलौं ताहि बड़ भागू।
राजपाट औ देवँ सोहागू"॥

कहि बुझाइ लेइ मँदिर सिधारी।
भइ जेवनार न जेंवै बारी॥
जेहि रे कंत कर होइ बिछोवा।
कहँ तेहि भूख, कहाँ सुख-सोवा॥

लछिमी जाइ समुद पहँ रोइ बात यह चालि।
कहा समुद "वह घट मोरे, आनि मिलावौं कालि" ॥३४॥

राजा जाइ तहाँ बहि लागा।
जहाँ न कोइ सँदेसी कागा॥
काहि पुकारौं, का पहँ जाऊँ।
गाढ़े मीत होइ एहि ठाऊँ॥
को यह समुद मथै बल गाढ़ै।
को मथि रतन पदारथ काढ़ै ?॥
ए गोसाइँ ! तू सिरजनहारा।
तुइँ सिरजा यह समुद अपारा॥
जानसि सबै अवस्था मोरी।
जस बिछुरी सारस कै जोरी॥
एक मुए ररि मुवै जो दूजी।
रहा न जाइ, आउ अब पूजी॥
मरौं सो लेइ पदमावति नाऊँ।
तुइँ करतार करेसि एक ठाऊँ॥

दुख सौं पीतम भेंटि कै सुख सौं सोव न कोइ।
एही ठावँ मन डरपै, मिलि न बिछोहा होइ ॥३५॥

कहि कै उठा समुद महँ आवा।
काढ़ि कटार गोउ महँ लावा॥

कहा समुद्र, पाप अब घटा।
बाम्हन रूप आइ परगटा॥
कहसि कुँवर! मो सौं सत बाता।
काहे लागि करसि अपघाता॥
परिहँस मरसि कि कौनिउ लाजा।
आपन जीउ देसि केहि काजा?॥
को तुम्ह उतर देइ, हो पाँड़े।
सो बोलै जाकर जिउ भाँड़े॥
जंबूदीप केर हौं राजा।
सौ मैं कीन्ह जो करत न छाजा॥
सिंघलदीप राजघर-बारी।
सो मैं जाइ बियाही नारी॥
पदमावति जग रूपमनि कहँ लगि कहौं दुहेल।
तेहि समुद्र महँ खोएउँ, हौं का जिऔं अकेल?॥३६॥

हँसा समुद, होइ उठा अँजोरा।
जग बूड़ा सब कहि कहि 'मोरा'॥
तोर होइ तोहि परे न बेरा।
बूझि बिचारि तहूँ केहि केरा॥
तुही एक मैं बाउर भेंटा।
जैस राम, दसरथ कर बेटा॥
ओहू नारि कर परा बिछोवा।
एही समुद महँ फिरि फिरि रोवा॥
तोहि बल नाहिं, मूँद अब आँखी।
लावौं तीर, टेकु बैसाखी॥
बाउर अंध प्रेम कर सुनत लुबुधि भा बाट।
निमिष एक महँ लेइगा पदमावति जेहि घाट॥३७॥

लछिमी चंचल नारि परेवा।
जेहि सत होइ छरै कै सेवा॥
रतनसेन आवै जेहि घाटा।
अगमन होइ बैठि तेहि बाटा॥
औ भइ पद्मावति के रूपा।
कीन्हेसि छाहँ जरै जहँ धूपा॥
देखि सो कँवल भँवर होइ धावा।
साँस लीन्ह, वह बास न पावा॥
का तुइँ नारि बैठि अस रोई।
फूल सोइ पै बास न सोई॥
हौं ओहि बास जीउ बलि देऊँ।
और फूल कै बास न लेऊँ॥
लेइ सो आइ पद्मावति पासा।
पानि पियावा मरत पियासा॥

पायँ परी धनि पीउ के, नैनन्ह सौं रज मेट।
अचरज भएउ सबन्ह कहँ, भइ ससि कँवलहिं भेट॥३८॥

आइ मिले सब साथी, हिलि मिलि करहिं अनंद।
भई प्राप्त सुख संपति, गएउ छूटि दुख-द्वंद॥३६॥

दिन दस रहे तहाँ पहुनाई।
पुनि भए बिदा समुद सौं जाई॥
लछिमी पद्मावति सौं भेंटी।
औ तेहि कहा "मोरि तू बेटी"॥
दीन्ह समुद्र पान कर बीरा।
भरि कै रतन पदारथ हीरा॥
और पाँच नग दीन्ह बिसेखे।
सरवन सुना, नैन नहिं देखे॥

एक तौ अमृत, दूसर हंसू।
औ तीसर पंखी कर बंसू॥
चौथ दीन्ह सावक—सादूरू।
पाँचवँ परस, जो कंचन—मूरू॥
तरुन तुरंगम आनि चढ़ाए।
जल—मानुष अगुवा सँग लाए॥

भेंट-घाँट कै समदि तब फिरे नाइकै माथ।
जल—मानुष तबहीं फिरे जब आए जगनाथ॥४०॥

---

(६) चित्तौर-आगमन-खण्ड

चितउर आइ नियर भा राजा।
बहुरा जीति, इंद्र अस गाजा॥
नागमती कहँ अगम जनावा।
गई तपनि बरषा जनु आवा॥
रही जो मुइ नागिनि जसि तुचा।
जिउ पाएँ तन कै भइ सुचा॥
सब दुख जस केंचुरि गा छूटी।
होइ निसरी जनु बीरबहूटी॥
जसि भुइँ दहि असाढ़ पलुहाई।
परहिं बूँद औ सोंधि बसाई॥
ओहि भाँति पलुही सुख-बारी।
उठी करिल नइ कोंप सँवारी॥
हुलसि गंग जिमि बाढ़िहि जेई।
जोबन लाग हिलोरैं देई॥

पूछहिं सखी सहेलरी, हिरदय देखि अनंद।
आजु बदन तोर निरमल, अहै उवा जस चंद ॥४१॥

बाजत गाजत राजा आवा।
नगर चहूँ दिसि बाज बधावा॥
बिहँसि आइ माता सौं मिला।
राम जाइ भेंटी कौसिला॥
भई उहाँ चहुँ खंड बखानी।
रतनसेन पद्मावति आनी॥
बैठ सिंघासन, लोग जोहारा।
निधनी निरगुन दरब बोहारा॥
अगनित दान निछावरि कीन्हा।
मँगतन्ह दान बहुत कै दीन्हा॥
सब दिन राजा दान दिआवा।
भइ निसि, नागमती पहँ आवा॥
नागमती मुख फेरि बईठी।
सौंह न करै पुरुष सौं दीठी॥
ग्रीषम जरत छाँड़ि जो जाई।
सो मुख कौन देखावै आई ?॥
तू जोगी होइगा बैरागी।
हौं जरि छार भइउँ तोहि लागी ?॥

काह हँसौ तुम मोसौं, किएउ और सौं नेह।
तुम्ह मुख चमकै बीजुरी, मोहिं मुख बरसै मेह ॥४२॥

कंठ लाइ कै नारि मनाई।
जरी जो बेलि सींचि पलुहाई॥
जौ भा मेर भएउ रँग राता।
नागमती हँसि पूछी बाता॥

कहहु, कंत ! ओहि देस लोभाने।
कस धनि मिली, भोग कस माने ॥
जौ पद्मावति सुठि होइ लोनी।
मोरे रूप कि सरवरि होनी ? ॥
जहाँ राधिका गोपिन्ह माहाँ।
चंद्रावलि सरि पूज न छाहाँ ॥
भँवर-पुरुष अस रहै न राखा।
तजै दाख, महुआ-रस चाखा ॥
तजि नागेसर फूल सोहावा।
कवँल बिसैंधहिं सौं मन लावा ॥

काह कहौं हौं तोसौं, किछु न हिये तोहि भाव।
इहाँ बात मुख मोसौं, उहाँ जीउ ओहि ठाँव ॥४३॥

संग सहेली नागमति, आपनि बारी माहँ।
फूल चुनहिं, फल तूरहिं रहसि कूदि सुख-छाहँ ॥४४॥

---

[७]

(१) राघव-चेतन देस-निकाला-खण्ड

राघव चेतन चेतन महा।
आऊ सरि राजा पहँ रहा॥
होइ अचेत घरी जौ आई।
चेतन कै सब चेत भुलाई॥
भा दिन एक अमावस सोई।
राजै कहा 'दुइज कब होई?'॥
राघव के मुख निकसा 'आजू'।
पँडितन्ह कहा 'काल्हि, महराजू'॥
राजै दुवौ दिसा फिरि देखा।
इन महँ को बाउर, को सरेखा॥
भुजा टेकि पंडित तब बोला।
'छाँड़हिं देस बचन जौ डोला'॥
तेहि ऊपर राघव बर खाँचा।
'दुइज आजु तौ पंडित साँचा'॥

राघव पूजि जाखिनी, दुइज देखाएसि साँझ।
वेद-पंथ जे नहिं चलहिं ते भूलहिं बन-माँझ॥१॥

पँडितन्ह कहा, परा नहिं धोखा।
कौन अगस्त, समुद जेइ सोखा?॥
सो दिन गएउ साँझ भइ दूजी।
देखी दुइज घरी वह पूजी॥

पँडितन्ह राजहिं दीन्ह असीसा।
अब कस यह कंचन औ सीसा॥
जौ यह दुइज काल्हि कै होती।
आजु तेज देखत ससि-जोती॥
राघव-दिस्टिबंध कल्हि खेला।
सभा माँझ चेटक अस मेला॥
राघव-बैन जो कंचन-रेखा।
कसे बानि पीतर अस देखा॥
अज्ञा भई, रिसान नरेसू।
मारहु नाहिं, निसारहु देसू॥

कवि तौ चेला, विधि गुरू; सीप सेवाती-बुंद।
तेहि मानुष कै आस का जो मरजिया समुंद ?॥२॥

एहि रे बात पदमावति सुनी।
देस निसारा राघव गुनी॥
ज्ञान-दिस्टि धनि अगम बिचारा।
भल न कीन्ह अस गुनी निसारा॥
रानी राघव बेगि हँकारा।
सूर-गहन भा लेहु उतारा॥
बाम्हन जहाँ दच्छिना पावा।
सरग जाइ जौ होइ बोलावा॥
पदमावति जो झरोखे आई।
निहकलंक ससि दीन्ह दिखाई॥
ततखन राघव दीन्ह असीसा।
भएउ चकोर चंदमुख दीसा॥
कँकन एक कर काढ़ि पवारा।

जानहु टूटि बीजु भुइँ परी।
उठा चौंधि राघव चित हरी॥

परा आइ भुइँ कंकन, जगत भएउ उजियार।
राघव बिजुरी मारा, बिसँभर किछु न सँभार॥३॥

सबै सहेली देखै धाईं।
'चेतन चेतु' जगावहिं आई॥
चेतन परा, न आवै चेतू।
सबै कहा 'एहि लाग परेतू'॥
कोई कहै आहि सनिपातू।
कोई कहै कि मिरगी बातू॥
कोइ कह लाग पवन कर झोला।
कैसेहु समुझि न चेतन बोला॥
पुनि उठाइ बैठाएन्हि छाहाँ।
पूछहिं, कौन पीर हिय माहाँ ?॥
दहुँ काहू के दरसन हरा।
की ठग धूत भूत तोहि छरा॥

की तोहि दीन्ह काहु किछु, की रे डसा तोहि साँप ?।
कहु सचेत होइ चेतन, देह तोरि कस काँप॥४॥

बाउर बाहिर सीस पै धुना।
आपनि कहै, पराइ न सुना॥
जानहु लाई काहु ठगौरी।
खन पुकार, खन बातैं बौरी॥
भएउ चेत, चित चेतन चेता।
बहुरि न आइ सहौं दुख एता॥

रोवत आइ परे हम जहाँ।
रोवत चले, कौन सुख तहाँ ? ॥
जहाँ रहे संसौ जिउ केरा।
कौन रहनि ? चलि चलै सबेरा ॥

कवँल बखानौं जाइ तहँ जहँ अलि अलाउदीन।
सुनि कै चढ़ै भानु होइ, रतन जो होइ मलीन ॥ ५ ॥

---

(२) राघव-चेतन-दिल्ली-गमन-खण्ड

राघव चेतन कीन्ह पयाना।
दिल्ली नगर जाइ नियराना ॥
आइ साह के बार पहूँचा।
देखा राज जगत पर ऊँचा ॥
जहँ लगि तपै जगत पर भानू।
तहँ लगि राज करै सुलतानू ॥
चहूँ खंड के राजा आवहिं।
ठाढ़ झुराहिं, जोहार न पावहिं ॥
मन तेवान कै राघव झूरा।
नाहिं उबार, जीउ-डर पूरा ॥
बादसाह सब जाना बूझा।
सरग पतार हिये महँ सूझा ॥
पंथी परदेसी जत आवहिं।
सब कै चाह दूत पहुँचावहिं ॥

एहू बात तहँ पहुँची, सदा छत्र सुख-छाहँ !
बाम्हन एक बार है, कँकन जराऊ बाहँ ॥ ६ ॥

मया साह मन सुनत भिखारी।
परदेसी को ? पूछु हँकारी॥
राघव चेतन हुत जो निरासा।
ततखन बेगि बुलावा पासा॥
सीस नाइ कै दीन्ह असीसा।
चमकत नग कंकन कर दीसा॥
अज्ञा भइ पुनि राघव पाहाँ।
तू मंगन, कंकन का बाहाँ?
राघव फेरि सीस भुइँ धरा।
जुग जुग राज भानु कै करा॥
पदमिनि सिंघलदीप के रानी।
रतनसेन चितउरगढ़ आनी॥
कवँल न सरि पूजै तेहि बासा।
रूप न पूजै चंद अकासा॥

सोइ रानी संसार-मनि दछिना कंकन दीन्ह।
अछरी-रूप देखाइ कै जीउ झरोखे लीन्ह॥७॥

सुनि कै उतर साहि मन हँसा।
जानहु बीजु चमकि परगसा॥
काँच जोग जेहि कंचन पावा।
मंगन ताहि सुमेरु चढ़ावा॥
नावँ भिखारि जीभ मुख बाँची।
अबहुँ सँभारि बात कहु साँची॥
कहँ अस नारि जगत उपराहीं।
जेहि के सरि सूरुज ससि नाहीं?॥
जो पदमिनि सो मंदिर मोरे।
सातौ दीप जहाँ कर जोरे॥

सात दीप महँ चुनि चुनि आनी।
सो मोरे सोरहसै रानी॥
जौ उन्ह कै देखसि एक दासी।
देखि लोन होइ लोन बिलासी॥

चहूँ खंड हौं चक्कवै, जस रबि तपै अकास॥
जौ पदमिनि तौ मोरे, अछरी तौ कैलास॥८॥

तुम बड़ राज छत्रपति भारी।
अनु बाम्हन मैं अहौं भिखारी॥
चारिउ खंड भीख कहँ बाजा।
उदय अस्त तुम्ह ऐस न राजा॥
सातौ दीप देखि हौं आवा।
तब राघव चेतन कहवावा।

---

(३) पद्मावती-रूप-चर्चा-खंड

वह पदमिनि चितउर जो आनी।
काया कुंदन द्वादस बानी॥
कुंदन कनक ताहि नहिं बासा।
वह सुगंध जस कँवल बिगासा॥
ओहि छुइ पवन बिरिछ जेहि लागा।
सोइ मलयगिरि भएउ सभागा॥
सबै चितेर चित्र कै हारे।
ओहिक रूप कोइ लिखै न पारे॥

सुरुज-किरिन जसि निरमल तेहितें अधिक सरीर।
सौंह दिस्टि नहिं जाइ करि, नैनन्ह आवै नीर॥६॥

जौ राघव धनि बरनि सुनाई।
सुना साह, गइ मुरछा आई॥
जनु मूरत वह परगट भई।
दरस दिखाइ माहिं छपि गई॥
मन होइ भँवर, भएउ बैरागा।
कँवल छाँड़ि चित और न लागा॥
तब कह अलाउदीं जग-सूरू।
लेउँ नारि चितउर कै चूरू॥
पान दीन्ह राघव पहिरावा।
दस गज हस्ति घोड़ सो पावा॥
सरजा बीर पुरुष बरियारू।
ताजन नाग, सिंह असवारू॥
दीन्ह पत्र लिखि, बेगि चलावा।
चितउर-गढ़ राजा पहँ आवा॥

राजै पत्रि बँचाबा, लिखी जो करा अनेग।
सिंघल कै जो पदमिनी, पठै देहु तेहि बेग॥१०॥

---

(३) बादशाह-चढ़ाई-खंड

सुनि अस लिखा उठा जरि राजा।
जानौ दैउ तड़पि घन गाजा॥
का मोहिं सिंह देखावसि आई।
कहौं तौ सारदूल धरि खाई॥
भलेहिं साह पुहुमीपति भारी।
माँग न कोइ पुरुष कै नारी॥

को मोहि तें अस सूर अपारा।
चढ़ै सरग, खसि परै पतारा॥
हौं रनथँभउर-नाह हमीरू॥
कलपि माथ जेइ दीन्ह सरीरू॥
हौं सो रतनसेन सक-बंधी।
राहु बेधि जीता सैरंधी॥
बिक्रम सरिस कीन्ह जेइ साका।
सिंघलदीप लीन्ह जौ ताका॥
जौ अस लिखा भएउँ नहिं ओछा।
जियत सिंघ कै गह को मोछा?॥

दरब लेइ तौ मानौं, सेव करौं गहि पाउ।
चाहै जौ सो पदमिनी सिंघलदीपहि जाउ॥११॥

बोलु न, राजा! आपु जनाई।
लीन्ह देवगिरि और छिताई॥
जेहि कै सेव करै संसारा।
सिंघलदीप लेत कित बारा?॥
जिनि जानसि यह गढ़ तोहिं पाहीं।
ताकर सबै, तोर किछु नाहीं॥
जेहि दिन आइ गढ़ी कहँ छेकिहि।
सरबस लेइ, हाथ को टेकिहि?॥
तुरुक! जाइ कहु मरै न धाई।
होइहि इसकंदर कै नाई॥
सुनि अमरित कदलीबन धावा।
हाथ न चढ़ा, रहा पछितावा॥
औ तेहि दीप पतँग होइ परा।
अगिनि-पहार पाँव देइ जरा॥

महूँ समुझि अस अगमन सजि राखा गढ़ साजु ।
कालिह होइ जेहि आवन सो चलि आवै आजु ॥१२॥

सरजा पलटि साह पहँ आवा ।
देव न मानै बहुत मनावा ॥
सुनि कै अस राता सुलतानू ।
जैसे तपै जेठ कर भानू ॥
सहसौ करा रोष अस भरा ।
जेहि दिसि देखै तेइ दिसि जरा ॥
दुंद घाव भा, इंद्र सकाना ।
डोला मेरु, सेस अकुलाना ॥
धरती डोलि, कमठ खरभरा ।
मथन–अरंभ समुद महँ परा ॥
साह बजाइ चढ़ा, जग जाना ।
तीस कोस भा पहिल पयाना ॥
बरन बरन औ पाँतिहि पाँती ।
चली सो सेना भाँतिहि भाँती ॥

सात सात जोजन कर एक दिन होइ पयान ।
अगिलहिं जहाँ पयान होइ पछिलहि तहाँ मिलान ॥१३॥

डोले गढ़, गढ़पति सब काँपे ।
जोउ न पेट, हाथ हिय चाँपे ॥
काँपा रनथँभउर, गढ़ डोला ।
नरवर गएउ झुराइ, न बोला ॥
दूतन्ह आइ कहा जहँ राजा ।
चढ़ा तुरुक आवै दर साजा ॥

सुनि राजा दौराई पाती।
हिंदू-नावँ जहाँ लगि जाती ॥
चितउर हिंदुन कर अस्थाना।
सत्रु तुरुक हठि कीन्ह पयाना ॥
आव समुद्र रहै नहिं बाँधा।
मैं होइ मेड़ भार सिर काँधा ॥
पुरवहु साथ, तुम्हारि बड़ाई।
नाहिं त सत को पार छँड़ाई ?॥
जौ लहि मेड़ रहै सुख-साखा।
टूटे बारि जाइ नहिं राखा ॥

सती जौ जिउ महँ सत धरै, जरै न छाँड़े साथ।
जहँ बीरा तहँ चून है पान, सोपारी, काथ ॥१४॥

करत जो राय साह कै सेवा।
तिन्ह कहँ आइ सुनाव परेवा ॥
सब होइ एकमते जो सिधारे।
बादसाह कहँ आइ जोहारे ॥
है चितउर हिंदुन्ह कै माता।
गाढ़ परे तजि जाइ न नाता ॥
कृपा करहु चित बाँधहु धीरा।
नाहिंत हमहिं देहु हँसि बीरा ॥
पुनि हम जाइ मरहिं ओहि ठाऊँ।
मेटि न जाइ लाज सौं नाऊँ ॥
रतनसेन चितउर महँ साजा।
आइ बजाइ बैठ सब राजा ॥
सजि संग्राम बाँध सब साका।
छाँड़ा जियन, मरन सब ताका ॥

गगन धरति जेइ टेका, तेहि का गरू पहार ? ।
जौ लहि जिउ काया महँ, परै सो अँगवै भार ॥१५॥

बादसाह हठि कीन्ह पयाना ।
इंद्र–भँडार डोल, भय माना ॥
टूटहिं परबत मेरु पहारा ।
होइ चकचून उड़हिं तेहि झारा ॥
गगन छपान खेह तस छाई ।
सूरुज छपा, रैनि होइ आई ॥
दिनहिं रात अस परी अचाका ।
भा रबि अस्त, चंद्र, रथ हाँका ॥
मंदिर जगत दीप परगसे ।
पंथी चलत बसेरै बसे ॥
दिन के पंखि चरत उड़ि भागे ।
निसि के निसरि चरै सब लागे ।
कँवल सँकेता; कुमुदिन फूली ।
चकवा बिछुरा, चकई भूली ॥
चला कटक–दल ऐस अपूरी ।
अगिलहि पानी, पछिलहि धूरी ॥
महि उजरी, सायर सब सूखा ।
बनखँड रहेउ न एकौ रूखा ॥

जिन्ह घर खेह हेराने हेरत फिरत सो खेह ।
अब तौ दिस्टि तब आवै अंजन नैन उरेहु ॥१६॥

एहि बिधि होत पयान सो आवा ।
आइ साह चितउर नियरावा ॥
राजै कहा करहु जो करना ।
भएउ असूझ, सूझ अब मरना ॥

जहँ लगि राज साज सब होऊ।
ततखन भएउ सँजोउ सँजोऊ॥
बाजे तबल अकूत जुझाऊ।
चढ़े कोप सब राजा राऊ॥
करहिं तुखार पवन सौं रीसा।
कंध ऊँच, असवार न दीसा॥
का बरनौं अस ऊँच तुखारा।
दुइ पौरी पहुँचै असवारा॥
चढ़हिं कुंवर मन करहिं उछाहू।
आगे घाल गनहिं नहिं काहू॥
सेंदुर सीस चढ़ाए, चंदन खेवरे देह।
सो तन कहा लुकाइय अंत होइ जो खेह॥१७॥

गज मैमँत बिखरे रजबारा।
दीसहिं जनहुँ मेघ अति कारा॥
परबत उलटि भूमि महँ मारहिं।
परै जो भीर पत्र अस झारहिं॥
माथे मुकुट, छत्र सिर साजा।
चढ़ा बजाइ इन्द्र अस राजा॥
आगे रथ सेना सब ठाढ़ी।
पाछे धुजा मरन कै काढ़ी॥
जानहु चाँद नखत लेइ चढ़ा।
सूर कै कटक रैनि-मसि मढ़ा॥
जौ लगि सूर जाइ देखरावा।
निकसि चाँद घर बाहर आवा॥
गगन नखत जस गने न जाहीं।
निकसि आए तस धरती माहीं॥

देखि अनी राजा कै जग होइ गएउ असूझ।
दहुँ कस होवै चाहै चाँद सूर के जूझ॥ १८॥

---

(५) राजा—बादशाह-युद्ध खण्ड

इहाँ राज अस सेन बनाई।
उहाँ साह कै भई अवाई॥
अगिले दौरे आगे आए।
पछिले पाछ कोस दस छाए॥
साह आइ चितउर गढ़ बाजा।
हस्ती सहस बीस सँग साजा॥
ओनइ आए दूनौ दल साजे।
हिंदू तुरक दुवौ रन गाजे॥
दुवौ समुद दधि उदधि अपारा।
दूनौ मेरु खिखिंद पहारा॥
कोपि जुझार दुवौ दिसि मेले।
औ हस्ती हस्ती सहुँ पेले॥
हस्ती सहुँ हस्ती हठि गाजहिं।
जनु परबत परबत सौं बाजहिं॥
गरू गयंद न टारे टरहीं।
टूटहिं दाँत, माथ गिरि परहीं॥
परबत आइ जो परहिं तराहीं।
दर महँ चाँपि खेह मिलि जाहीं॥

गगन रुहिर जस बरसै धरती बहै मिलाइ।
सिर धर टूटि बिलाहिं तस पानी पंक बिलाइ॥१६॥

बाजहिं खड़्ग उठै दर आगी।
भुइँ जरि चहै सरग कहँ लागी॥
चमकहिं बीजु होइ उजियारा।
जेहि सिर परै होइ दुइ फारा॥
मेघ जो हस्ति हस्ति सहुँ गाजहिं।
बीजु जो खड़्ग खड़्ग सौं बाजहिं॥
झपटहिं कोपि, परहिं तरवारी।
औ गोला ओला जस भारी॥
जूझे बीर कहौं कहँ ताईं।
लेइ अछरी कैलास सिधाईं॥
भा संग्राम न भा अस काऊ।
लोहे दुहुँ दिसि भए अगाऊ॥
सीस कंध कटि कटि भुइँ परे।
रुहिर सलिल होइ सायर भरे॥

काहू साथ न तन गा, सकति मुए सब पोखि।
ओछ पूर तेहि जानब, जो थिर आवत जोखि॥२०॥

चाँद न टरै सूर सौं कोपा।
दूसर छत्र सौंह कै रोपा॥
सुना साह अस भएउ समूहा।
पेले सब हस्तिन्ह के जूहा॥
आजु चाँद तोर करौं निपातू।
रहै न जग महँ दूसर छातू॥
सहस करा होइ किरिन पसारा।
छेंका चाँद जहाँ लगि तारा॥

कटक असूझ अलाउदिं-साही।
आवत कोइ न सँभारै ताही॥
उदधि-समुद जस लहरैं देखी।
नयन देखि, मुख जाइ न लेखी॥
लाख जाहिं आवहिं दुइ लाखा।
फरै झरै उपनै नव साखा॥
लाग कटक चारिहु दिसि, गढ़हि परा अगिदाहु।
सुरुज गहन भा चाहै, चाँदहि भा जस राहु॥२१॥
चारि पहर दिन जूझ भा, गढ़ न टूट तस बाँक।
गरुअ होत पै आवै दिन दिन नाकहि नाक॥२२॥
आठ बरिस गढ़ छेंका रहा।
धनि सुलतान, कि राजा महा॥
आइ साइ अँबराव जो लाए।
फरे झरे पै गढ़ नहिं पाए॥
जौ तोरों तौ जौहर होई।
पदमिनि हाथ चढ़ै नहिं सोई॥
एहि बिधि ढील दीन्ह, तब ताईं।
दिल्ली तैं अरदासैं आईं॥
पछिउँ हरेव दीन्हि जो पीठी।
सो अब चढ़ा सौंह कै दीठी॥
जिन्ह भुइँ माथ, गगन तेइ लागा।
थाने उठे, आव सब भागा॥
उहाँ साह चितउरगढ़ छावा।
इहाँ देस अब होइ परावा॥
जिन्ह जिन्ह पंथ न तृन परत, बाढ़े बेर बबूर।
निसि अँधियारी जाइ तब बेगि उठै जौ सूर॥२३॥

---

(१) राजा—बादशाह-मेल-खण्ड ।

सुना साह अरदासैं पढ़ी ।
चिंता आन आनि चित चढ़ी ॥
तौ अगमन मन चीतै कोई ।
जौ आपन चीता किछु होई ॥
मन झूठा, जिउ हाथ पराए ।
चिंता एक हिये दुइ ठाएँ ॥
गढ़ सौं अरुझि जाइ तब छूटै ।
होइ मेराव, कि सो गढ़ टूटै ॥
पाहन कर रिपु पाहन हीरा ।
बेधौं रतन पान देइ बीरा ॥
सरजा सेंति कहा यहा भेऊ ।
पलटि जाहु अब मानहु सेऊ ॥
कहु तोहि सौं पदमिनि नहिं लेऊँ ।
चूरा कीन्ह छाँड़ि गढ़ देऊँ ॥

आपन देस खाहु सब औ चंदेरी लेहु ।
समुद जो समदन कीन्ह तोहि ते पाँचौ नग देहु ॥१॥

सरजा पलटि सिंघ चढ़ि गाजा ।
अज्ञा जाइ कही जहँ राजा ॥
अबहूँ हिये समुझु रे, राजा ।
बादसाह सौं जूझ न छाजा ॥

जेहि कै देहरी पृथिवी सेई।
चहै तौ मारै औ जिउ लेई॥
पिंजर माहँ तोहि कीन्ह परेवा।
गढ़पति सोइ बाँचै कै सेवा॥
जौ लगि जीभ अहै मुख तोरे।
सँवरि उघेलु बिनय कर जोरे॥
पुनि जौ जीभ पकरि जिउ लेई।
को खोलै, को बोलै देई?॥
आगे जस हमीर मैमंता।
जौ तस करसि तोर भा अंता॥

देखु! कालिह गढ़ टूटै, राज ओही कर होइ।
करु सेवा सिर नाइ कै, घर न घालु बुधि खोइ॥२॥

सरजा! जौ हमीर अस ताका।
और निबाहि बाँधि गा साका॥
हौं सक-बंधी ओहि अस नाहीं।
हौं सो भोज विक्रम उपराहीं॥
बरिस साठ लगि साँठि न खाँगा।
पानि पहार चुवै बिनु माँगा॥
तेहि ऊपर जौ पै गढ़ टूटा।
सत सकबंधी केर न छूटा॥
सोरह लाख कुंवर हैं मोरे।
परहिं पतँग जस दीप-अँजोरे॥
जेहि दिन चाँचरि चाहौं जोरी।
समदौं फागु लाइ कै होरी॥
जौ निसि बीच, डरै नहिं कोई।
देखु तौ कालिह काह दहुँ होई॥

अबहीं जौहर साजिकै, कीन्ह चहौं उजियार।
होरी खेलौं रन कठिन, कोइ समेटै छार॥ ३॥

सरजै सपथ कीन्ह छल बैनहि मीठै मीठ।
राजा कर मन माना, माना तुरत बसीठ॥४॥

---

(२) चित्तौरगढ़—वर्णन-खण्ड

जेवाँ साह जो भएउ बिहाना।
गढ़ देखै गवना सुलताना॥
कवँल सहाय सूर सँग लीन्हा।
राघव चेतन आगे कीन्हा॥
ततखन आइ बिवाँन पहूँचा।
मन तें अधिक, गगन तें ऊँचा॥
उघरी पवँरि, चला सुलतानू।
जानहु चला गगन कहँ भानू॥
पवँरी सात, सात खँड बाँके।
सातौ खंड गाढ़ दुइ नाके॥
आजु पवँरि-मुख भा निरमरा।
जौ सुलतान आइ पग धरा॥
बादसाह चढ़ि चितउर देखा।
सब संसार पाँव तर लेखा॥

देखा साह गगन-गढ़ इंद्रलोक कर साज।
कहिय राज फुर ताकर सरग करै अस राज॥ ५॥

देखत साह कीन्ह तहँ फेरा।
जहँ मंदिर पदमावति केरा॥

आस पास सरवर चहुँ पासा।
माँझ मँदिर जनु लाग अकासा॥
परगट कह राजा सौं बाता।
गुपुत प्रेम पदमावति-राता॥
गोरा बादल राजा पाहाँ।
रावत दुवौ दुवौ जनु बाहाँ॥
आइ स्रवन राजा के लागे।
मूसि न जाहिं पुरुष जो जागे॥
बाचा परखि तुरुक हम बूझा।
परगट मेर, गुपुत छल सूझा॥
तुम नहिं करौ तुरुक सौं मेरू।
छल पै करहिं अंत कै फेरू॥

यह सो कृस्न बलिराज जस, कीन्ह चहै छर-बाँध।
हम्ह बिचार अस आवै, मेर न दीजिय काँध॥ ६॥

सुनि राजहि यह बात न भाई।
जहाँ मेर तहँ नहिं अधमाई॥
मंदहि भल जो करै भल सोई।
अंतहि भला भले कर होई॥
सत्रु जो विष देइ चाहै मारा।
दीजिय लोन जानि विष हारा॥
कौरव विष जो पंडवन्ह दीन्हा।
अंतहि दाँव पंडवन्ह लीन्हा॥
राजा कै सोरह सै दासी।
तिन्ह महँ चुनि काढ़ी चौरासी॥
बरन बरन सारी पहिराईं।
निकसि मँदिर तें सेवा आईं॥

जानहुँ इंद्रलोक तें काढ़ीं।
पाँतिहि पाँति भईं सब ठाढ़ी ॥

साह पूछ राघव पहँ, ए सब अछरी आहिं।
तुइ जो पदमिनि बरनी, कहु सो कौन इन माहिं ॥ ७ ॥

दीरघ आउ, भूमिपति भारी।
इन महँ नाहिं पदमिनी नारी ॥
यह फुलवारि सो ओहि कै दासी।
कहँ केतकी भँवर जहँ बासी ॥
ए सब तरईं सेव कराहीं।
कहँ वह ससि देखत छपि जाहीं ॥
भइ जेवनार फिरा खँड़वानी।
फिरा अरगजा कुहँकुहँ-पानी ॥
नग अमोल जो थारहि भरे।
राजै सेव आनिकै धरे ॥
सुनि बिनती बिहँसा सुलतानू।
सहसौ करा दिपा जस भानू ॥
हँसि हँसि बोलै, टेकै काँधा।
प्रीति भुलाइ चहै छल बाँधा ॥

माया-बोल बहुत कै साह पान हँसि दीन्ह।
पहिले रतन हाथ कै चहै पदारथ लीन्ह ॥ ८ ॥

माया-मोह-बिबस भा राजा।
साह खेल सतरँज कर साजा ॥
राजा ! है जौ लगि सिर घामू।
हम तुम घरिक करहिं बिसरामू ॥
दरपन साह भीति तहँ लावा।
देखौं जबहि झरोखे आवा ॥

खेलहिं दुऔ साह औ राजा।
साह कै रुख दरपन रह साजा॥
सूर देख जौ तरई-दासी।
जहँ ससि तहाँ जाइ परगासी॥
सुना जो हम दिल्ली सुलतानू।
देखा आजु तपै जस भानू॥
ऊँच छत्र जाकर जग माहाँ।
जग जो छाहँ सब ओहिकै छाहाँ॥

बादसाह दिल्ली कर कित चितउर महँ आव।
देखि लेहु, पदमावति! जेहि न रहै पछिताव॥६॥

बिगसै कुमुद कहे ससि ठाऊँ।
बिगसै कँवल सुने रबि-नाऊँ॥
भइ निसि, ससि धौराहर चढ़ी।
सोरह कला जैस बिधि गढ़ी॥
बिहँसि झरोखे आइ सरेखी।
निरखि साह दरपन महँ देखी॥
होतहि दरस परस भा लोना।
धरती सरग भएउ सब सोना॥
रुख माँगत रुख ता सहुँ भएऊ।
भा शह मात, खेल मिट गएऊ॥
राजा भेद न जानै झाँपा।
भा बिसँभार, पवन बिनु काँपा॥
राघव कहा कि लागि सोपारी।
लेइ पौढ़ावहिं सेज सँवारी॥
राघव चेति साह पहँ गएऊ।
सूरज देखि कँवल बिसमयऊ॥

दिनहि नयन लाएहु तुम, रैनि भएहु नहिं जाग।
कस निचिंत अस सोएहु, काह बिलँब अस लाग ? ॥१०॥

देखि एक कौतुक हौं रहा।
रहा अँतरपट पै नहिं अहा॥
सरवर देख एक मैं सोई।
रहा पानि पै पानि न होई॥
सरग आइ धरती महँ छावा।
रहा धरति पै धरत न आवा॥
तिन्ह महँ पुनि एक मंदिर ऊँचा।
करन्ह अहा पै कर न पहूँचा॥
तेहि मंडप मूरति मैं देखी।
बिनु तन, बिनु जिउ जाइ बिसेखी॥
पूरन चंद होइ जनु तपी।
पारस रूप दरस देइ छपी॥

राघव ! हेरत जिउ गएउ, कित आछत जो असाध ?
यह तन राख पाँख कै सकै न केहि अपराध ? ॥११॥

राघव सुनत सीस भुइँ धरा।
जुग जुग राज भानु कै करा॥
उहै कला, वह रूप बिसेखी।
निसचै तुम्ह पदमावति देखी॥

---

(३) रत्नसेन–बंधन–खण्ड

मीत भै माँगा बेगि बिवाँनू।
चला सूर, सँवरा अस्थानू॥

चाँद घरहि जौ सूरुज आवा।
होइ सो अलोप अमावस पावा॥
पूछहिं नखत मलीन सो मोती।
सोलह कला न एकौ जोती॥
चाँद क गहन अगाह जनावा।
राज भूल गहि साह चलावा॥
एहि जग बहुत नदी-जल जूड़ा।
कोउ पार भा, कोऊ बूड़ा॥
कोउ अंध भा आगु न देखा।
कोउ भएउ डिठियार सरेखा॥
राजा कहँ बियाध भइ माया।
तजि कैलास धरा भुइँ पाया॥
चारा मेलि धरा जस माछू।
जल हुँत निकसि मुवै कित काछू?॥
पायँन्ह गाढ़ी बेड़ी परी।
साँकर गीउ, हाथ हथकरी॥
औ धरि बाँधि मँछूषा मेला।
ऐस सत्रु जिनु होइ दुहेला!॥
सुनि चितउर महँ परा बखाना।
देस देस चारिउ दिसि जाना॥

आजु धरा बलि राजा, मेला बाँधि पतार।
आजु सूर दिन अथवा, भा चितउर अँधियार॥१२॥

साहि लीन्ह गहि कीन्ह पयाना।
जो जहँ सत्रु सो तहाँ बिलाना॥
उवा सूर, भइ सामुँह करा।
पाला फूट, पानि होइ ढरा॥

दुंदुहि डाँड़ दीन्ह, जहँ ताईं।
आइ दंडवत कीन्ह सबाईं॥
दुंद डाँड़ सब सरगहि गई।
भूमि जो डोली अहथिर भई॥

बादसाह दिल्ली महँ, आइ बैठ सुख-पाट।
जेइ जेइ सीस उठावा धरती धरा लिलाट॥१३॥

---

(१) पद्मावती-नागमती-विलाप-खण्ड

पद्मावति बिनु कंत दुहेली।
बिनु जल कँवल सूखि जस बेली॥
गाढ़ी प्रीति सो मोसौं लाए।
दिल्ली कंत निचिंत होइ छाए॥
सो दिल्ली अस निबहुर देसू।
कोइ न बहुरा कहै सँदेसू॥
जो गवनै सो तहाँ कर होई।
जो आवै किछु जान न सोई॥
अगम पंथ पिय तहाँ सिधावा।
जो रे गएउ सो बहुरि न आवा॥
कुवाँ धार जल जैस बिछोवा।
डोल भरे नैनन्ह धनि रोवा॥
लेजुरि भई नाह बिनु तोहीं।
कुवाँ परी, धरि काढ़सि मोहीं॥

नैन-डोल भरि ढारै, हिये न आगि बुझाइ।
घरी घरी जिउ आवै, घरी घरी जिउ जाइ॥ १॥

नीर गँभीर कहाँ, हो पिया!
तुम्ह बिनु फाटै सरवर-हिया॥
गएहु हेराइ, परेहु केहि हाथा?।
चलत सरोवर लीन्ह न साथा॥

चरत जो पंखि केलि कै नीरा।
नीर घटे कोइ आव न तीरा ॥
वल सूख, पखुरी बेहरानी।
गलि गलि कै मिलि छार हेरानी ॥
बरह-रेत कंचन तन लावा।
चून चून कै खेह मेरावा ॥
कनक जो कन कन होइ बेहराई।
पिय कहँ ? छार समेटै आई ॥
बिरह-पवन बह छार सरीरू।
छारहि आनि मेरावहु नीरू ॥

अबहुँ जियावहु कै मया, बिथुरी छार समेट।
नइ काया, अवतार नव होइ तुम्हारे भेंट ॥ २ ॥

नागमतिहि 'पिय पिय' रट लागी।
निसि दिन तपै मच्छ जिमि आगी ॥
भँवर, भुजंग कहाँ, हो पिया।
हम ठेघा, तुम्ह कान न किया ॥
भूलि न जाहि कँवल के पाहाँ।
बाँधत बिलँब न लागै नाहा ॥
कहाँ सो सूर पास हौं जाऊँ!
बाँधा भँवर छोरि कै लाऊँ ॥
कहाँ जाउँ, को कहै सँदेसा ?।
जाउँ सो तहँ जोगिनि के भेसा ॥
फारि पटोरहि, पहिरौं कंथा।
जौ मोहिं कोउ देखावै पंथा ॥
वह पथ पलकन्ह जाइ बोहारौं।
सीस चरन कै तहाँ सिधारौं ॥

को गुरु अगुवा होइ, सखि ! मोहि लावै पथ माहँ ।
तन मन धन बलि बलि करौं जो रे मिलावै नाह ।।३।।

पिय बिनु व्याकुल बिलपै नागा ।
बिरहा-तपनि साम भए कागा ।।
पवन पानि कहँ सीतल पीऊ ? ।
जेहि देखे पलुहै तन जीऊ ।।
कहँ सो बास मलयगिरि नाहा ।
जेहि कल परति देत गल बाहाँ ।।
पदमिनि ठगिनी भइ कित साथा ।
जेहिं तें रतन परा पर-हाथा ।।
होइ बसंत आवहु पिय केसरि ।
देखे फिर फूलै नागेसरि ।।
तुम्ह बिनु, नाह ! रहै हिय तचा ।
अब नहिं बिरह-गरुड़ सौं बचा ।।
अब अँधियार परा, मसि लागी ।
तुम्ह बिनु कौन बुझावै आगी ?।।

नैन, स्रवन, रस रसना सबै खीन भए, नाह ।
कौन सो दिन जेहि भेंटि कै, आइ करै सुख-छाँह ।। ४ ।।

---

(२) पद्मावती-गोरा-बादल-संवाद

सखिन्ह बुझाई दगध अपारा ।
गइ गोरा बादल के बारा ।।
"उलटि बहा गंगा कर पानी ।
सेवक—बार आइ जो रानी" ।।

"तुम गोरा बादल खँभ दोऊ।
जस रन पारथ और न कोऊ ॥
दुख बरखा अब रहै न राखा।
मूल पतार, सरग भइ साखा ॥
छाया रही सकल महि पूरी।
बिरह—बेलि भइ बाढ़ि खजूरी ॥
पुहुमि पूरि, सायर दुख पाटा।
कौड़ी केर बेहरि हिय फाटा ॥
पिय जेहि बंदि जोगिनि होइ धावौं।
हौं बँदि लेउँ, पियहि मुकरावौं" ॥

सूरुज गहन—गरासा, कँवल न बैठे पाट।
महूँ पंथ तेहि गवनब, कंत गए जेहि बाट ॥५॥

गोरा बादल दोउ पसीजे।
रोवत रुहिर बूड़ि तन भीजे ॥
हम राजा सौं इहै कोहाँने।
तुम न मिलौ, धरि हैं तुरकाने ॥
जो मति सुनि हम गए कोहाँई।
सो निआन हम्ह माथे आई ॥
जौ लगि जिउ, नहिं भागहिँ दोऊ।
स्वामि जियत कत जोगिनि होऊ? ॥
लीन्ह पान बादल औ गोरा।
"केहि लेइ देउँ उपम तुम्ह जोरा ? ॥
तुम सावंत, न सरवरि कोऊ।
तुम हनुवंत अँगद सम दोऊ ॥
जस हनुवँत राघव बँदि छोरी।
तस तुम छोरि मेरावहु जोरी" ॥

करि हठ कंत जाइ जेहि लाजा।
घूँघुट लाज आव केहि काजा ?॥
तब धनि बिहँसि कहा गहि फेंटा।
नारि जो बिनवै कंत न भेंटा॥
आजु गवन हौं आई, नाहाँ।
तुम न, कंत ! गवनहु रन माहाँ॥
गवन आव धनि मिलै के ताईं।
कौन गवन जौ बिछुरै साईं॥
धनि न नैन भरि देखा पीऊ।
पिउ न मिला धनि सौं भरि जीऊ॥

पायँन्ह धरा लिलाट धनि, विनय सुनहु, हो राय !
अलक परी फँदवार होइ, कैसेहु तजै न पाय ॥६॥

छाँड़ि फेंट धनि बादल कहा।
पुरुष-गवन धनि फेंट न गहा॥
जौ तुइ गवन आइ, गजगामी।
गवन मोर जहँवाँ मोर स्वामी॥
जौ लगि राजा छूटि न आवा।
भावै बीर, सिँगार न भावा॥
एकौ बिनति न मानै नाहाँ।
आगि परी चित उर धनि माहाँ॥
उठा जो धूम नैन करुवाने।
लागे परै आँसु झहराने॥
चुइ चुइ काजर आँचर भीजा।
तबहुँ न पिउ कर रोवँ पसीजा॥

छाँड़ि चला, हिरदय देइ दाहू।
निठुर नाह आपन नहिं काहू॥
रोए कंत न बहुरै, तेहि रोए का काज?
कंत धरा मन जूझ रन, धनि साजा सर साज॥१०॥

---

(४) गोरा-बादल-युद्ध-खण्ड

मतैं बैठि बादल औ गोरा।
सो मत कीज परै नहिं भोरा॥
सुबुधि सौं ससा सिंघ कहँ मारा।
कुबुधि सिंघ कूआँ परि हारा॥
जस तुरकन्ह राजा छर साजा।
तस हम साजि छोड़ावहिं राजा॥
सोरह सै चंडोल सँवारे।
कुँवर सजोइल कै बैठारे॥
पद्मावति कर सजा बिवानू।
बैठ लोहार न जानै भानू॥
साजि सबै चंडोल चलाए।
सुरँग ओहार, मोति बहु लाए॥
भए सँग गोरा बादल बली।
कहत चले पद्मावति चली॥
राजहि चलीं छोड़ावै तहँ रानी होइ ओल।
तीस सहस तुरि खिंचीं सँग, सौरह सै चंडोल॥११॥

राजा बँदि जेहि के सौंपना।
गा गोरा तेहि पहँ अगमना॥

टका लाख दस दीन्ह अँकोरा।
बिनती कीन्हि पायँ गहि गोरा॥
बिनवा बादसाह सौं जाई।
अब रानी पदमावति आई॥
बिनती करै आइ हौं दिल्ली।
चितउर कै मोहि स्यो है किल्ली॥
बिनती करै जहाँ है पूँजी।
सब भँडार कै मोहि स्यो कूँजी॥
एक घरी जौ अज्ञा पावौं।
राजहिं सौंपि मँदिर महँ आवौं॥
तब रखवार गए सुलतानी।
देखि अँकोर भए जस पानी॥

लीन्ह अँकोर हाथ जेहि जीउ दीन्ह तेहि हाथ।
जहाँ चलावै तहँ चलै, फेरे फिरै न माथ॥१२॥

जाइ साह आगे सिर नावा।
ए जगसूर! चाँद चलि आवा॥
जावत हैं सब नखत तराईं।
सोरह सै चंडोल सो आईं॥
चितउर जेति राज कै पूँजी।
लेइ सो आइ पदमावति कूँजी॥
बिनती करै जोरि कर खरी।
लेइ सौंपौं राजा एक घरी॥
आज्ञा भई, जाइ एक घरी।
छूँछि जो घरी फेरि बिधि भरी॥
चलि बिवान राजा पहँ आवा।
सँग चंडोल जगत सब छावा॥

पदमावति के भेस लोहारू।
निकसि काटि बँदि कीन्ह जोहारू॥
उठा कोपि जस छूटा राजा।
चढ़ा तुरंग, सिंघ अस गाजा॥
गोरा बादल खाँड़ै काढ़े।
निकसि कुँवर चढ़ि चढ़ि भए ठाढ़े॥
तीख तुरंग गगन सिर लागा।
केहुँ जुगुति करि टेकी बागा॥
जो जिउ ऊपर खड़्ग सँभारा।
मरनहार सो सहसन्ह मारा॥

भई पुकार साह सौं, ससि औ नखत सो नाहिं।
छर कै गहन गरासा, गहन गरासे जाहिं॥१३॥

लेइ राजा चितउर कहँ चले।
छूटेउ सिंघ, मिरिग खलभले॥
चढ़ा साहि, चढ़ि लाग गोहारी।
कटक असूझ परी जग कारी॥
फिरि गोरा बादल सौं कहा।
गहन छूटि पुनि चाहै गहा॥
चहुँ दिसि आवै लोपत भानू।
अब इहै गोइ, इहै मैदानू॥
तुइ अब राजहि लेइ चलु गोरा।
हौं अब उलटि जुरौं भा जोरा॥
वह चौगान तुरुक कस खेला।
होइ खेलार रन जुरौं अकेला॥
तौ पावौं बादल अस नाऊँ।
जौ मैदान गोइ लेइ जाऊँ॥

आजु खड़ग चौगान गहि करौं सीस-रिपु गोइ।
खेलौं सौंह साह सौं, हाल जगत महँ होइ ॥१४॥

तब अगमन होइ गोरा मिला।
तुइ राजहि लेइ चलु, बादला! ॥
मैं अब आउ भरी औ भूँजी।
का पछिताव आउ जौ पूजी? ॥
बहुतन्ह मारि मरौं जौ जूझी।
तुम जिनि रोएहु तौ मन बूझी ॥
कुँवर सहस सँग गोरा लीन्हे।
और बीर बादल सँग कीन्हे ॥
गोरहि समदि मेघ अस गाजा।
चला लिए आगे करि राजा ॥
गोरा उलटि खेत भा ठाढ़ा।
पूरुख देखि चाव मन बाढ़ा ॥

आव कटक सुलतानी, गगन छपा मसि माँझ।
रति आव जग कारी, होति आव दिन साँझ ॥१५॥

ओनई घटा चहूँ दिसि आई।
छूटहिं बान मेघ-झरि लाई ॥
गौरै साथ लीन्ह सब साथी।
जस मैमंत सूँड़ बिनु हाथी ॥
सहस कुँवर सहसौ सत बाँधा।
भार-पहार जूझ कर काँधा ॥
लगे मरै गोरा के आगे।
बाग न मोर घाव मुख लागे ॥
जैस पतंग आगि धँसि लेई।
एक मुवै, दूसर जिउ देई ॥

टूटहिं सीस, अधर धर मारै।
लोटहिं कंधहिं कंध निरारै॥
कोई परहिं रुहिर होइ राते।
कोई घायल घूमहिं माते॥
घरी एक भारत भा, भा असवारन्ह मेल।
जूझि कुँवर सब निबरे, गोरा रहा अकेल ॥१६॥
गोरै देख साथि सब जूझा।
आपन काल नियर भा, बूझा॥
कोपि सिंघ सामुहँ रन मेला।
लाखन्ह सौं नहिं मरै अकेला॥
लेइ हाँकि हस्तिन्ह कै ठटा।
जैसे पवन बिदारै घटा॥
जेहि सिर देइ कोप करवारू।
स्यों घोड़े टूटै असवारू॥
लोटहिं सीस कबंध निनारे।
माठ मजीठ जनहुँ रन ढारे॥
खेलि फाग सेंदुर छिरकावा।
चाँचरि खेल आगि जनु लावा॥
हस्ती घोड़ धाइ जो धूका।
ताहि कीन्ह सो रुहिर भभूका॥
भइ अज्ञा सुलतानी, "बेगि करहु एहि हाथ।
रतन जात है आगे लिए पदारथ साथ" ॥१७॥
सबै कटक मिलि गोरहि छेका।
गूँजत सिंघ जाइ नहिं टेका॥
जेहि दिसि उठै सोइ जनु खावा।
पलटि सिंघ तेहि ठावँ न आवा॥

तुरुक बोलावहिं बोलै बाहाँ।
गोरै मीचु धरी जिउ माहाँ॥
मुए पुनि जूझि जाज जगदेऊ।
जियत न रहा जगत महँ केऊ॥
जिनि जानहु गोरा सो अकेला।
सिंघ के मोंछ हाथ को मेला?॥
सिंघ जियत नहिं आपु धरावा।
मुए पास कोई घिसियावा॥
करै सिंघ मुख-सौंहहिं दीठी।
जौ लगि जियै देइ नहिं पीठी॥

रतनसेन जो बाँधा, मसि गोरा के गात।
जौ लगि रुहिर न धोवौं तौ लगि होइ न रात॥१८॥

सरजा वीर सिंघ चढ़ि गाजा।
आइ सौंह गोरा सौं बाजा॥
पहुँचा आइ सिंघ असवारू।
जहाँ सिंघ गोरा बरियारू॥
मारेसि साँग पेट महँ धँसी।
काढ़ेसि हुमुकि आँति भुइँ खसी॥
कहेसि अंत अब भा भुइँ परना।
अन्त त खसे खेह सिर भरना॥
कहि कै गरजि सिंघ अस धावा।
सरजा सारदूल पहँ आवा॥
सरजै लीन्ह साँग पर घाऊ।
परा खड़ग जनु परा निहाऊ॥
बज्र कै साँग, बज्र कै डाँड़ा।
उठी आग तस बाजा खाँड़ा॥

जानहु बज्र बज्र सौं बाजा।
सब ही कहा परी अब गाजा॥

तस मारा हठि गोरै, उठी बज्र कै आगि।
कोइ नियरे नहिं आवै सिंघ सदूरहिं लागि॥१६॥

तब सरजा कोपा बरिबंडा।
जनहु सदूर केर भुजदंडा॥
कोपि गरजि मारेसि तस बाजा॥
जानहु परी टूटि सिर गाजा॥
ठाँठर टूट, फूट सिर तासू।
स्यो सुमेरु जनु टूट अकासू॥
धमकि उठा सब सरग पतारू।
फिर गइ दीठि, फिरा संसारू॥
भइ परलय अस सब ही जाना।
काढ़ा खरग सरग नियराना॥
तस मारेसि स्यों घोड़ै काटा।
धरती फाटि, सेस-फन फाटा॥
जौ अति सिंह बरी होइ आई।
सारदूल सौं कौनि बड़ाई?॥

गोरा परा खेत महँ, सुर पहुँचावा पान।
बादल लेइगा राजा, लेइ चितउर नियरान॥२०॥

---

(५) बंधन-मोक्ष। पद्मावती-मिलन-खण्ड

पदमावति मन रही जो भूरी।
सुनत सरोवर-हिय गा पूरी॥
अद्रा महि-हुलास जिमि होई।
सुख सोहाग आदर भा सोई॥
पुरइनि पूर सँवारे पाता।
औ सिर आनि धरा बिधि छाता॥
लागेउ उदय होइ जस भोरा।
रैनि गई, दिन कीन्ह अँजोरा॥
बिहँसि चाँद देइ माँग सेंदूरू।
आरति करै चली जहँ सूरू॥
औ गोहन ससि नखत तराईं।
चितउर कै रानी जहँ ताईं॥
जनु बसंत ऋतु पलुही छूटीं।
की सावन महँ बीरबहूटी॥

सेंदुर फूल तमोल सौं, सखी सहेली साथ।
धनि पूजे पिउ पायँ दुइ, पिउ पूजा धनि माथ॥२१॥

परसि पायँ राजा के रानी।
पुनि आरति बादल कहँ आनीं॥
पूजे बादल के भुजदंडा।
तुरय के पावँ दाब कर-खंडा॥
यह गजगवन गरब जो मोरा।
तुम्ह राखा, बादल औ गोरा॥
सेंदुर-तिलक जो आँकुस अहा।
तुम्ह राखा माथे तौ रहा॥

काछ काछि तुम जिउ पर खेला।
तुम्ह जिउ आनि मँजूषा मेला ॥
राखा छात, चवँर औधारा।
राखा छुद्र घंट—झनकारा ॥
तुम हनुवँत होइ धुजा पईठे।
तब चितउर पिय आइ बईठे ॥
पुनि गजमत्त चढ़ावा, नेत बिछाई खाट।
बाजत गाजत राजा, आइ बैठ सुख पाट ॥२२॥
निसि राजै रानी कँठ लाई।
पिउ मरि जिया, नारि जनु पाई ॥
छोड़ि गएउ सरवर महँ मोहीं।
सरवर सूखि गएउ बिनु तोहीं ॥
तेहि ऊपर का कहौं जो मारी।
बिषम पहार परा दुख भारी ॥
दूती एक देवपाल पठाई।
बाह्मनि-भेस छरै मोहिं आई ॥
कहै तोरि हौं आहुँ सहेली।
चलि लेइ जाउँ भँवर जहँ,बेली ! ॥
तब मैं ज्ञान कीन्ह, सत बाँधा।
ओहि कर बोल लाग बिष-साँधा ॥
कहूँ कवँल नहिं करत अहेरा।
चाहै भँव करै सै फेरा ॥
रोइ बुझाइउँ आपन हियरा।
कंत न दूर, अहै सुठि नियरा ॥
फूल बास, घिउ छीर जेउँ नियर मिले एक ठाइँ।
तस कंता घट-घर कै जिइउँ अगिनि कहँ खाइ ॥२३॥

———

(६) रत्नसेन–देवपाल–युद्ध-खण्ड

सुनि देवपाल राय कर चालू।
राजहि कठिन परा हिय सालू॥
दादुर कतहुँ कँवल कहँ पेखा।
गादुर मुख न सूर कर देखा॥
अपने रँग जस नाच मयूरू।
तेहि सरि साध करै तमचूरू॥
जौ लगि आइ तुरुक गढ़ बाजा।
तौ लगि धरि आनौं तौ राजा॥
नींद न लीन्ह, रैनि सब जागा।
होत बिहान जाइ गढ़ लागा॥
कुँभलनेर अगम गढ़ बाँका।
विषम पंथ चढ़ि जाइ न झाँका॥
राजहि तहाँ गएउ लेइ कालू।
होइ सामुहँ रोपा देवपालू॥

दुवौ अनी सनमुख भईं, लोहा भएउ असूझ।
सत्रु जूझि तब नेवरै; एक दुवौ महँ जूझ॥२४॥

जौ देवपाल राव रन गाजा।
मोहि तोहि जूझ एकौझा, राजा॥
मेलेसि साँग आइ विष-भरी।
मेटि न जाइ काल कै घरी॥
आइ नाभि पर साँग बईठी।
नाभि बेधि निकसी सो पीठी॥
चला मारि तब राजै मारा।
टूट कंध, धड़ भएउ निनारा॥

सीस काटि कै बैरी बाँधा।
पावा दावँ बैर जस साधा॥
जियत फिरा आएउ बल-भरा।
माँझ बाट होइ लोहै धरा॥
कारी घाव जाइ नहिं डोला।
रही जीभ जम गही, को बोला ?॥

सुधि बुधि तौ सब बिसरी, भार परा मँझ बाट।
हस्ति घोर को का कर ? घर आनी गइ खाट ॥२५॥

तौ लहि साँस पेट महँ अही।
जौ लहि दसा जीउ कै रही॥
काल आइ देखराई साँटी।
उठि जिउ चला छोड़ि कै माटी॥
काकर लोग, कुटुँब, घर बारू।
काकर अरथ दरब संसारू ?॥
ओही घरी सब भएउ परावा।
आपन सोइ जो परसा, खावा॥
अहे जे हितू साथ के नेगी।
सबै लाग काढ़ै तेहि बेगी॥
हाथ झारि जस चलै जुवारी।
तजा राज, होइ चला भिखारी॥
जब हुत जीउ, रतन सब कहा।
भा बिनु जीउ, न कौड़ी लहा॥

गढ़ सौंपा बादल कहँ, गए टिकठि बसि देव।
छोड़ी राम अजोध्या, जो भावै सो लेव ॥२६॥

---

(७) पद्मावती-नागमती-सती-खण्ड

पदमावति पुनि पहिरि पटोरी।
चली साथ पिउ के होइ जोरी॥
नागमती पदमावति रानी।
दुवौ महा संत सती बखानी॥
सर रचि दान पुन्नि बहु कीन्हा।
सात बार फिरि भाँवरि लीन्हा॥
एक जो भाँवरि भईं बियाही।
अब दुसरे होइ गोहन जाहीं॥
जियत, कंत ! तुम्ह हम्ह गर लाई।
मुए कंठ नहिं छोड़हिं, साईं !॥
औ जो गाँठि, कंत ! तुम्ह जोरी।
आदि कंत लहि जाइ न छोरी॥
यह जग काह जो अछहि न आथी।
हम तुम, नाह ! दुहूँ जग साथी॥
लागीं कंठ आगि देइ होरी।
छार भईं जरि, अंग न मोरी॥

रातीं पिउ के नेह गइँ, सरग भएउ रतनार।
जो रे उवा, सो अथवा; रहा न कोइ संसार॥२७॥

वै सहगवन भईं जब जाई।
बादसाह गढ़ छेंका आई॥
तौ लगि सो अवसर होइ बीता।
भए अलोप राम औ सीता॥
आइ साह जौ सुना अखारा।
होइ गा रात दिवस उजियारा॥

छार उठाइ लीन्हि एक मूठी ।
दीन्हि उड़ाइ पिरथिमी झूठी ॥
सगरिउ कटक उठाई माटी ।
पुल बाँधा जहँ जहँ गढ़-घाटी ॥
जौ लहि ऊपर छार न परै ।
तौ लहि यह तिस्ना नहिं मरै ॥
भा धावा, भइ जूझ असूझा ।
बादल आइ पँवरि पर जूझा ॥

जौहर भईं सब इस्तिरी, पुरुष भए संग्राम ।
बादसाह गढ़ चूरा, चितउर भा इसलाम ॥२८॥

उपसंहार

मैं एहि अरथ पंडितन्ह बूझा।
कहा कि हम्ह किछु और न सूझा॥
चौदह भुवन जो तर उपराहीं।
ते सब मानुष के घट माहीं॥
तन चितउर, मन राजा कीन्हा।
हिय सिंघल, बुधि पदमिनि चीन्हा॥
गुरू सुआ जेइ पंथ देखावा।
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा?॥
नागमती यह दुनिया-धंधा।
बाँचा सोइ न एहि चित बंधा॥
राघव दूत सोइ सैतानू।
माया अलाउदीं सुलतानू॥
प्रेम-कथा एहि भाँति बिचारहु।
बूझि लेहु जौ बूझै पारहु॥

तुरकी, अरबी, हिंदुई, भाषा जेती आहिं।
जेहि महँ मारग प्रेम कर सबै सराहैं ताहि॥ १॥

मुहमद कबि यह जोरि सुनावा।
सुना सो पीर प्रेम कर पावा॥
जोड़ी लाइ रकत कै लेई।
गाढ़ि प्रीति नयनन्ह जल भेई॥
तब मैं जानि गीत अस कीन्हा।
मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा॥

कहाँ सो रतनसेन अब राजा ? ।
कहाँ सुआ अस बुधि उपराजा ?॥
कहाँ अलाउद्दीन सुलतानू ? ।
कहँ राघव जेइ कीन्ह बखानू ?॥
कहँ सुरूप पदमावति रानी ? ।
कोइ न रहा, जग रही कहानी ॥
धनि सोई जस कीरति जासू ।
फूल मरै, पै मरै न बासू ॥

केइ न जगत जस बेचा, केइ न लीन्ह जस मोल ।
जौ यहि पढ़ै कहानी हम्ह सँवरै दुइ बोल ॥ २॥

: समाप्त :

मुद्रक—राधारमन अग्रवाल, मौडर्न प्रेस, नमक मण्डी आगरा ।